नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

वर्ष 03, अंक 347, नई दिल्ली, रविवार 15 फरवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

महा शिवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

03 शिव और शक्ति के मिलन का महापर्व है महाशिवरात्रि।

06 बचपन वास्तविकता और कल्पना में उलझा हुआ है

08 गोधा में क्षतिग्रस्त सड़क पर आसान नहीं होगी कांवड़ियों पत्थरों पर चलने के लिए

शिवरात्रि विशेष

अंधकार का प्रहार - अनजान - प्राप्त
शिव आराधना और आशीर्वाद!

संजय कुमार बाठला

प्राचीन काल की बात है, जब विंध्याचल के घने जंगलों में चित्रभानु नाम का एक निषाद रहता था। उसका जीवन धनुष की प्रत्यंचा और शिकार के मांस तक ही सीमित था।

महाशिवरात्रि का दिन था, शिकारी इस पर्व से अनजान, भूख से बिलखते अपने परिवार के लिए भोजन की तलाश में जंगल की खाक छान रहा था। सूरज ढल चुका था, पर शिकारी के हाथ अब तक भी खाली थे।

थका-हारा वह एक जलाशय के किनारे ऊंचे बिल्व वृक्ष (बेल के पेड़) पर यह सोच कर चढ़ गया की रात के अंधेरे में कोई ना कोई जानवर पानी पीने जरूर आएगा।

उस पेड़ के नीचे, घास - फूस और सूखी पत्तियों से ढका हुआ एक प्राचीन शिवलिंग था, जिससे वह अनभिज्ञ था। पेड़ पर अपनी जगह बनाते समय शिकारी ने अनजाने में कुछ टहनियां तोड़ीं, जिससे ताजे बेलपत्र शिवलिंग पर जा गिरे। प्यास के कारण उसका गला सूख रहा था, जिससे उसका अनचाहा 'उपवास' हो गया और रात भर जगने के कारण 'जागरण' भी।

रात्रि का प्रथम प्रहरः ममता की पुकार रात के सन्नाटे को चीरती हुई एक गर्भिणी मृगी तालाब की ओर आई। शिकारी ने जैसे ही बाण साधा, मृगी की दृष्टि उस पर पड़ी। वह थकी हुई आवाज में बोलीः

>"हे शिकारी! मेरी देह में एक नन्ही जान पल रही है। यदि तुम मुझे मारोगे, तो एक साथ दो हत्याओं का पाप लगेगा। मुझे प्रसव करने दो, फिर मैं स्वयं तुम्हारे पास लौट आऊंगी।"

शिकारी का कठोर मन पहली बार किसी जीव की तर्कपूर्ण वाणी सुनकर पसीजा। उसने धनुष ढीला कर दिया और मृगी ओझल हो गई। इस हलचल में कुछ और बेलपत्र शिवलिंग पर गिर गए।

द्वितीय और तृतीय प्रहरः सत्य और निष्ठा की परीक्षा कुछ समय बाद एक और मृगी वहां आई। जैसे ही शिकारी ने निशाना लगाया, वह कातर स्वर में बोलीः

"हे व्याध! मैं अपने प्रिय की खोज में भटक रही हूं। मुझे एक बार अपने स्वामी से मिल लेने दो, फिर मेरा यह शरीर तुम्हारा ही भोजन बनेगा।" हैरान होकर शिकारी ने उसे भी जाने दिया।

रात का तीसरा पहर आया, तो एक तीसरी मृगी अपने बच्चों के साथ दिखाई दी। शिकारी अब क्रोधित था, "दो बार धोखा खा चुका हूं, अब और नहीं!" लेकिन मृगी ने अपनी ममता की दुहाई दीः

> "इन नन्हे बच्चों को इनके पिता को सौंप आऊं, फिर मैं मौत को गले लगाने लौट आऊंगी। एक मां का विश्वास मत तोड़ो।"

शिकारी का पत्थर जैसा दिल पिघलने लगा था। अनजाने में हो रही शिव - पूजा और उपवास ने उसके भीतर के तमोगुण को नष्ट करना शुरू कर दिया था। उसने उसे भी जीवनदान दे दिया।

चतुर्थ प्रहरः सत्य की विजय और हृदय परिवर्तन भोर होने को थी तभी एक विशाल और हृष्ट-पुष्ट मृग (हिरण) वहां आया। शिकारी ने सोचा, "आज का दिन तो खाली गया, पर इस एक मृग से मेरा पूरा परिवार तृप्त हो जाएगा।" जैसे ही उसने प्रत्यंचा खींची, मृग ने शांत भाव से कहा, "हे शिकारी! यदि तुमने मेरी तीनों पत्नियों और बच्चों को मार दिया है, तो मुझे भी मार दो ताकि मैं उनके बिना विरह न सहूं और यदि तुमने उन्हें छोड़ दिया है, तो मुझे भी क्षण भर का समय दो। मैं उनसे मिलकर और उन्हें सांत्वना देकर वापस आता हूं।"

मृग की सत्यनिष्ठा और परिवार के प्रति प्रेम देखकर शिकारी सन्न रह गया। पूरी रात का घटनाचक्र उसकी आंखों के सामने घूम गया। उसे बोध हुआ कि वह तुच्छ स्वार्थ के लिए किन महान प्राणियों का वध करने जा रहा था।

तभी चमत्कार हुआ वह मृग अपने पूरे परिवार (तीनों पत्नियों और बच्चों) के साथ वहां उपस्थित हो गया। सबने एक स्वर में कहा, रहम अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार हाजिर हैं, अब तुम अपना शिकार कर सकते हो।"

पशुओं की ऐसी सत्यवादिता और त्याग देखकर शिकारी की आंखों से आंसुओं की धारा बह निकली। उसका हिंसक हृदय अब करुणा का सागर बन चुका था। उसने धनुष - बाण फेंक दिए और भगवान शिव के चरणों में गिर पड़ा।

भगवान शंकर उसकी अनजानी लेकिन निस्वार्थ भक्ति से प्रसन्न हुए और उसे साक्षात दर्शन दिए।

शिकारी का जीवन धन्य हो गया। देवताओं ने पुष्प वर्षा की और अंत में वह शिकारी और वह मृग परिवार, दोनों ही अपनी - अपनी उच्च योनियों और मोक्ष को प्राप्त हुए।

कथा का संदेश

* सच्ची भक्ति में दिखावा नहीं, भावना मायने रखती है,

* अनजाने में किया गया अच्छा कर्म भी फल देता है,

* शिवजी सरल हृदय और करुणा से जल्दी प्रसन्न होते हैं।

सकरात्मक सोच और निः स्वार्थ भावना
पार्वती ने बनाया भोजन तो शिवजी ने समझाई यह अनोखी बात

संजय कुमार बाठला

एक बार माता पार्वती ने भगवान शिव से कहा की प्रभु मैंने पृथ्वी पर देखा है कि जो व्यक्ति पहले से ही अपने प्रारब्ध से दुःखी है आप उसे और ज्यादा दुःख प्रदान करते हैं और जो सुख में है आप उसे दुःख नहीं देते है।

भगवान ने इस बात को समझाने के लिए माता पार्वती को धरती पर चलने के लिए कहा और दोनों ने इंसानी पति - पत्नी का रूप लिया और एक गावं के पास डेरा जमाया।

शाम के समय भगवान ने माता पार्वती से कहा की हम मनुष्य रूप में यहां आए है इसलिए यहां के नियमों का पालन करते हुए हमें यहां भोजन करना होगा। इसलिए मैं भोजन सामग्री की व्यवस्था करता हूं, तब तक तुम भोजन बनाने की व्यवस्था कर लो।

भगवान के जाते ही माता पार्वती रसोई में चूल्हे को बनाने के लिए बाहर से ईंटें लेने गईं और गांव में कुछ जर्जर हो चुके मकानों से ईंटें लाकर चूल्हा तैयार कर दिया।

चूल्हा तैयार होते ही भगवान वहां पर बिना कुछ लाए ही प्रकट हो गए। माता पार्वती ने उनसे कहा आप तो कुछ लेकर नहीं आए, भोजन कैसे बनेगा।

भगवान बोले - पार्वती अब तुम्हें इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी। भगवान ने माता पार्वती से पूछा की तुम चूल्हा बनाने के लिए इन ईंटों को कहा से लेकर आई तो माता पार्वती ने कहा - प्रभु इस गावं में बहुत से ऐसे घर भी हैं जिनका रख रखाव सही ढंग से नहीं हो रहा है। उनकी जर्जर हो चुकी दीवारों से मैं ईंटें निकाल कर ले आई। भगवान ने फिर कहा - जो घर पहले से ख़राब थे तुमने उन्हें और खराब कर दिया। तुम ईंटें उन सही घरों की दीवार से भी तो ला सकती थीं।

माता पार्वती बोली - प्रभु उन घरों में रहने वाले लोगों ने उनका रख रखाव बहुत सही तरीके से किया है और वो घर सुंदर भी लग रहे हैं, ऐसे में उनकी सुंदरता को बिगाड़ना उचित नहीं होता।

भगवान बोले - पार्वती यही तुम्हारे द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर है। जिन लोगो ने अपने घर का रख रखाव अच्छी तरह से किया है यानि सही कर्मों से अपने जीवन को सुंदर बना रखा है उन लोगों को दुःख कैसे हो सकता है। मनुष्य के जीवन में जो भी सुखी है वो अपने कर्मों के द्वारा सुखी है और जो दुखी है वो अपने कर्मों के द्वारा दुखी है।

इसलिए हर एक मनुष्य को अपने जीवन में ऐसे ही कर्म करने चाहिए की जिससे इतनी मजबूत व खूबसूरत इमारत खड़ी हो कि कभी भी कोई भी उसकी एक ईंट भी निकालने ना पाए।

कथा का सार, अगर हम सकारात्मक सोच और निः स्वार्थ भावना रखकर जीवन में हमेशा सही रास्ते का चयन करें और उसी पर चलें तो दुःख क्यों पाए।

€

1. हमेशा अच्छे कर्म करें।
२. जीवन में हमेशा सही रास्ते का चयन करे.

शिव का तप और पार्वती की करुणा

संजय कुमार बाठला

अर्धांगिनी के रूप में पार्वती अपने प्रेम और शक्ति से शिव के भीतर उठी विष - ज्वाला को शांत करती हैं। जब शिव ने सृष्टि की रक्षा हेतु हलाहल विष का पान किया और उनका कंठ नील हो उठा, तब पार्वती ने करुणा से उनका कंठ थाम लिया। उनका यह स्पर्श केवल सांत्वना नहीं, बल्कि शक्ति का संतुलन है — जहाँ त्याग को प्रेम का सहारा मिलता है। इस दिव्य मिलन में शिव का तप और पार्वती की करुणा एक होकर सृष्टि की रक्षा को पूर्ण करते हैं।

"कौन हैं शिव गण और क्या है इनका महत्व ?"

संजय कुमार बाठला

सनातन ग्रंथों में शिव महिमा का गुणगान बहुत खूबसूरती के साथ किया गया है।

1. शिव अनादि तथा सृष्टि प्रक्रिया के आदि स्रोत हैं।

2. यह काल महाकाल ही ज्योतिष शास्त्र के आधार हैं।

3. शिव का अर्थ यद्यपि कल्याणकारी माना गया है, लेकिन वे हमेशा लय एवं प्रलय दोनों को अपने अधीन किए हुए हैं।

4. रावण, शनि, कश्यप ऋषि आदि इनके भक्त हुए है।

शिव सभी को समान दृष्टि से देखते है इसलिये उन्हें महादेव कहा जाता है।

शिव जहां विराजमान हैं, वहां शक्ति स्वरूपा देवी पार्वती, श्री गणेश, कार्तिकेय और नंदी भी हैं। इन सबसे अतिरिक्त शिव के साथ गण भी रहते हैं। इन गणों के शिव के अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं समझता है।

आखिर कौन हैं शिवगण ? क्या है इनका महत्व ? आइये इन प्रश्नों का उत्तर जानते हैं। शिवपुराण के अनुसार भगवान शिव का अलग - अलग प्रकार से वर्णन किया गया है। शिव का आशुतोष यानी सरलता से प्रसन्न होने वाला बताया गया है। वहीं, सभी समान मानने वाला महादेव कहा गया है। अति क्रोधी भयंकर स्वरूप में उन्हें रूद्र कहा जाता है। ठीक उसी प्रकार शिव के गणों का वर्णन मिलता है। कोई उन्हें शिव का मित्र बताता है, तो कोई उनका रक्षक, लेकिन असल में गण महादेव के मित्र भी हैं और रक्षक भी।

पुराणों में शिव के प्रमुख गण है - भैरव, वीरभद्र, मणिभद्र, चंदिस, नंदी, जय, विजय बताए गए हैं।

ऐसी मान्यता है कि ये गण मनुष्य से अलग थे और किसी दूसरे लोक से आए थे। इनका स्वरूप अत्यंत भयानक हैं, इनके शरीर में हड्डियां नहीं होती थी और आकार विचित्र सा होता था। यह सभी गण जोर - जोर से शोर करते हैं। इनकी भाषा महादेव के अतिरिक्त कोई नहीं समझ सकता। यह गण शिव के अतिरिक्त किसी से नहीं डरते। उन्हें सनकी स्वभाव का भी कहा जाता है। ये महादेव के अतिरिक्त किसी का कार्य नहीं करते हैं।

महादेव इन्हें प्रेम करते हैं। ऐसी मान्यता है कि शिव 15000 साल पहले मानसरोवर आए थे। मानसरोवर को टेथिस समुद्र का एक अवशेष के रूप में जाना जाता है और ऐसा माना जाता है कि मानव सभ्यता की शुरुआत उस समय

हुई थी।

वर्तमान में वो समुद्र अब एक झील में बदल चुका है। बता दें पिशाच, दैत्य, दानव, और भूत भी भोलेनाथ के गण है और हमेशा उनके समीप रहते हैं।

भगवान गणेश भी शिव के गण हैं क्या आप जानते हैं भगवान गणेश को गणपति की जगह गजपति क्यों नहीं कहा जाता है?

एक कथा के अनुसार भूलवश भगवान शिव द्वारा अपने पुत्र गणेश का सिर काट दिया गया था। इस घटना के बाद भगवान शिव ने गणेश को जीवित करने के लिए हाथी का सिर लगाया था। तभी से उन्हें गणपति कहा जाता है।

यहां हम बात गजपति और गणपति नाम को लेकर कर रहे है वैसे अगर गणेश जी को हाथी का सिर लगाया गया था, तो हमें तो उन्हें गजपति कहना चाहिए, लेकिन हम उन्हें गणपति कहकर संबोधित करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि भगवान शिव ने जिस हाथी का सिर गणेश को लगाया था वो स्वयं एक गण था। जी हां, भोलेनाथ ने अपने एक गण का सर निकालकर गणेश को लगा दिया था। इसलिए हम उन्हें गणपति कहते हैं गजपति नहीं।

भगवान शिव के गणों के नाम भगवान शिव की सुरक्षा और उनके आदेश को मानने के लिए उनके गण सदैव तत्पर रहते हैं। उनके गणों में भैरव को सबसे प्रमुख माना जाता है। उसके बाद नंदी का नंबर आता और फिर वीरभद्र।

जहां भी शिव मंदिर स्थापित होता है, वहां रक्षक (कोतवाल) के रूप में भैरव जी की प्रतिमा भी स्थापित की जाती है। भैरव दो हैं - काल भैरव और बटुक भैरव।

दूसरी ओर वीरभद्र शिव का एक बहादुर गण है जिसने शिव के आदेश पर दक्ष प्रजापति का सिर धड़ से अलग कर दिया। देव संहिता और स्कंद पुराण के अनुसार शिव ने अपनी जटा से 'वीरभद्र' नामक गण उत्पन्न किया।

इस तरह उनके यह प्रमुख गण थे - भैरव, वीरभद्र, मणिभद्र, चंदिस, नंदी, श्रृंगी, भृगिरिटी, शैल, गोकर्ण, घंटाकर्ण, जय और विजय। इसके अलावा, पिशाच, दैत्य और नाग - नागिन, पशुओं को भी शिव का गण माना जाता है। ये सभी गण धरती और ब्रह्मांड में विचरण करते रहते हैं और प्रत्येक मनुष्य, आत्मा आदि की खैर - खबर रखते हैं।

---शिवरात्री पर विशेष जानकारी---
प्रकृति के तीन नियम, जो शाश्वत है !!!

संजय कुमार बाठला

1. प्रकृति का पहला नियम : यदि खेत में बीज न डालें जाएं, तो कुदरत उसे घास-फूस से भर देती है !! ठीक उसी तरह से दिमाग में अगर सकारात्मक विचार न भरे जाएँ, तो नकारात्मक विचार अपनी जगह बना ही लेते हैं !!

2. प्रकृति का दूसरा नियम : जिसके पास जो होता है, वह वही बांटता है !!

* सुखी सुख बांटता है !!
* दुःखी दुःख बांटता है !!
* ज्ञानी ज्ञान बांटता है !!
* भ्रमित भ्रम बांटता है !!
* भयभीत भय बांटता हैं !!

3. प्रकृति का तीसरा नियम : आपको जीवन में जो भी मिले, उसे पचाना सीखो क्योंकि -

* भोजन न पचने पर, रोग बढ़ते हैं
* पैसा न पचने पर, दिखावा बढ़ता है
* बात न पचने पर, चुगली बढ़ती है
* प्रशंसा न पचने पर, अंहकार बढ़ता है
* निंदा न पचने पर, दुश्मनी बढ़ती है
* राज़ न पचने पर, खतरा बढ़ता है
* दुःख न पचने पर, निराशा बढ़ती है
* सुख न पचने पर, पाप बढ़ता हैं।

महाशिवरात्रि : आध्यात्मिक उत्कर्ष का पावन पर्व

प्रमोद दीक्षित मलय

धर्म धुरी पुण्यभूमि भारत व्रत, पर्व, उपवास एवं आध्यात्मिक साधना का क्षेत्र है। यहां हर दिन कोई न कोई त्योहार एवं उत्सव का आयोजन है। उत्सवधर्मी समाज जीवंतता का प्रतीक होता है और सुख, समृद्धि एवं सम्पन्नता का भी। प्राचीन काल से ही भारत का लोकजीवन भौतिकता एवं आध्यामिकता के सबल पंखों के सहारे न केवल दैनंदिन जीवन में विकास एवं विस्तार को गति दी अपितु उन्नति के शिखरों को स्पर्श भी किया; वहीं तप, त्याग, परोपकार एवं आध्यात्मिक जीवन के पथ पर बढ़ते हुए आम जन को लोक कल्याण के सूत्र सौंपे। भारतीय सनातन परम्परा में व्रत, उपवास एवं त्योहार आत्मिक चेतना के सम्बोध, गहन साधना, जीवन की निर्मलता, शारीरिक शुद्धता एवं पवित्रता का माध्यम रहे हैं। सनातन हिंदू मान्यता में मानव जीवन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है।

उपासना, जप-तप एवं व्रत तथा साधना एवं जागरण के द्वारा साधक मुक्ति पथ पर अग्रसर होता है। महाशिवरात्रि व्रत एवं साधना व्यक्तिगत आध्यात्मिक उत्कर्ष एवं मोक्ष प्राप्ति का पावन अवसर तो है ही, साथ ही जागतिक कल्याण की भावना का सबलीकरण भी है क्योंकि शिव कल्याण करने वाले हैं। शिवत्व वैश्विक कल्याण की जाग्रत भावना है, महाशिवरात्रि में साधक शिवत्व प्राप्त कर जीवन में स्थिरता एवं गम्भीरता की कामना करते हैं। 'शिवो भूत्वा, शिवम् यजेत' अनुसार साधक भगवान शिव की आराधना हेतु शिव की कल्याणकारी भावना से ओत-प्रोत हो भक्ति में लीन होते हैं।

महाशिवरात्रि उत्सव फाल्गुन मास कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी-चतुर्दशी तिथि को मनाया जाता है। दिन में शिवलिंग का पूजन एवं अभिषेक आदि तथा रात्रि में कीर्तन एवं ध्यान-साधना तथा जागरण के द्वारा शिव आराधना कर आध्यात्मिक दृष्टि से स्वयं को उज्ज्वल, निर्मल मन कर शिवमय हो जाते हैं। शास्त्रों में महाशिवरात्रि का व्रत को 10000 बार गंगा स्नान एवं 100 यज्ञों के समान फलदायी बताया गया है। विभिन्न प्रकार की शिवरात्रि का वर्णन शास्त्रों में मिलता है। नित्य शिवरात्रि, मास शिवरात्रि, प्रथमादि शिवरात्रि तथा महाशिवरात्रि। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार भगवान शिव चतुर्दशी तिथि के स्वामी कहे गये हैं और त्रयोदशी के स्वामी कामदेव है। स्कंद पुराण के अनुसार महाशिवरात्रि के दिन पूजन, ओम नमः शिवाय मंत्र-जाप तथा उपवास करने से मनुष्य जन्म-मरण के चक्र

से मुक्त हो परमधाम शिवधाम को प्राप्त होता है। महाशिवरात्रि अज्ञान पर ज्ञान की प्रतिष्ठा का प्रतीक है।

महाशिवरात्रि व्रत करने एवं उत्सव मनाने के संदर्भ में शास्त्रीय परम्परा में कुछ दृष्टांत मिलते हैं। कहा जाता है कि इसी दिन माता पार्वती से भगवान शिव का विवाह हुआ था। उस आनन्द के अनुभव को जीने के लिए व्रत करते हुए माता पार्वती और भगवान शिव की पूजा की जाती है। यह दाम्पत्य जीवन में सुख, शांति, सामंजस्य एवं समृद्धि देने वाला है। देवों एवं दैत्यों की संधि अनुसार सिंधु से रत्नादि प्राप्त करने हेतु समुद्र मंथन किया गया था। समुद्र मंथन के प्रारंभ में कालकूट विष निकला। उसकी ज्वाला की ताप से जीव-जंतु त्राहि-त्राहि करने लगे। देव-दैत्यों में कोई भी उस विष को ग्रहण करने को तैयार नहीं था क्योंकि वह ग्रहण करने वाले को जलाकर नष्ट करने वाला था। सामर्थ्यहीन देव-दैत्यों की प्रार्थना पर भगवान शिव ने कालकूट हलाहल को अपने कंठ में धारण कर लिया और समस्त चराचर जगत का कल्याण किया। उस दिन को शिवरात्रि नाम से जाना जाने लगा।

विष के ताप से शांति एवं विष शमन हेतु शिव उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड अंतर्गत बांदा जनपद के कालिंजर पर्वत में विराजमान हुए। अभी भी वहां स्थापित शिवलिंग सदृश मूर्ति के गले से जल स्राव हो रहा है, गले पर हथेली या कोई कपड़ा और कागज रखकर अनुभव किया जा सकता है। एक कथा प्रसंग में आता है कि एक बार विष्णु और ब्रह्मा में विवाद हो गया कि कौन बड़ा है। कोई निर्णय नहीं हो पा रहा था, तब धरा-गगन मध्य अनंत अंतरिक्ष में एक विशाल अग्नि स्तंभ प्रकट हुआ और उद्घोष किया कि जो मेरा आदि-अंत खोजकर पहले आएगा, वही बड़ा होगा। विष्णु और ब्रह्मा में कोई उस अग्नि स्तम्भ का आदि-अंत न पा सका, तब अग्निस्तंभ शिवलिंग रूप में प्रतिष्ठित हो भगवान शिव महादेव कहलाए।

भगवान शिव लोक कल्याण के लिए द्वादश ज्योतिर्लिंग के रूप में विद्यमान हैं, जो इस प्रकार हैं - सोमनाथ (गुजरात), मल्लिकार्जुन (श्रीशैलम, आंध्रप्रदेश), महाकालेश्वर (उज्जैन, मध्यप्रदेश), ओंकारेश्वर (ओंकारेश्वर, मध्यप्रदेश), केदारनाथ (रुद्रप्रयाग, उत्तराखंड), भीमाशंकर (पुणे के पास, महाराष्ट्र), काशी विश्वनाथ (वाराणसी, उत्तर प्रदेश), त्र्यंबकेश्वर (नासिक, महाराष्ट्र), वैद्यनाथ (देवघर, झारखंड), नागेश्वर (द्वारका, गुजरात), रामेश्वरम (तमिलनाडु), घृष्णेश्वर महादेव (औरंगाबाद, महाराष्ट्र)। महाशिवरात्रि के अवसर पर हम सभी भगवान शिव का पूजन, अभिषेक, जप एवं व्रत-उपवास कर आध्यात्मिकता के पथ पर सतत गतिमान रहें।

पैंपरिंग की ताकत, मैनीक्योर और पेडीक्योर करवाने के फायदे

आप अपने हाथों और पैरों के नाखून कितनी बार साफ करवाते हैं?

शहनाज हुसैन

अपने तय मैनी-पेडी सेशन के करीब आने की खुशी का कोई ठिकाना नहीं होता। हालांकि हम खुद को पैंपर करने के लिए इन ज़रूरी ब्यूटी ट्रीटमेंट में इन्वेस्ट करते हैं, लेकिन कभी-कभी होने वाली इस लग्ज़री के फायदे इससे कहीं ज़्यादा हैं।

मैनीक्योर और पेडीक्योर सिर्फ सुंदर नाखूनों के बारे में नहीं हैं; यह एक पूरी सेल्फ-केयर रिचुअल है जो

बेहतर हेल्थ, बेहतर लुक, रिलैक्सेशन, ब्लड सर्कुलेशन में बढ़ोतरी, हाइजीन को बढ़ावा और बढ़ा हुआ सेल्फ-कॉन्फिडेंस देता है।

जहां मैनीक्योर और पेडीक्योर आपकी स्किन को सॉफ्ट, आपके नाखूनों को हेल्दी और आपके स्ट्रेस लेवल को कंट्रोल में रखते हैं, वहीं आपकी हेल्थ और वेल-बीइंग के लिए इसके और भी कई फायदे हैं। ये सस्ते, जल्दी होने वाले और ट्रेंडी लुक आज़माने का एक शानदार तरीका हैं।

1----ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है --------

जब आप सैलून मैनीक्योर या पेडीक्योर के लिए जाते हैं, तो इसका एक फ़ायदा यह होता है कि आपके हाथों और पैरों में ब्लड सर्कुलेशन बढ़ जाता है, जिससे स्किन बेहतर हो जाती है।

ब्लड सर्कुलेशन में यह बढ़ोतरी आपके शरीर को गर्मी पहुंचाने में मदद करेगी, खासकर ठंड के मौसम में।

यह बढ़ा हुआ सर्कुलेशन हाथों और पैरों में दर्द और सूजन को कम करने में मदद कर सकता है, साथ ही स्किन को हेल्दी बनाए रखने में भी मदद कर सकता है। बेहतर ब्लड सर्कुलेशन की वजह से आपकी स्किन टाइट और झुर्रियों से मुक्त हो जाएगी।

ब्लड सर्कुलेशन बढ़ने का एक और बड़ा फ़ायदा यह है कि यह आपके दिल के लिए अच्छा है! जब आपका दिल आपके शरीर में खून पंप करता है, तो ब्लड सर्कुलेशन का हेल्दी लेवल आपके शरीर की कोशिकाओं तक न्यूट्रिएंट्स और ऑक्सीजन पहुंचाता है और वेस्ट को बाहर निकालता है।

ट्रीटमेंट के दौरान इस्तेमाल किया जाने वाला हल्का स्पर्श, आरामदायक माहौल और खुशबूदार खुशबू एक शांत करने वाला असर पैदा करती है, जिससे स्ट्रेस और एंग्जायटी का लेवल कम होता है।

सेल्फ-केयर के लिए समय निकालने से आपका मूड और कॉन्फिडेंस बढ़ता है, जिससे आप तरोताज़ा और फ्रेश महसूस करते हैं।

ब्लड फ़्लो बढ़ने से शरीर से टॉक्सिन बाहर निकलते हैं, जिससे पूरी सेहत अच्छी रहती है और पैरों में फ़्लूइड रिटेंशन कम होता है।

यह मसल्स का टेंशन कम करने और जॉइंट मोबिलिटी को बेहतर बनाने का भी एक शानदार तरीका है।

2----इंफेक्शन से बचें ----------

आपके हाथ और पैर अक्सर ऐसी सतहों के संपर्क में आते हैं जिनमें जलन पैदा करने वाली चीज़ें हो सकती हैं जो आपकी स्किन को नुकसान पहुंचा सकती हैं।

रेगुलर मैनीक्योर और पेडीक्योर से नाखून साफ और ट्रिम रहते हैं, जिससे फंगल और बैक्टीरियल इंफेक्शन से बचाव हो सकता है।

नाखूनों के आस-पास की डेड स्किन सेल्स को हटाने से, क्यूटिकल्स को बनाए रखने से, फंगस और दूसरे इंफेक्शन होने की संभावना कम हो जाती है।

इसके अलावा, पेडीक्योर सेशन के दौरान अपने पैर के नाखूनों को काटने, साफ करने और काटने से आपके नाखून अंदर की ओर नहीं बढ़ेंगे, जिससे कोई भी इंफेक्शन नहीं होगा। यही बात आपके हाथों पर भी लागू होती है। हमारे नाखूनों में गंदगी जमा हो सकती है या उनमें कुछ फंस सकता है, और उन्हें साफ और पॉलिश्ड रखने के लिए मैनीक्योर बहुत मदद कर सकता है।

पौष्टिक क्रीम और तेल का इस्तेमाल सूखी जगहों को गहराई से मॉइस्चराइज़ करता है, जिससे दरारें और खुरदुरे पैच नहीं पड़ते।

3---स्ट्रेस लेवल कम करता है ---------

मैनीक्योर या पेडीक्योर का मसाज वाला हिस्सा मसल्स को आराम देने और स्ट्रेस कम करने में मदद कर सकता है। मसाज का प्रेशर और मूवमेंट टेंशन कम कर सकता है और अच्छा महसूस करा सकता है।

मसाज आपकी हथेलियों और पैरों की नसों और मसल्स को शांत करके आपको पूरी तरह से रिचार्ज करती है, जिससे सारा स्ट्रेस खत्म हो जाता है।

अपने हाथों और पैरों को गर्म पानी में भिगोने से आपकी सारी थकान और स्ट्रेस दूर हो जाता है, जिससे आपकी फिजिकल हेल्थ अच्छी रहती है।

मैनीक्योर या पेडीक्योर करवाना आपके दिमाग को फ्री करने और रिलैक्स करने का एक शानदार तरीका हो सकता है, साथ ही बेहतर स्किन हेल्थ के फायदे भी मिलते हैं।

यह हाथों और पैरों की अकड़ी हुई मसल्स को आराम देता है, जिससे वे फिर से ढीली महसूस होती हैं।

4---मॉइस्चराइज़र को लॉक करता है ---------

स्किन को हाइड्रेट करना हमेशा से हर महिला का स्किन गोल रहा है।

एक अच्छे मैनीक्योर और पेडीक्योर में बहुत ज़्यादा हाइड्रेशन शामिल होता है, जो आपकी स्किन की नेचुरल नमी और कोमलता को वापस लाता है, जो कॉलस, खुरदुरे धब्बों और फटी स्किन को रोकने में भी मदद करता है जिससे घाव और इन्फेक्शन हो सकते हैं। क्रीम और तेल का इस्तेमाल सूखी जगहों को गहराई से मॉइस्चराइज़ करता है, जिससे दरारें और जलन नहीं होतीं।

एसेंशियल ऑयल और नरिशिंग क्रीम से मसाज करने से स्किन की नमी गहराई से बढ़ती है, जिससे दरारें, सूखापन और खुरदुरे पैच और जलन नहीं होती।

एक सही मैनीक्योर और पेडीक्योर सर्विस आपको आरामदायक मसाज पाने में मदद करती है, जो हाइड्रेशन को वापस लाने और आपकी स्किन को अच्छी तरह से मॉइस्चराइज़ और नरिश्ड रखने में मदद करती है।

5----नाखून और स्किन की हेल्थ में सुधार------

मैनीक्योर या पेडीक्योर आपके नाखूनों को गहराई से साफ़ करता है और उन्हें दिखाने लायक बनाए रखता है।

यह तकनीक सारी गंदगी हटा देती है और स्किन की बीमारियों का कारण बनने वाले जर्म्स को मार देती है, और इसका नाखूनों की हेल्थ पर बहुत अच्छा असर पड़ता है।

क्यूटिकल्स को ट्रिम करने और पीछे धकेलने से दर्दनाक हैंगनेल नहीं होते और नाखून मज़बूत और हेल्दी बनते हैं।

रेगुलर मैनीक्योर और पेडीक्योर हमारे हाथों और पैरों से डेड स्किन सेल्स को हटाकर और सही एक्सफोलिएशन करके नए स्किन सेल्स को बढ़ने में मदद करते हैं।

यह नाखूनों की अच्छी हेल्थ के लिए बहुत ज़रूरी है, क्योंकि हमारे हाथ और पैर दोनों रोज़ाना मेहनत और रगड़ से गुज़रते हैं।

लेखिका एक इंटरनेशनल लेवल पर मशहूर ब्यूटी एक्सपर्ट हैं और उन्हें भारत की हर्बल क्वीन कहा जाता है।

अलग अलग जगह का फेमस डिश ट्राई किया क्या।।? रेसिपी जाने

दाल पूरी बनाने की विधि (बिहार फेमस):

सामग्री:

- उड़द दाल (आधा कप) (भिगोई हुई)
- मैदा (आधा कप)
- हरी मिर्च (बारीक कटी हुई): 1-2
- अदरक (कटा हुआ): 1 छोटी चम्मच
- हींग: चुटकी
- जीरा पाउडर: 1/2 छोटी चम्मच
- धनिया पाउडर: 1/2 छोटी चम्मच
- नमक: स्वादानुसार
- तेल: तलने के लिए
- पानी: आवश्यकतानुसार

विधि:

1. सबसे पहले, उड़द दाल को धोकर अच्छे से धो लें और लगभग 2 घंटे के लिए भिगो दें।
2. भीगी हुई दाल को मिक्सी में थोड़ा पानी डालकर पीस लें, लेकिन बहुत महीन नहीं, बल्कि थोड़ी मोटी रहे।
3. एक कटोरे में मैदा लें, उसमें हिंग, जीरा, धनिया पाउडर, हरी मिर्च और अदरक डालें। फिर उसमें पीसी हुई दाल मिलाएँ।
4. आवश्यकतानुसार पानी डालकर सख्त आटा गूंध लें। आटे को 15-20 मिनट के लिए ढककर रख दें।
5. फिर आटे की छोटी-छोटी लोइयां बनाएँ और बेलन से पूरी की तरह बेल लें।
6. कड़ाही में तेल गरम करें। तेल मध्यम गरम हो तो पूरी को सुनहरा होने तक तलें।
7. तलने के बाद पूरी को पेपर नैपकिन पर निकालें ताकि अतिरिक्त तेल सोख ले।
8. गरमागरम दाल पूरी को परोसें, इसे आमतौर पर चटनी या सलाद के साथ खाया जाता है।

दिल्ली की फेमस आलू चाट बनाने की विधि:

सामग्री:

- उबले हुए आलू (मोटे टुकड़ों में कटे): 4-5
- हरी चटनी: 2 टेबलस्पून
- मीठी चटनी: 2 टेबलस्पून
- कटी हुई प्याज: 1/2 कप
- टमाटर: 1 (बारीक कटा हुआ)
- हरी मिर्च (बारीक कटी): 1-2
- नींबू का रस: 1 टेबलस्पून
- सेव: आवश्यकतानुसार
- कटी हुई धनिया पत्ती: सजावट के लिए
- भुने हुए काले मिर्च पाउडर और चाट मसाला: स्वादानुसार
- नमक: स्वादानुसार

विधि:

1. उबले हुए आलू को एक बाउल में रखें और हल्का सा मैश कर लें।
2. उसमें हरी चटनी, मीठी चटनी, प्याज, टमाटर, हरी मिर्च, नींबू का रस, नमक और चाट मसाला डालें।
3. अच्छी तरह मिलाएँ ताकि सारे स्वाद एक साथ मिल जाएं।
4. ऊपर से सेव डालें और कटी हुई धनिया पत्ती से सजाएँ।
5. तुरंत परोसें और चाहें तो और मसाले या चटनियाँ भी जोड़ सकते हैं।

राजस्थानी मिर्ची वडा बनाने की विधि:

सामग्री:

- हरी मिर्च (लंबी और ताजी): 10-12
- बेसन (बेसन का आटा): 1 कप
- हींग: 1 चुटकी
- हरा धनिया (कटा हुआ): 2 टेबलस्पून
- लाल मिर्च पाउडर: 1/2 छोटी चम्मच
- हरा मिर्च (बारीक कटी हुई): 1-2
- नमक: स्वादानुसार
- तेल: तलने के लिए

विधि:

1. हरी मिर्च को धोकर उनके बीच से लंबाई में छेद कर लें, ताकि बीज और अंदर का भाग निकल जाए। यह मिर्ची वड़ा के लिए तैयार है।
2. एक बर्तन में बेसन लें, उसमें हींग, लाल मिर्च पाउडर, कटा हरा धनिया, बारीक कटी हरी मिर्च और नमक डालें।
3. इसमें थोड़ा पानी डालकर गाढ़ा घोल बना लें, ताकि यह आसानी से मिर्ची में भर सके।
4. एक कड़ाही में तेल गरम करें।
5. हरी मिर्च को बेसन के घोल में डुबोएं और फिर गरम तेल में डालें।
6. मध्यम आंच पर सुनहरा होने तक तलें।
7. तलने के बाद वड़ों को पेपर नैपकिन पर निकालें ताकि अतिरिक्त तेल सोख ले।
8. गरमागरम मिर्ची वड़ा को सॉस या हरी चटनी के साथ परोसें।

मुंबई की मशहूर भेलपुरी बनाने की विधि:

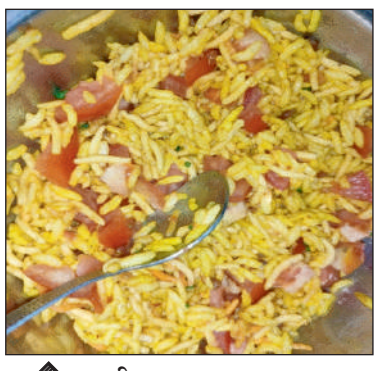

सामग्री:

- पोहा (सूखा): 1 कप
- ताजा भुना हुआ मसाला (भेलपुरी मसाला): 2 टेबलस्पून
- हरी चटनी: 2 टेबलस्पून
- मीठी चटनी: 1 टेबलस्पून
- बारीक कटा हुआ प्याज: 1 छोटा कप
- बारीक कटा हुआ टमाटर: 1 छोटा कप
- सेव: आवश्यकतानुसार
- कटी हुई हरी धनिया: सजावट के लिए
- नींबू का रस: 1 टेबलस्पून
- नमक: स्वादानुसार
- कटी हुई हरी मिर्च (वैकल्पिक): 1-2

विधि:

1. पोहा को हल्का सा धोकर सुखा लें या फिर सूखा ही उपयोग करें।
2. एक बाउल में पोहा, हरी चटनी, मीठी चटनी, प्याज, टमाटर, हरी मिर्च, नींबू का रस और नमक डालें।
3. अच्छी तरह मिलाएँ ताकि सारे सामग्री अच्छी तरह मिल जाएं।
4. ऊपर से भुने हुए भेलपुरी मसाले और सेव डालें।
5. फिर से हल्का मिलाएँ ताकि मसाले अच्छे से पोहों में मिल जाएं।
6. तत्परता से ही परोसें ताकि भेलपुरी कुरकुरी बनी रहे।
7. ऊपर से हरी धनिया से सजाएँ और तुरंत परोसें।

यूपी की मशहूर शाही रबड़ी बनाने की विधि:

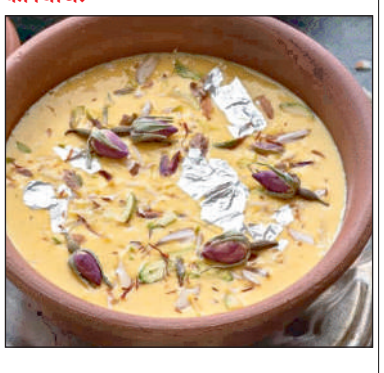

सामग्री:

- दूध: 1 लीटर
- खोया (मावा): 50 ग्राम (इच्छानुसार)
- चीनी: 200 ग्राम (स्वादानुसार कम या ज्यादा कर सकते हैं)
- केसर: कुछ धागे
- बादाम: 10-12 (बारीक कटा हुआ)
- पिस्ता: 10-12 (बारीक कटा हुआ)
- इलायची पाउडर: 1 छोटी चम्मच
- गुलाब जल: 1 टेबलस्पून

विधि:

1. एक गहरे पैन में दूध को मध्यम आंच पर गरम करें।
2. जब दूध उबलने लगे, तब आंच धीमी कर दें और दूध को लगातार चलाते हुए पकने दें ताकि वह गाढ़ा होकर दूध की मलाई और कतली जैसी स्थिरता आ जाए। यह प्रक्रिया लगभग 30-40 मिनट लेती है।
3. जब दूध आधा रह जाए और गाढ़ा हो जाए, तब उसमें चीनी डालें और अच्छी तरह मिलाएं।
4. इसके बाद केसर के धागे दूध में डालें और अच्छी तरह घुलने दें।
5. यदि आप चाहें तो खोया भी डाल सकते हैं, इससे रबड़ी और भी रईसी और स्वादिष्ट बनती है।
6. इलायची पाउडर और गुलाब जल डालें और फिर से मिलाएं।
7. रबड़ी को धीमी आंच पर कुछ मिनट और पकाएं ताकि सारे फ्लेवर अच्छी तरह मिल जाएं।
8. अंत में ऊपर से बारीक कटा हुआ बादाम और पिस्ता डालें।
9. गरम या ठंडा दोनों तरह से परोस सकते हैं। पारंपरिक रूप से यह ठंडी ही खाई जाती है।

गुजरात का फेमस पात्रा, जिसे

"पात्रा" या 'पात्रा-भजी' भी कहा जाता है, एक पारंपरिक गुजराती मिठाई है। यह खासतौर पर त्योहारों और अवसरों पर बनाई जाती है। इसे बनाने के लिए मुख्य सामग्री बेसन (किसमिस), घी, चीनी और सूखे मेवे का उपयोग किया जाता है।

पात्रा बनाने की विधि:**

सामग्री:**

- बेसन (किसमिस): 1 कप
- घी: आवश्यकतानुसार
- चीनी: 1 कप
- पानी: 1/2 कप (चीनी की चाशनी के लिए)
- इलायची पाउडर: 1/2 छोटी चम्मच
- सूखे मेवे (बादाम, पिस्ता, केसर): सजावट के लिए
- केसर: थोड़े धागे (वैकल्पिक)

विधि:**

1. पहले चीनी और पानी को मिलाकर मध्यम आंच पर चीनी की चाशनी बनाएं। इसे थोड़ा गाढ़ा होने तक पकाएं।

2. एक बड़े बर्तन में बेसन लें और उसमें थोड़ा-थोड़ा घी डालते हुए आटा गूंधें, ताकि वह मुलायम और चिकना हो जाए।
3. गूंधे हुए बेसन से छोटी-छोटी गेंदें बनाएं।
4. इन गेंदों को बेलन की मदद से पतले और गोल बेल लें।
5. बेलने के बाद, इन पर हल्का सा घी लगाएं और फिर उन्हें रोल करें ताकि वे कुरकुरे और सुनहरे रंग के बन जाएं।
6. इन पात्रों को गर्म घी में डालकर सुनहरे होने तक फ्राई करें।
7. फिर इन्हें तैयार चाशनी में डालें और कुछ मिनट तक डूबा रहने दें ताकि चाशनी अंदर तक समा जाए।
8. अंत में सूखे मेवे से सजाएं और परोसें।

तवा पुलाव बनाने की विधि (बिना बोल्ड टेक्स्ट):

सामग्री:

- बासमती चावल: 1 कप
- पानी: 2 कप
- तेल या घी: 2 टेबलस्पून
- प्याज: 1 बड़ा, बारीक कटा हुआ
- टमाटर: 1 मध्यम, कटा हुआ
- हरी मिर्च: 1-2, कटी हुई
- अदरक-लहसुन का पेस्ट: 1 टीस्पून
- मिक्स सब्जियां (गाजर, मटर, शिमला मिर्च आदि): 1 कप (वैकल्पिक)
- **मसाले:**
- हल्दी पाउडर: 1/2 टीस्पून
- धनिया पाउडर: 1 टीस्पून
- गरम मसाला: 1/2 टीस्पून
- लाल मिर्च पाउडर: 1/2 टीस्पून
- नमक: स्वादानुसार
- हरा धनिया: सजावट के लिए
- पुदीना पत्ती: सजावट के लिए (वैकल्पिक)

विधि:

1. पहले चावल को धोकर 20-30 मिनट के लिए पानी में भिगो दें। फिर पानी निकालकर अलग रख दें।
2. एक तवे या कड़ाही में तेल या घी गरम करें।
3. गरम तेल में प्याज डालें और सुनहरा होने तक भूनें।
4. अब अदरक-लहसुन का पेस्ट डालें और कुछ सेकंड भूनें।
5. टमाटर और हरी मिर्च डालें, और टमाटर नरम होने तक पकाएं।
6. मसाले (हल्दी, धनिया, मिर्च और गरम मसाला) डालें और अच्छी तरह मिलाएं।
7. सब्जियां डालें और 2-3 मिनट पकाएं।
8. इसमें भिगोए हुए चावल डालें और मिलाएं ताकि मसाले और चावल अच्छी तरह मिल जाएं।
9. अब पानी डालें, नमक मिलाएं और अच्छी तरह से मिलाएं।
10. ढक्कन बंद करें और मीडियम आंच पर पकने दें जब तक चावल पूरी तरह से पक जाएं और पानी सूख जाए।
11. पकने के बाद, आंच बंद कर दें और पुलाव को कुछ मिनट के लिए आराम करने दें।
12. ऊपर से हरा धनिया और पुदीना डालें और गरमागरम परोसें।

दिल्ली के मशहूर छोले कुल्चे बहुत ही प्रसिद्ध और स्वादिष्ट व्यंजन हैं। यह दिल्ली की पारंपरिक स्ट्रीट फूड में से एक हैं और खासतौर पर चंद्रकांता रोड, कनाट प्लेस, सुभाष मार्केट जैसे इलाकों में बहुत प्रसिद्ध हैं।

छोले कुल्चे बनाने की विधि (सामग्री सहित):

सामग्री:

छोले के लिए:

- केले हुए छोले (काबुली चने): 1 कप
- पानी: आवश्यकतानुसार
- तेजपत्ता: 1
- लौंग: 2-3
- तेज मिर्च पाउडर: 1 टीस्पून
- धनिया पाउडर: 1 टीस्पून
- हल्दी पाउडर: 1/2 टीस्पून
- अमचूर पाउडर: 1/2 टीस्पून
- नमक: स्वादानुसार
- हरा धनिया: सजावट के लिए
- नींबू: परोसने के लिए

कुल्चे के लिए:

- मैदा: 1 कप
- सूजी (सजावट के लिए): 1 टेबलस्पून
- खमीर: 1/2 टीस्पून (वैकल्पिक)
- चीनी: 1/4 टीस्पून
- पानी: आवश्यकतानुसार
- नमक: स्वादनुसार
- तेल: तलने के लिए

विधि:

छोले बनाने के लिए:

1. भुने हुए छोले को पहले धो लें।
2. एक प्रेशर कुकर में पानी, तेजपत्ता, लौंग और हल्का नमक डालें। फिर छोले डालें और प्रेशर लगाकर 3-4 सत्र तक पकाएं जब तक छोले नरम हो जाएं।
3. छोले पकने के बाद, उन्हें छान लें और एक पैन में डालें।
4. इसमें लाल मिर्च पाउडर, धनिया पाउडर, हल्दी, अमचूर और नमक डालें। अच्छी तरह मिलाएं और कुछ मिनट तक पकने दें।
5. ऊपर से हरा धनिया डालें और नींबू निचोड़कर परोसें।

कुल्चे बनाने के लिए:

1. मैदा, सूजी, खमीर और चीनी मिलाएं।
2. आवश्यकतानुसार पानी डालकर सख्त आटा गूंथें और ढककर 1 घंटे के लिए रखें।
3. आटे की छोटी-छोटी लोइयां बनाएं और बेलन से गोल आकार में बेल लें।
4. गरम तेल में सुनहरा होने तक तलें।
5. तले हुए कुल्चे को गरम-गरम छोले के साथ परोसें।

अर्धनारीश्वर का वैज्ञानिक रहस्य

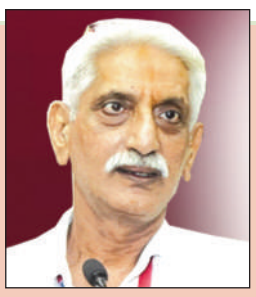

संजय कुमार बाठला

पुरुष शरीर की कुछ खूबियां हैं; स्त्री शरीर की कुछ खूबियां और विशेषताएं हैं और वे दोनों खूबियां और विशेषताएं एक - दूसरे की कांप्लीमेंटरी, परिपूरक हैं।

असल में, स्त्री शरीर भी अधूरा शरीर है और पुरुष शरीर भी अधूरा शरीर है; इसलिए सृजन के क्रम में उन दोनों को संयुक्त होना पड़ता है। यह संयुक्त होना दो प्रकार का है,

* अ नाम के पुरुष का शरीर अगर ब नाम की स्त्री से बाहर से संयुक्त हो, तो प्रकृति का सृजन होता है।

* अ नाम के पुरुष का शरीर अपने ही पीछे छिपे ब नाम के स्त्री शरीर से संयुक्त हो, तो ब्रह्म की तरफ का जन्म शुरू होता है। वह परमात्मा की तरफ यात्रा शुरू होती है, यह प्रकृति की तरफ यात्रा शुरू होती है।

दोनों ही स्थितियों में संभोग घटित होता है।

* पुरुष का शरीर बाहर की स्त्री से संबंधित हो तो भी संभोग घटित होता है, और

* पुरुष का अपना ही शरीर अपने ही पीछे छिपे स्त्री शरीर से संयुक्त हो तो भी संभोग घटित होता है।

* पहले संभोग में ऊर्जा बाहर विकीर्ण होती है,

* दूसरे संभोग में ऊर्जा भीतर की तरफ प्रवेश करना शुरू कर देती है। जिसको वीर्य का ऊर्ध्वगमन कहा है, उसका यात्रा - पथ यही है - - भीतर की स्त्री से संबंधित होना, और भीतर की स्त्री से संबंधित होना।

जो ऊर्जा है, वह सदा पुरुष से स्त्री की तरफ बहती है -- चाहे वह बाहर की तरफ बहे और चाहे वह भीतर की तरफ बहे।

अगर पुरुष के भौतिक शरीर की ऊर्जा भीतर के ईथरिक स्त्री शरीर के प्रति बहे, तो फिर ऊर्जा बाहर विकीर्ण नहीं होती -- ब्रह्मचर्य की साधना का यही अर्थ है -- तब वह निरंतर ऊपर चढ़ती जाती है।

* चौथे शरीर तक उस ऊर्जा की यात्रा हो सकती है।

*चौथे शरीर पर ब्रह्मचर्य पूरा हो जाता है।

*चौथे शरीर के बाद ब्रह्मचर्य का कोई अर्थ नहीं है।

* चौथे शरीर के बाद ब्रह्मचर्य जैसी कोई चीज नहीं है; क्योंकि चौथे शरीर के बाद स्त्री और पुरुष जैसी कोई चीज नहीं है। इसलिए

*चौथे शरीर को पार करने के बाद साधक न पुरुष है और न स्त्री है।

अब यह जो एक नंबर का शरीर और दो नंबर का शरीर है, इसी को ध्यान में रखकर अर्धनारीश्वर की कल्पना कभी हमने चित्रित की थी। बाकी वह प्रतीक बनकर रह गई और हम उसे कभी समझ नहीं पाए।

शंकर अधूरे हैं, पार्वती अधूरी है -- वे दोनों मिलकर एक हैं, और तब हमने उन दोनों का आधा - आधा चित्र भी बनाया -- अर्धनारीश्वर का -- कि आधा अंग पुरुष का है, आधा स्त्री का है। यह जो आधा दूसरा अंग है, यह बाहर प्रकट नहीं है, यह प्रत्येक के भीतर छिपा है। तुम्हारा एक पहलू पुरुष का है, तुम्हारा दूसरा पहलू स्त्री का है।

इसलिए एक बहुत मजेदार घटना घटती है: कितना ही दबंग पुरुष हो, कितना ही बलशाली पुरुष हो -- जो बाहर की दुनिया में बड़ा प्रभावी हो -- सिकंदर हो चाहे, और चाहे नेपोलियन हो, और चाहे हिटलर हो, वह दिन भर दफ्तर में, दुकान में, बाजार में, पद पर, पुरुष की अकड़ से जीता है। लेकिन एक साधारण सी स्त्री घर में बैठी है, उसके सामने जाकर उसकी अकड़ खत्म हो जाती है! यह अजीब सी बात है। वह नेपोलियन की भी हो जाती है। वह क्या कारण है?

असल में, जब वह बारह घंटे, दस घंटे पुरुष का उपयोग कर लेता है, तो उसका पहला शरीर थक जाता है। घर लौटते - लौटते वह पहला शरीर विश्राम चाहता है।

भीतर का स्त्री शरीर प्रमुख हो जाता है, पुरुष शरीर गौण हो जाता है। स्त्री दिन भर स्त्री रहतेc- रहते उसका पहला शरीर थक जाता है, उसका दूसरा शरीर प्रमुख हो जाता है। और इसलिए स्त्री पुरुष का व्यवहार करने लगती है और पुरुष स्त्री का व्यवहार करने लगता है -- रिवर्सन हो जाता है।

एक तो यह खयाल में ले लेना कि ऊर्जा का आंतरिक प्रवाह का, ऊर्ध्वगमन का यह पथ है - - कि भीतर की स्त्री से संभोग।

अब उसके सारे के सारे अलग मार्ग हैं, उसकी तो कोई अभी बात नहीं करनी है।

दूसरी बात, सदा ही शक्ति पुरुष शरीर से स्त्री शरीर की तरफ बहती है। पुरुष शरीर के जो विशेष गुण हैं, वह पहला गुण यह है कि वह ग्राहक नहीं है, रिसेप्टिव नहीं है; आक्रामक है; दे सकता है, ले नहीं सकता।

स्त्री की तरफ से कोई प्रवाह पुरुष की तरफ नहीं बह सकता। सब प्रवाह पुरुष से स्त्री की तरफ ही बहते हैं। स्त्री ग्राहक है, रिसेप्टिव है; दाता नहीं है; दे नहीं सकती, ले सकती है।

हमारे आराध्य स्थल - प्राचीनतम शिव मंदिर देवगुराडिया इन्दौर

संसार में शिव सत्य भी है सुंदर भी और साक्षात रूप में हर जगह विराजमान भी , हम जहां भी जाये भोलेनाथ आप की महिमा अनंत है। शहर इन्दौर के आसपास दो महा तीर्थों के बीच इन्दौर की महारानी शिवभक्त लोक माता अहिल्याबाई होलकर के नाम से भी जाना जाता है। उसी इन्दौर से 8 किलोमीटर दूर नेमावर रोड पर एक अखंड चट्टान पर गुटकेश्वर महादेव शिव मंदिर निर्मित है। जो शहर के प्राचीन मंदिरों में से एक माना जाता है जिसे देवगुराडिया शिव मंदिर कहते हैं। इसे गुटकेश्वर महादेव भी कहते हैं। इस की विशेषता है कि यहां प्राकृतिक जलाअभिषेक होता रहता है। हमारे आराध्य स्थल प्राचीनतम शिव मंदिर देवगुराडिया इन्दौर सिर्फ धार्मिक ही नहीं यहां पर इतिहास, संस्कृति प्रकृति और अध्यात्म का अटूट संगम है। जहां पर इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई होलकर स्वयं पूजा करती थी। इस मंदिर में पौराणिक स्थापत्यकला और राजवंशों के सहयोग से यह स्वयंभू शिवलिंग बहुत मनोहारी व आत्मिक शांति का प्रकट स्थल लगता है। मंदिर की मूल संरचना 7 वीं शताब्दी के बीच परमार वंश के शासनकाल की मानी जाती है। जिसे यहां की नक्काशी व मूर्तिकला को देखकर लगता है, मंदिर विशेष शैल वास्तुकला का जीता-जागता उदाहरण है।इस मंदिर का गर्भगृह एक गहरी चट्टान के नीचे बना हुआ है जहां गोमुख से शीतल जल धारा से शिव जी का अभिषेक हमेशा होता रहता हैं।

इस मंदिर से जुड़ी पौराणिक मान्यता है कि यहां विष्णु भगवान के वाहन पक्षीराज गरुड़ जी ने शिव जी की तपस्या की थी जिसके कारण इस स्थान का नाम गरुड़ तीर्थ के नाम से देवगुराडिया पड़ गया। इस मंदिर में प्राकृतिक गौमुख व अमृत कुंड में जल भरा रहता है और इसी कुंड में नाग-नागिन का एक जोड़ा भी रहता है। जहां भक्तों को दर्शन मात्र से सभी मनोकामनाएं पूरी होती है। इस मंदिर में महाशिवरात्रि पर मेला लगता है जो परम्परा सदियों पुरानी है। और यहां सावन व अन्य उपवास व्रत में शिव भक्तो की संख्या उपार होती है। यहां प्राचीनतम शिव मंदिर शहर की भागदौड़ से दूर प्रकृति के करीब आध्यात्मिक शांति के लिए बहुत सकुन देता है।

प्रेषक - स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग नसिया

महाशिवरात्रि : चेतना के शिखर पर जीवन के रूपांतरण का महापर्व

उमेश कुमार साहू

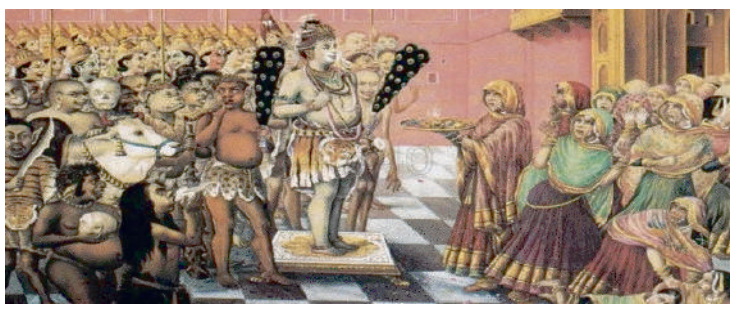

भारतीय मनीषा में महाशिवरात्रि केवल पंचांग की एक तिथि नहीं बल्कि चेतना के ऊर्ध्वगमन की एक वैज्ञानिक और आध्यात्मिक घटना है। जब फाल्गुन मास की कृष्ण चतुर्दशी की गहन कालिमा अपने चरम पर होती है, तब ब्रह्मांड का हर कण उस 'महाशून्य' की ओर झुकता है जिसे हम 'शिव' कहते हैं। यह पर्व शिव की पूजा मात्र नहीं है, बल्कि स्वयं के भीतर छिपे 'शिवत्व' की खोज है, एक ऐसी यात्रा जो हमें खंडित व्यक्तित्व से अखंड बोध की ओर ले जाती है।

शून्य की पूर्णता : जहाँ अंत और आदि एक हैं

विज्ञान कहता है कि ब्रह्मांड का अधिकांश हिस्सा 'अस्तित्वहीन रिक्तता' है, जिसे हम डार्क मैटर या डार्क एनर्जी के करीब मान सकते हैं। अध्यात्म उसी रिक्तता को 'शिव' कहता है। 'शिव' का शाब्दिक अर्थ ही है - 'वह जो नहीं है'। महाशिवरात्रि उस रिक्तता का उत्सव है। आज का मनुष्य 'संग्रह' और 'होने' की अंधी दौड़ में इतना थक चुका है कि वह 'रिक्त' होने का आनंद भूल गया है। शिव हमें सिखाते हैं कि जब तक आप भीतर से खाली (शून्य) नहीं होंगे, तब तक ईश्वरत्व की पूर्णता आपमें नहीं भर पाएगी। यह पर्व अहंकार के विसर्जन से अस्तित्व के विराट उत्सव तक पहुँचने का सेतु है।

विज्ञान और नटराज : ब्रह्मांडीय नृत्य का भौतिकी

आधुनिक भौतिकी और शिव के नृत्य में गहरा संबंध है। विश्व की सबसे बड़ी वैज्ञानिक प्रयोगशाला 'सर्न' (CERN) के बाहर नटराज की विशाल प्रतिमा का होना कोई संयोग नहीं है। वैज्ञानिकों ने माना है कि ब्रह्मांडीय कणों का सृजन और विनाश (Creation and Destruction of subatomic particles) ठीक उसी लय में होता है जैसे शिव का तांडव। महाशिवरात्रि हमें याद दिलाती है कि यह संसार स्थिर नहीं है, बल्कि एक निरंतर ऊर्जा का कंपन है। शिव का डमरू उस 'बिग बैंग' की ध्वनि है जिससे सृष्टि का विस्तार हुआ। जब हम शिवरात्रि की रात जागते हैं, तो हम ब्रह्मांड की इसी मौलिक ऊर्जा के साथ तालमेल बिठाने का प्रयास करते हैं।

विषपायी नायक : उत्तरदायित्व का सर्वोच्च मानक

शिव का 'नीलकंठ' स्वरूप आज के कॉरपोरेट और सामाजिक नेतृत्व के लिए सबसे बड़ा पाठ है। समुद्र मंथन से उत्पन्न विष को पीना पलायन नहीं, बल्कि एक सजग चुनाव था। शिव सिखाते हैं कि जो समाज के विष (बुराई, द्वेष, संकट) को पीकर उसे अपने भीतर रूपांतरित करने का साहस रखता है, वही महादेव कहलाने का अधिकारी है। आज जब हर व्यक्ति सुख के अमृत की ओर भाग रहा है और दुखों का विष दूसरों पर उगल रहा है, तब शिव का संयम हमें यह प्रश्न करने पर विवश करता है - ₹क्या हम अपने हिस्से की कड़वाहट पीकर दुनिया को थोड़ी मिठास दे पा रहे हैं ?₹

अर्धनारीश्वर : संतुलन की आदिम आचार संहिता

शिव और शक्ति का मिलन केवल दो देहों का संगम नहीं, बल्कि पुरुषत्व और स्त्रीत्व के पूर्ण संतुलन का प्रतीक है। शिव 'महायोगी' होकर भी 'महागृहस्थ' हैं। एक ओर वे श्मशान की भस्म में वैराग्य ढूंढते हैं, तो दूसरी ओर हिमालय की चोटियों पर पार्वती के साथ गृहस्थी का धर्म निभाते हैं। उनका परिवार, जहाँ सिंह और बैल, मोर और सर्प जैसे घोर विरोधी स्वभाव एक साथ रहते हैं, इस बात का प्रमाण है कि विविधता का सम्मान ही शांति का एकमात्र मार्ग है। आज के विघटित होते परिवारों के लिए शिव का 'मैनेजमेंट' अनिवार्य है।

तीसरी आँख : अंतर्ज्ञान और विवेक का जागरण

शिव का तीसरा नेत्र कोई चर्म-चक्षु नहीं, बल्कि 'अन्तर्दृष्टि' (Insight) है। जीव विज्ञान की दृष्टि से इसे 'पीनियल ग्लैंड' (Pineal Gland) से जोड़ा जाता है, जो हमारे मस्तिष्क के केंद्र में स्थित है और बोध का द्वार मानी जाती है। जब हम बाहरी दुनिया के आकर्षणों से अपनी आँखें बंद करते हैं, तभी विवेक की तीसरी आँख खुलती है। महाशिवरात्रि वह रात है जब हम काम (वासना) को भस्म करके ज्ञान के प्रकाश में कदम रखते हैं। यह आँख हमें बताती है कि जो दिखता है वह हमेशा सत्य नहीं होता, सत्य वह है जिसे केवल चेतना से महसूस किया जा सके।

उपवास और जागरण : देह से चेतना की ओर

अक्सर हम महाशिवरात्रि को केवल भूखे रहने और रात भर जागने तक सीमित कर देते हैं। परंतु, 'उपवास' का वास्तविक अर्थ है - 'उप' (निकट) और 'वास' (बैठना), यानी अपनी आत्मा के निकट बैठना। 'जागरण' का अर्थ केवल नींद का त्याग नहीं, बल्कि अज्ञान की तंद्रा से जागना है। यह रात रीढ़ की हड्डी को सीधी रखकर बैठने का विधान इसलिए देती है क्योंकि प्राकृतिक रूप से इस दिन ऊर्जा का प्रवाह ऊपर की ओर होता है। यह दिन मोबाइल की स्क्रीन से हटकर अपनी अंतरात्मा के 'नोटिफिकेशन' पढ़ने का है।

शिव और प्रकृति : पर्यावरण का आदि दर्शन

गंगा को जटा में धारण करना, मस्तक पर चंद्रमा का शीतल लेप और शरीर पर पशु चर्म - शिव प्रकृति के आदि संरक्षक हैं। वे बताते हैं कि ईश्वर पहाड़ों के एकांत और नदियों की धारा में है। आज जब हम जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग से जूझ रहे हैं, तब शिव की पूजा का अर्थ केवल शिवलिंग पर जल चढ़ाना नहीं, बल्कि नदियों को प्रदूषण मुक्त रखना और पहाड़ों की शुचिता बचाना होना चाहिए। प्रकृति की रक्षा ही शिव की वास्तविक आराधना है।

निष्कर्ष : 'स्व' से 'सर्व' की ओर

महाशिवरात्रि हमें आत्ममंथन की उस ऊँचाई पर ले जाती है जहाँ 'मैं' मरता है और 'हम' जन्म लेते हैं। यह पर्व हमें निर्भय होने का संदेश देता है क्योंकि जो काल (समय) का भी महाकाल है, उसका भक्त मृत्यु से कैसा डरे ? इस वर्ष की महाशिवरात्रि पर हमारा संकल्प केवल अनुष्ठान तक न रहे। हम अपने भीतर के 'विष' को त्यागें, 'संयम' को आभूषण बनाएँ और जीवन में 'संतुलन' की स्थापना करें। जब हमारे भीतर करुणा का जल बहेगा और विवेक की तीसरी आँख खुलेगी, तभी समझना चाहिए कि हमारे जीवन में महाशिवरात्रि का आगमन हुआ है।

महाशिवरात्रि

शुभ दिन आया बजी शहनाई,
भक्तों को बहुत-बहुत बधाई,
देखो दुल्हन सी सजी महामाई,
नज़र उतारे बार-बार मैना माई ।

लाल जोडा.चमके खनके कलाई,
विवाह गीत मधुर-मधुर देते सुनाई,
हाथों-पांवों में लाल मेहंदी लगाई,
गौरा ने पायलिया छम-छम बजाई ।

बनेंगे शिव जी हिमाचल के जमाई,
बरातियों ने धमाल धम-धम मचाई,
महाशिवरात्रि की पावन तिथि आई,
बोल हरहर महादेव बम बम गुंजाई ।

भक्तों ने आज₹आनंद₹ खुशियाँ पाई,
प्रकृति भी देखो संग-संग मुस्कुराई,
देवी-देवों ने आशीष की झड़ी लगाई,
नभ से पुष्प वर्षा रिमझिम कराई ।

लीला अद्भुत माँ महादेव ने दिखाई,
सारे कष्टों से मुक्ति झट-पट दिलाई,
महाशिवरात्रि की महिमा हमें बताई,
अंतस दिव्य ज्योति जगमग जगाई ।

- मोनिका डागा "आनंद"

बीज मंत्र का राज: 'क्रीं', 'ही', 'श्रीं' – शब्द नहीं, ब्रह्मांड कोड!

संजय कुमार बाठला

कल्पना करो कि प्राचीन तंत्र ग्रंथों में छिपे बीज अक्षर, जिन्हें जपते ही देवता की ऊर्जा सीधे तुम्हारे शरीर में उतर आए – और अचानक जीवन बदल जाए!

यह है वह तीन शक्ति बीज – महाकाली, महामाया और महालक्ष्मी की मूल ध्वनि। ज्यादातर लोग इन्हें सिर्फ सुनते हैं यह दैवीय कंपन हैं जो कुंडलिनी को जगाते, माया को काटते, और समृद्धि को बुलाते हैं।

1. क्रीं – महाकाली का प्रचंड बीज! उच्चारण का राज: "क्रीं" –

* "क" शिव की शुद्ध चेतना,
* "र" अग्नि का विस्फोट,
* "ई" माया की तीव्रता, और
* "" ब्रह्मांड की अनंत ऊर्जा को बांधता है।

गूढ़ रहस्य: यह समय (काल) को नियंत्रित करने वाला मंत्र है।

* जप से भय, शत्रु, पुरानी बुरी आदतें – सब जड़ से जल जाते हैं!
* तंत्र में इसे क्रिया योग का मूल माना जाता है – कुंडलिनी जागृत होती है, निचले चक्र जलते हैं, और सिद्धियां खुलती हैं (त्रिकाल ज्ञान, अलौकिक रक्षा)।

जरूरी सूचना: बिना तैयारी जप करो तो बैकफायर हो सकता है – मानसिक तूफान! लेकिन सही गुरु से दीक्षा लेकर जपो तो... जीवन का हर डर गायब!

मंत्र पावर: शत्रु नाश, साहस, स्वास्थ्य, ट्रांसफॉर्मेशन।

रोज 108 बार "ॐ क्रीं कालिकायै नम:" – और देखो चमत्कार!

२. ह्रीं – महामाया / भुवनेश्वरी का सोलर बीज!

* उच्चारण का राज: "ह्रीं" –
* "ह" शिव,
* "र" अग्नि,
* "ई" चेतना,
* "" अनंत शक्ति।

यह सर्वशक्तिमान मंत्र है – सूर्य ऊर्जा का प्रतीक!

गूढ़ रहस्य:

* हृदय चक्र (अनाहत) से जुड़ा ये मंत्र माया (भ्रम) को काटता है।
* जप से आंतरिक शांति, दिव्य प्रेम, और आकर्षण की शक्ति जागती है। तंत्र में इसे महादेवी का प्रणव कहते हैं – ये सृजन, पालन, संहार तीनों को कंट्रोल करता है!

जरूरी सूचना: जैन धर्म में भी "ह्रीं" अनंतता और तीर्थंकरों की दिव्य ऊर्जा का प्रतीक है! कल्पना करो – जपते ही तुम्हारा हृदय सूरज की तरह चमकने लगे!

मंत्र पावर: नकारात्मकता से मुक्ति, सौंदर्य, आकर्षण, उच्च चेतना।

"ॐ ह्रीं" अकेला जप – हृदय पर फोकस करो, और महसूस करो ऊर्जा!

३. श्रीं – महालक्ष्मी का प्रचुरता बीज!

* उच्चारण का राज: "श्रीं" –
* "श" शांति,
* "र" अग्नि,
* "ई" माया,
* "" समृद्धि का बिंदु।

गूढ़ रहस्य:

* यह चंद्र ऊर्जा और प्रचुरता का मंत्र है।
* जप से धन, ऐश्वर्य, सफलता – सब आकर्षित होता है!
* तंत्र में इसे धन - काम का मूल कहा जाता है – गरीबी और कमी को जड़ से मिटाता है।

जरूरी सूचना: लक्ष्मी चंचल हैं, लेकिन "श्रीं" जप से वो स्थिर हो जाती हैं! शुक्रवार को जपो तो दोगुना फल – व्यवसाय, करियर, वैवाहिक सुख सब संतुलित!

मंत्र पावर: धन प्राप्ति, व्यवसाय में बढ़ोतरी, सौंदर्य, खुशहाली।

"ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नम:" – और देखो पैसे की बारिश!

तीनों का संयुक्त जादू: ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं – पांच महाशक्तियां एक साथ जागृत!

यह बीज सिर्फ ध्वनि नहीं – बीज हैं! जैसे बीज से वृक्ष उगता है, वैसे जप से जीवन फलता - फूलता है। लेकिन याद रखो: गुरु दीक्षा बिना मत छेड़ना – यह दिव्य संहिता हैं!

सही तरीका: "" को नाक से कंपन करो, जैसे "म" की गूंज।

सावधानी: पहले शांति मंत्र से शुद्धि करो, वरना ऊर्जा अधिभार हो सकती है!

शिव और शक्ति के मिलन का महापर्व है महाशिवरात्रि।

संतोष कुमार तिवारी

महाशिवरात्रि एक महत्वपूर्ण हिंदू त्योहार है, जो भगवान शिव की पूजा और उपासना के लिए मनाया जाता है। यह त्योहार फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को मनाया जाता है। महाशिवरात्रि का महत्व भगवान शिव की पूजा और उपासना से जुड़ा हुआ है। इस दिन भगवान शिव की पूजा करने से व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति होती है और उसके जीवन में सुख-शांति आती है। इस दिन भगवान शिव को बेलपत्र, धतूरा, और अन्य पूजा सामग्री अर्पित की जाती है। महिलाएं और कुंवारी कन्या महाशिवरात्रि को व्रत रखती है और कहीं कहीं रात को जागरण किया जाता है और भगवान शिव की पूजा आराधमा की जाती है। इस दिन बहुत लोग व्रत रखते हैं और भगवान शिव की पूजा में लीन रहते हैं। महाशिवरात्रि का महत्व न केवल धार्मिक दृष्टि से है, बल्कि यह त्योहार सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इस दिन लोग अपने परिवार और मित्रों के साथ मिलकर भगवान शिव की पूजा करते हैं और इस त्योहार को मनाते हैं। महाशिवरात्रि के अवसर पर कई स्थानों पर मेले और उत्सव आयोजित किए जाते हैं, जहां लोग एकत्र होते हैं और भगवान शिव की पूजा करते हैं। महाशिवरात्रि का इतिहास पुराणों में वर्णित है। एक कथा के अनुसार, भगवान शिव ने इस दिन अपना तांडव नृत्य किया था, जिससे सृष्टि का निर्माण हुआ था। एक अन्य कथा के अनुसार, भगवान शिव ने इस दिन अपना विवाह माता पार्वती से किया था।महाशिवरात्रि की पूजा करने से व्यक्ति को कई लाभ होते हैं। इस दिन भगवान शिव की पूजा करने से व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति होती है और उसके जीवन में सुख-शांति आती है। महाशिवरात्रि की पूजा करने से व्यक्ति के पापों का नाश होता है और उसे भगवान शिव की कृपा प्राप्त होती है।

महाशिवरात्रि का महत्व विभिन्न संस्कृतियों में अलग-अलग है। हिंदू धर्म में महाशिवरात्रि का महत्व बहुत अधिक है। इस अवसर पर कई स्थानों पर तमाम कार्यक्रम जैसे शिव बारात, भजन संध्या, गीत-संगीत आयोजित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों में भगवान शिव की पूजा, अभिषेक, और रुद्राभिषेक शामिल हैं। इस दिन लोग उपवास रखते हैं और भगवान शिव की पूजा में लीन रहते हैं। महाशिवरात्रि के अवसर पर कई स्थानों पर मेले और उत्सव आयोजित किए जाते हैं, जहां लोग एकत्र होते हैं और भगवान शिव की पूजा करते हैं।

महाशिवरात्रि पर्व का आध्यत्मिक महत्व के साथ-साथ वैज्ञानिक महत्व भी रखता है, जो इस त्योहार को और भी महत्वपूर्ण बनाता है। महाशिवरात्रि फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को मनाया जाता है, जब चंद्रमा अपनी सबसे कमजोर स्थिति में होता है। इस समय चंद्रमा की गुरुत्वाकर्षण शक्ति कम होती है, जिससे पृथ्वी पर जल की गति और दबाव में परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन मानव शरीर पर भी प्रभाव डालता है, जिससे व्यक्ति की मानसिक और शारीरिक स्थिति प्रभावित होती है। भगवान शिव की पूजा और उपासना करने से व्यक्ति की ऊर्जा का संतुलन बना रहता है। इस दिन भगवान शिव की पूजा करने से व्यक्ति को अपनी ऊर्जा को संतुलित करने में मदद मिलती है, जिससे उसकी मानसिक और शारीरिक स्थिति में सुधार होता है साथ ही प्राकृतिक ऊर्जा का प्रवाह बहुत अधिक होता है। इस दिन भगवान शिव की पूजा करने से व्यक्ति को इस प्राकृतिक ऊर्जा का लाभ मिलता है, जिससे उसकी मानसिक और शारीरिक स्थिति में सुधार होता है। वातावरण का शुद्धिकरण होता है। इस दिन भगवान शिव की पूजा करने से व्यक्ति को अपने आसपास के वातावरण को शुद्ध करने में मदद मिलती है, जिससे उसकी मानसिक और शारीरिक स्थिति में सुधार होता है।

मानसिक शांति : महाशिवरात्रि के दिन भगवान शिव की पूजा करने से व्यक्ति को मानसिक शांति मिलती है। इस दिन भगवान शिव की पूजा करने से व्यक्ति को अपने मन को शांत करने में मदद मिलती है, जिससे उसकी मानसिक और शारीरिक स्थिति में सुधार होता है। इन वैज्ञानिक पहलुओं के अलावा, महाशिवरात्रि का महत्व धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी है। इस त्योहार को मनाने से व्यक्ति को अपने जीवन में सुख-शांति और समृद्धि मिलती है। महाशिवरात्रि एक महत्वपूर्ण हिंदू त्योहार है, जो भगवान शिव की पूजा और उपासना के लिए मनाया जाता है। इस त्योहार का महत्व न केवल धार्मिक दृष्टि से है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। महाशिवरात्रि की पूजा करने से व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति होती है और उसके जीवन में सुख-शांति आती है। इस त्योहार को मनाने से व्यक्ति के पापों का नाश होता है और उसे भगवान शिव की कृपा प्राप्त होती है।

24 कृषि यंत्रों पर अनुदान के लिए आवेदन शुरू

रोटावेटर सहित अन्य कृषि यंत्रों के लिए 16 फरवरी तक कर सकते हैं ऑनलाइन आवेदन

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 14 फरवरी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा वर्ष 2025-26 के दौरान एसएमएएम योजना के तहत किसानों को 40 से 50 प्रतिशत अनुदान पर कृषि यंत्र उपलब्ध करवाने के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि योजना का लाभ लेने के इच्छुक किसान 16 फरवरी तक विभाग की वेबसाइट एग्री हरियाणा.जीओवी.आईएन पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

उपायुक्त ने बताया कि व्यक्तिगत श्रेणी के तहत रोटावेटर, आलू बिजाई मशीन, ट्रैक्टर संचालित पावर वीडर, बैटरी/इलेक्ट्रिक/सौर संचालित पावर वीडर, सेल्फ प्रोपेल्ड मल्टी टूल बार, स्व-चालित उच्च क्लीयरेंस बूम स्प्रेयर, लोडर/भूसा कटर के साथ उच्च क्षमता वाला चारा काटने वाला यंत्र, ट्रैक्टर चालित सिलेज पैकिंग मशीन/सिलेज बेलर (1400-1500 किग्रा/घंटा), बैटरी चालित उर्वरक प्रसारक, ट्रैक्टर चालित उर्वरक प्रसारक, ट्रैक्टर संचालित हाइड्रोलिक प्रेस स्ट्रॉ बेलर, सब-सोइलर, मल्टी क्रॉप बेड प्लान्टर/रेज्ड बेड प्लान्टर, विनोइंग फैन, मक्का थ्रेशर/मक्का शेलर, गाय के गोबर से ब्रिकेटिंग मशीन, गोबर निर्जलीकरण मशीन, धान मोबाइल ड्रायर तथा लेजर लैंड लेवलर सहित कुल 24 कृषि यंत्र अनुदान पर उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

उन्होंने बताया कि ऑनलाइन आवेदन की संख्या निदेशालय द्वारा निर्धारित लक्ष्य से अधिक होने की स्थिति में कृषि यंत्रों का चयन उपायुक्त की अध्यक्षता में जिला कार्यकारी समिति द्वारा ड्रा के माध्यम से किया जाएगा। चयनित किसान अनुदान पर प्राप्त कृषि यंत्र को पांच वर्षों तक बेच नहीं सकेगा।

उप निदेशक कृषि एवं किसान कल्याण विभाग ने जानकारी देते हुए बताया कि व्यक्तिगत आवेदन करने वाले किसान ने आवेदित कृषि यंत्र पर पिछले तीन वर्षों (2022-23, 2023-24 व 2024-25) में अनुदान न लिया हो। साथ ही किसान का रबी सीजन 2024 व खरीफ सीजन 2025 का मेरी फसल मेरा ब्यौरा पोर्टल पर पंजीकरण होना अनिवार्य है।

वहीं सहायक कृषि अभियंता राजीव पाल ने बताया कि आवेदन के दौरान किसान को स्वयं घोषणा पत्र, किसान के नाम भूमि संबंधी दस्तावेज व पटवारी रिपोर्ट (केवल लघु एवं सीमांत किसानों के लिए), अनुसूचित जाति के किसानों हेतु जाति प्रमाण पत्र, पैन कार्ड तथा स्वयं या परिवार पहचान पत्र में दर्ज किसी सदस्य के नाम राज्य में पंजीकृत ट्रैक्टर की वैध आरसी अपलोड करनी होगी। जिला स्तरीय कार्यकारी समिति में चयन के बाद किसानों को सभी संबंधित दस्तावेज सहायक कृषि अभियंता कार्यालय में जमा करवाने होंगे।

उन्होंने यह भी बताया कि किसान को अनुदान का लाभ केवल एक ही कृषि यंत्र पर दिया जाएगा। अधिक जानकारी के लिए किसान सहायक कृषि अभियंता, झज्जर कार्यालय से संपर्क कर सकते हैं।

सीबीएसई परीक्षा के मद्देनजर धारा 163 लागू, आदेश जारी

परिवहन विशेष न्यूज

– शांतिपूर्ण ढंग से परीक्षाओं के दृष्टिगत धारा 163 लागू
17 फरवरी से 11 अप्रैल तक आयोजित होंगी परीक्षाएं

झज्जर, 14 फरवरी। जिलाधीश स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने 17 फरवरी से आयोजित हो रही सीबीएसई की 10वीं व 12वीं की परीक्षाओं को शांतिपूर्ण तरीके से आयोजित करवाने के मद्देनजर परीक्षा केंद्र के 200 मीटर की परिधि में धारा 163 लागू की है।

जिलाधीश ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 के तहत शनिवार को इस संबंध में आदेश जारी करते हुए परीक्षा केंद्रों के आसपास पांच या इससे अधिक व्यक्तियों के एकत्रित होने, हथियार जैसे विस्फोटक, तलवार, गंडासा, लाठी, बरछा, कुल्हाड़ी, जेली, चाकू तथा अन्य हथियार आदि लेकर चलने पर प्रतिबंध लगाया गया है। 17 फरवरी 2026 से 11 अप्रैल 2026 तक प्रतिदिन सुबह 10 बजे से दोपहर 2:30 बजे तक प्रभावी रहेगा।

जिलाधीश ने स्पष्ट किया कि यदि कोई व्यक्ति इन आदेशों का उल्लंघन करता पाया जाता है, तो उसे भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 223 के तहत दंडित किया जाएगा।

रंजीत नगर के हिंद चौक आर ए डब्लू ए में हिंदू सम्मेलन आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

14 फरवरी 2026 को श्याम 6 बजे पटेल नगर विधान सभा के क्षेत्र रंजीत नगर के हिंद चौक आर ए डब्लू ए में हिंदू सम्मेलन आयोजक समिति बाबा बड़ा वीर बस्ती द्वारा आर एस एस के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष मे सर्व हिंदू समाज सम्मेलन का किया गया जिसमें विभिन्न संघठन और विधाओं से लोग आए थे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पुजय श्री सुनील कौशल महाराज जी थे जिन्होंने अपने कथा वाचन से हिंदुओ की एकता को उजागर किया कार्यक्रम में कई लोगो को सम्मानित किया गया जिसमें रंजीत नगर के मंदीरवाली गली में निवासी और गायिका श्रीमती राज कुमारी देवी जो की छठ पूजा के गाने से जानी जाती है उनको परम गुरु द्वारा मंच पर बुलाकर सम्मानित किया गया और इन्होंने 200 से ऊपर महिलाओ को महाशिवरात्रि के उपल्क्ष में मेहंदी का भी वितरण किया जिसके लिए सभी महिलाओ ने इनका धन्यवाद किया और आशीर्वाद दिया

अवैध मिट्टी खनन माफिया आए दिन धड़ल्ले से बिनावर पुलिस से साठ गांठ कर रहे है अवैध मिट्टी खनन का कारोबार, खनन विभाग अधिकारी ने सादी चुप्पी

उक्त खनन माफिया का कहना है कि थाना बिनावर पुलिस हमसे पैसा लेती है जिस कारण हम पैसा देकर मिट्टी का अवैध खनन करते हैं

बिनावर : राज्य सरकार के अवैध खनन के खिलाफ सख्त अभियान के बावजूद बदायूं जिले के बिनावर थाना क्षेत्र में खनन माफियाओं की मनमानी लगातार जारी है।

जबकि एक उक्त खनन माफिया ने विभिन्न समाचार पत्र के पत्रकारों से यह बात खुद कबूली की है कि वह थाना बिनावर पुलिस से साठ- गांठ कर मिट्टी के अवैध खनन कार्य को अंजाम आए दिन दे रहे हैं। जिसका एक ऑडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इस दौरान आए दिन हो रहे अवैध खनन को लेकर थाना बिनावर पुलिस की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठ रहे हैं।

आपको बताते चले मामला थाना बिनावर क्षेत्र के गांव मोहम्मदपुर बिहार, ददमई, रख्मा, घटपुरी, जाटव गोठिया, पलिया झंडा सहित आदि गांव में आए दिन पुलिस प्रशासन के संरक्षण में खनन माफियाओं द्वारा मिट्टी के अवैध खनन का कार्य जोरों पर चल रहा है।

क्षेत्र में हो रहे अवैध खनन की सूचना ग्रामीणों द्वारा मीडिया कर्मी को मिली तब विभिन्न समाचार पत्र के मीडिया कर्मी ने अवैध खनन माफिया से मिट्टी खनन से संबंधित डॉक्यूमेंट (कागज) दिखाने हेतु कहां तो उक्त खनन माफिया ने फोन कॉल के माध्यम से मीडिया कर्मी से कहा कि वह खनन विभाग अधिकारी से परमिशन न बनवाकर थाना बिनावर पुलिस को रुपए देकर अवैध मिट्टी खनन का कार्य कर रहे हैं। जिसका एक ऑडियो भी सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है।

इस संबंध में जब बिनावर थाना अध्यक्ष राजेंद्र सिंह से जानकारी लेना चाहा तो उन्होंने जानकारी देना उचित नहीं समझा और मीडिया कर्मी से कहा कि कॉल काटो उधर से। थाना अध्यक्ष बिनावर के इस बर्ताव से प्रतीत होता है कि यह अवैध खनन का कारोबार थाना अध्यक्ष राजेंद्र सिंह की साठ गांठ में चल रहा है जो की खनन माफिया ने भी यह बात फोन कॉल के माध्यम से मीडिया कर्मी को जाहिर की है। जिसके सभी साक्ष्य मीडिया कर्मी के पास मौजूद है और सोशल मीडिया पर भी जमकर कॉल रिकॉर्डिंग वायरल है।

बदलते मौसम में स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें नागरिक : डीसी

पौष्टिक भोजन लें तथा सुबह शाम योगा एवं ध्यान करें नागरिक

झज्जर, 14 फरवरी। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने नागरिकों से बदलते मौसम में अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने की अपील की है। उन्होंने कहा कि इन दिनों दिन में गर्मी और सुबह-शाम ठंड का असर देखा जा रहा है, जिससे लोग अक्सर लापरवाही बरत लेते हैं और बीमार पड़ जाते हैं। उन्होंने कहा कि आमजन को बेहतरीन स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रशासन सजग है।

उन्होंने कहा कि आमजन पौष्टिक भोजन करें और सुबह शाम नियमित योगा एवं ध्यान करें। उन्होंने कहा कि प्रत्येक नागरिक को स्वास्थ्य विभाग द्वारा समय-समय पर जारी किए जाने वाले परामर्श की भी अनुपालना करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि बदलते मौसम में बुखार, खांसी, जुकाम, एलर्जी, जोड़ों में दर्द आदि कोई भी लक्षण प्रतीत होने पर तुरंत अपने नजदीकी चिकित्सा केंद्र में स्वास्थ्य जांच करवाएं।

डीसी ने बताया कि तापमान में इस तरह के उतार-चढ़ाव के दौरान सर्दी, खांसी, बुखार और वायरल संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। ऐसे में हल्के और मौसम के अनुसार कपड़े पहनना, पर्याप्त पानी पीना, साफ-सफाई का ध्यान रखना और भीड़भाड़ वाली जगहों पर सावधानी बरतना जरूरी है।

उन्होंने कहा कि खासतौर पर बच्चों और बुजुर्गों को अतिरिक्त सतर्कता रखने की आवश्यकता है। किसी भी प्रकार के लक्षण दिखाई देने पर तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें और खुद से दवा लेने से बचें। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि स्वस्थ आदतों को अपनाकर खुद भी सुरक्षित रहें और दूसरों को भी जागरूक करें।

केंद्रीय मंत्री रामदास अठावले आज करेंगे माजरी गांव का दौरा

सामाजिक कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि करेंगे शिरकत

बादली, 14 फरवरी। सामाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण राज्य मंत्री भारत सरकार श्री रामदास अठावले आज (15 फरवरी रविवार) को बादली खंड के गांव माजरी में आयोजित सामाजिक कार्यक्रम में बतौर मुख्यतिथि शिरकत करेंगे।

सरकारी प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि राज्य मंत्री श्री रामदास अठावले दोपहर साढ़े 12 बजे कार्यक्रम में पहुंचेंगे । कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह को संबोधित करेंगे और सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं तथा समाज के कमजोर वर्गों के सशक्तिकरण से जुड़े प्रयासों पर प्रकाश डालेंगे।

एम्स के बाहर हंगामा: श्याम मेडिकल स्टोर के प्रोपराइटर की मौत पर परिजनों व व्यापारियों का धरना, लापरवाही का आरोप

परिवहन विशेष न्यूज

रायबरेली। भदोखर थाना क्षेत्र स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान रायबरेली (एम्स) में एक मरीज की मौत के बाद 14 फरवरी 2026 दिन शनिवार को समय करीब 4:00 जमकर हंगामा हुआ। एम्स अस्पताल के सामने स्थित श्याम मेडिकल स्टोर के प्रोपराइटर श्याम द्विवेदी पुत्र दुर्गा प्रसाद द्विवेदी की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। परिजनों ने इमरजेंसी में तैनात जूनियर डॉक्टरों पर लापरवाही का आरोप लगाया है।

घर पर फिसलकर गिरे, इमरजेंसी में तोड़ा दम

परिजनों के अनुसार, आज दिनांक 14.12.2026 को श्याम द्विवेदी अचानक अपने घर पर फिसलकर गिर गए। घटना के बाद परिवारजन उन्हें आनन-फानन में एम्स के इमरजेंसी विभाग लेकर पहुंचे। आरोप है कि इमरजेंसी में उचित उपचार न मिलने और डॉक्टरों की लापरवाही के चलते उनकी मौत हो गई।

पोस्टमार्टम को लेकर बढ़ा विवाद

मौत के बाद परिजनों का आरोप है कि अस्पताल प्रशासन ने तत्काल शव परिजनों को न सौंपते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। इस बात से आक्रोशित परिवारजन व स्थानीय लोग अस्पताल परिसर में एकत्र हो गए। सूचना मिलने पर स्थानीय व्यापारी भी मौके पर पहुंच गए।

व्यापार मंडल अध्यक्ष के नेतृत्व में धरना

एम्स व्यापार मंडल के अध्यक्ष धर्मेंद्र त्रिवेदी मौके पर पहुंचे और डॉक्टरों पर लगातार लापरवाही बरतने का आरोप लगाते हुए धरने पर बैठ गए। उनका कहना था कि एम्स की इमरजेंसी में आए दिन ऐसी घटनाएं सामने आती रहती हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि इससे पहले भी यहां की बदहाल व्यवस्था को लेकर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक को ज्ञापन दिया जा चुका है, लेकिन अब तक कोई ठोस सुधार नहीं हुआ।

काफी मशक्कत के बाद समाप्त हुआ धरना

काफी देर तक चले हंगामे और वार्ता के बाद अंततः अस्पताल प्रशासन द्वारा शव परिजनों को सौंपे जाने पर धरना समाप्त हुआ। हालांकि व्यापारियों ने चेतावनी दी है कि यदि एम्स की व्यवस्थाओं में सुधार नहीं हुआ तो पूरे रायबरेली का व्यापारी वर्ग बड़े आंदोलन के लिए मजबूर होगा।

पुलिस रही मौके पर तैनात

मामले की सूचना पर भदोखर थाना पुलिस भी मौके पर पहुंची और स्थिति को नियंत्रित किया। फिलहाल पुलिस पूरे प्रकरण की जांच में जुटी है।

सत्यम मिश्रा
सोशल मीडिया विशेषज्ञ
उत्तर प्रदेश / उत्तराखंड

सज रहे भोले बाबा निराले दूल्हे में
निराले दूल्हे में, मतवाले दूल्हे में
सज रहे भोले बाबा निराले दूल्हे में,

अरे देखो भोले बाबा की अजब है बात
चले हैं संग ले कर के भूतों की बरात
सज रहे भोले बाबा निराले दूल्हे में, ।।

महेदी हल्दी लगा कर आज दूल्हा बने भोलेनाथ।
चित्र में हल्दी लगती हुई महिलाएं

प्रेषक स्वतंत्र पत्रकार व लेखक हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

जिंदगी के रथ में लगाम बहुत है!!
अपनों के अपनों पर इल्ज़ाम बहुत है!!
ये शिकायतों का दौर देखता हूं तो थम सा जाता हूं!!
लगता है उम्र कम है इम्तिहान बहुत है!!

रंजोगम की जिंदगी में बंदगी का दौर होश सम्हालने से लेकर होश गंवाने तक चलता रहता है। सम्बन्धों की तिजारती मेला में अकेला होने के बावजूद भीड़ के साथ चलना ही जीवन है !इस नश्वर संसार में कदम कदम पर विकार से भरा हर रास्ता इन्तजार करता हैऔर उसी के बीच से उम्र के बाजार में जिंदगी की सौदागरी का तजुर्बा भी परवान चढ़ता है। मृत्यु लोक मे पदार्पण करने के साथ ही मिट्टी के पुतले में समाई आत्मा परमात्मा के शानिध्य को पाकर वक्त के साथ धर्म कर्म के अग्निपथ पर निरन्तर मंजिल के तरफ सरकती रहती है लेकिन विडम्बना देखिए तमाम दर्द का एहसास करके भी मूढ़ मानव उस परम लक्ष्य को भूलकर माया से ग्रसित विकृत संसार के विदीर्ण पथ का अनुगामी बन अपने पराए के शतरंजी खेल का मोहरा बनाकर रह जाता है !जिस प्रारब्ध को सुधारने के लिए वर्षों आत्मा तमाम योनियों में भटकती रही वहीं आत्मा जब मानव शरीर प्राप्त कर इस नश्वर संसार के धरातल पर कदम रखती है तब उसके ज्ञान पर माया का पर्दा इस कदर घना हो जाता है की उसे अपना गुजरा कल याद ही नहीं रहता ! धन सम्पदा के मोह पास में उलझ कर इस कदर ब्यस्त हो जाता है कि उसको उससे दीगर कुछ सोचने की फुर्सत ही नहीं मिलता !उम्र का पानी नादानी के दरिया में धीरे धीरे सुखने लगता है !अहंकार की अभिमानी हवा की रफ्तार ज्यों ही कम होती तकदीर का सूरज अस्ताचल के तरफ जाने का आभास कराने लगता है !मिट्टी की महकती काया में इठलाती मुस्कराती इन्द्रियां फिर नव बिहान के इन्तजार में रास्ता बदलने लगती है !आत्मा परिवर्तन के राह में नर्तन करने लगती है ! मौत का मनहूस पहर करीब आने लगता है !तब भी स्वार्थ की चासनी को चखने वाला मतलबी इन्सान आखरी समय तक मायावी लोक की अवधारणा से मुक्त नहीं हो पाता !पश्चाताप की परिधि में सारी अवधि गुजारने के बाद जब असहाय लाचार बिमार बना गुजरे लम्हों को याद कर मालिक से वापसी की फरियाद करता तब कोई अपना नहीं दिखता !, हर तरफ घनघोर अंधियारा के बीच अकेला अश्कों की वर्षांत मे प्रायश्चित की दुनियां में खुद को तन्हा देखकर जार जार रोता है ! जब तक जीवन उफान पर था कर्मों की खेती में इन्सानियत का बीज बोया ही नहीं !कभी गरीब असहाय लाचार के दर्द में रोया ही नहीं !, मालिक की बनाई दुनिया में श्रद्धा, करूणा, त्याग तपस्या को करीब ही नहीं आने दिया फिर सफर के आखरी पहर में जब विवशता हावी है सोच के समन्दर में पश्चाताप की कश्ती उतारने से क्या फायदा !यहआनी जानी दुनियां है भाई कर्मों का हिसाब ही मालिक के दरबार में होगा कोई नहीं है अपना ! समय के साथ परलोक मे पारितोषिक के लिए इस लोक में ही सद्गुण सदाचार के साथ आचार विचार को शुद्ध कर पारलौकिक संसार के अवरूद्ध मार्ग को खोलना होगा !आत्मा अमर है ! हमेशा समय के साथ नये सफर पर चलती रही है ! जब तक सांस है मालिक पर विश्वास है तो नेकी की खेती करते जाओ भाई कुछ भी साथ नहीं जायेगा।

आध्यात्मिक जागरण की रात्रि है महाशिवरात्रि-स्वामी पूर्णानंदपुरी जी महाराज

परिवहन विशेष न्यूज

अलीगढ़। फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी और चतुर्दशी तिथि को श्रद्धा, भक्ति और तप के साथ मनाया जाने वाला महापर्व महाशिवरात्रि इस वर्ष 15 फरवरी, रविवार को मनाया जाएगा। महाशिवरात्रि केवल एक पर्व नहीं, बल्कि आत्मजागरण का अवसर है। भगवान शिव संहार के देवता ही नहीं, बल्कि करुणा, सरलता और समता के प्रतीक हैं। वे हमें अहंकार त्यागकर सत्य, संयम और साधना के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। यह पर्व भगवान शिव और माता पार्वती के दिव्य मिलन का प्रतीक माना जाता है तथा इसे आध्यात्मिक जागरण की रात्रि भी कहा जाता है। इधर इस सम्बन्ध में वैदिक ज्योतिष संस्थान के प्रमुख स्वामी पूर्णानंदपुरी महाराज ने बताया कि इस बार महाशिवरात्रि अत्यंत दुर्लभ और शुभ संयोग में आ रही है। इस दिन सूर्य, बुध, शुक्र और राहु कुंभ राशि में, केतु सिंह राशि में तथा चंद्रमा मकर राशि में गोचर करेंगे साथ ही त्रिकोण योग और सर्वार्थ सिद्धि योग का विशेष संयोग बन रहा है। ज्योतिष शास्त्र में इन योगों को अत्यंत मंगलकारी और फलदायी माना जाता है। बताया गया कि ऐसा संयोग वर्ष 2007 में बना था और लगभग 19 वर्ष बाद पुनः बन रहा है, जिससे इस बार की शिवरात्रि का महत्व और भी बढ़ गया है। स्वामी पूर्णानंदपुरी महाराज ने शिवपुराण की कोटिरुद्रसंहिता का उल्लेख करते हुए बताया कि भगवान शिव स्वयं कहते हैं कि जो व्यक्ति श्रद्धा और नियमपूर्वक शिवरात्रि का व्रत करता है, उसे भोग और मोक्ष दोनों की प्राप्ति होती है। ब्रह्मा, विष्णु और माता पार्वती के प्रश्न करने पर भगवान सदाशिव ने इस व्रत को अत्यंत पुण्यदायी बताया है। शास्त्रों के अनुसार इस रात्रि में भगवान शिव लिंग रूप में प्रकट हुए थे, इसी कारण इस दिन रात्रि जागरण और शिवलिंग पूजन का विशेष महत्व है। यह रात्रि आत्मशुद्धि, तप, संयम और ध्यान की रात्रि मानी जाती है। सभी आध्यात्मिक अनुष्ठानों में उपवास को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। गीता में कहा गया है विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः" अर्थात उपवास से इंद्रियों की विषयों से निवृत्ति होती है। उपवास केवल भोजन का त्याग नहीं, बल्कि मन, वाणी और कर्म की शुद्धि का भी माध्यम है। जो साधक इस दिन संयम रखकर रात्रि जागरण करता है, वह अपने जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अधिक सक्षम बनता है। शिवरात्रि का व्रत आत्म नियंत्रण और आध्यात्मिक उन्नति का साधन है। स्वामी जी के अनुसार महाशिवरात्रि पर प्रदोष काल से लेकर मध्यरात्रि तथा ब्रह्ममुहूर्त तक चार प्रहर की पूजा का विशेष महत्व है। प्रत्येक प्रहर में शिवलिंग का अभिषेक भिन्न-भिन्न सामग्री से किया जाता है। प्रथम प्रहर में जल और गंगाजल से अभिषेक किया जाता है। द्वितीय प्रहर में दूध से, तृतीय प्रहर में दही, घी और शहद से तथा चतुर्थ प्रहर में शुद्ध जल एवं बेलपत्र अर्पित किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त बिल्वपत्र, धतूरा, आक के पुष्प, भस्म, चंदन, अक्षत, फल और मिष्ठान अर्पित किए जाते हैं।

दिल्ली में तीन दिवसीय 'गो-भक्त महिला सम्मेलन' का भव्य समापन; नारी शक्ति ने लिया गो-संरक्षण का संकल्प

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली ।भारतीय गोवंश रक्षण-संवर्धन परिषद (विश्व हिंदू परिषद-गोरक्षा विभाग) द्वारा छतरपुर, दिल्ली में आयोजित तीन दिवसीय 'गो-भक्त महिला सम्मेलन' का भारी उत्साह और संकल्प के साथ समापन हुआ। समापन सत्र में संगठन के शीर्ष केंद्रीय नेतृत्व और देशभर से आए प्रतिनिधियों ने भारतीय नस्ल की गायों के संरक्षण और संवर्धन में महिलाओं की अग्रणी भूमिका पर बल दिया।

समापन समारोह में विहिप और गोरक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, जिनमें मुख्य रूप से उपस्थित रहे, श्री स्थाणुमलयन जी, केंद्रीय संयुक्त महामंत्री, विश्व हिंदू परिषद,

श्री दिनेश उपाध्याय जी, राष्ट्रीय गोरक्षा प्रमुख ।डॉ. गुरु प्रसाद जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय गोवंश रक्षण एवं संवर्धन परिषद।

श्री हुकुमचंद सावला जी, राष्ट्रीय संरक्षक, भारतीय गोरक्षा, डॉ. माधवी गोस्वामी जी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भारतीय गोवंश रक्षण एवं संवर्धन परिषद, श्रीमती नंदिनी भोजराज जी, राष्ट्रीय गो-भक्त महिला प्रमुख,

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केंद्रीय संयुक्त महामंत्री श्री स्थाणुमलयन जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में गौ और गौरी (नारी) दोनों पूजनीय हैं ।जब मातृशक्ति गो-सेवा का बीड़ा उठाती है, तो वह कार्य निश्चित ही सिद्ध होता है। राष्ट्रीय गोरक्षा प्रमुख श्री दिनेश उपाध्याय जी ने देश के प्रत्येक जिले और प्रखंड स्तर पर गो-भक्त महिलाओं की टोलियाँ बनाने का आह्वान किया।

श्रीमती नंदिनी भोजराज जी ने सम्मेलन के निष्कर्ष साझा करते हुए बताया कि इन तीन दिनों में महिलाओं को गो-उत्पाद (जैसे पंचगव्य, धूप, खाद) के निर्माण और उनके आर्थिक महत्व के बारे में प्रशिक्षित किया गया है, ताकि वे स्वावलंबी बनकर गो-सेवा कर सकें।

INFORMATION / सूचना
I, Priyanka D/O.. Mrinal Kanti kundu R/O..B-2/22, sewak park Uttam Nagar New Delhi 110059 have changed my name to Priyanka kundu for all future purposes, Priyanka and Priyanka Kundu are the same person and all legal documents like Aadhar card, Election Card, School Certificate, PAN Card and Bank Account are relate as same.

बिहार के महामहिम राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान के द्वारा 'ब्रज रत्न अवॉर्ड' से अलंकृत हुईं प्रो. (डॉ.) शशि तिवारी

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

आगरा। होटल जे.पी. पैलेस के कन्वेंशन हॉल में इन्क्रैडिबल इण्डिया फाउण्डेशन द्वारा आयोजित ₹ब्रज रत्न अवॉर्ड₹ का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे बिहार के महामहिम राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने अन्तरराष्ट्रीय ख्याति की जानी-मानी कवयित्री, साहित्यकार, समाजसेवी व आगरा कॉलेज (डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविख्यालय) की पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. (डॉ.) शशि तिवारी को ₹ब्रज रत्न अवॉर्ड₹ से अलंकृत किया।साथ ही उन्हें प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, शील्ड एवं अंगवस्त्र आदि प्रदान किए।

ज्ञात हो कि प्रो. (डॉ.) शशि तिवारी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी समिति, दिल्ली की सचिव (उत्तर प्रदेश प्रभार) हैं।साथ ही शास्त्रीय गायन व कथक नृत्य में पारंगत हैं।उनको संस्कृत के अलावा हिन्दी, ब्रजभाषा, उर्दू, अंग्रेजी व रूसी भाषाओं में महारथ हासिल है।वे बाबू गुलाबराय स्मृति संस्थान, आगरा की अध्यक्ष हैं।उनकी अब तक 30 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।वे पूर्व में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ के द्वारा ₹साहित्य भूषण सम्मान₹ से अलंकृत हो चुकी हैं।उनको अभी तक 2000 से भी अधिक पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।वे समूचे देश के 24 विश्वविद्यालयों की परीक्षक रह चुकी हैं।उनकी कुछ कविताएं जापान के ओसाका विश्वविद्यालय व श्रीलंका के कोलंबो विश्वविद्यालय के विदेशी भाषा विभाग में हिन्दी के पाठ्यक्रम में सम्मिलित हैं।उनकी अनेक कविताओं के अनुवाद अंग्रेजी, ब्रजभाषा, पंजाबी, डोंगरी, सिंधी, संस्कृत, बंगला व कश्मीरी आदि भाषाओं में हो चुके हैं।उनके सम्मान कुवैत, मॉरीशस, लन्दन, अमरीका आदि देशों में भी हो चुके हैं।इसके अलावा वे इंग्लैंड, आयरलैंड, वेल्स, पाकिस्तान, कनाडा आदि देशों की भी साहित्यिक यात्राएं कर चुकी हैं।

कार्यक्रम के अंतर्गत उनके अलावा सुप्रसिद्ध गीतकार सन्तोषानन्द, नवनीत सिकेरा (आई.पी.एस.), ब्रिगेडियर (डॉ.) अमरजीत सिंह, भागवताचार्य मृदुल कान्त शास्त्री, फ़िल्म-टीवी अभिनेता पंकज कालरा, गोसेविका फ्रेडरिक इरिना, गायक हेमन्त ब्रजवासी, नृत्यांगना नीलू शर्मा, फ़िल्म गीतकार स्व. शैलेन्द्र सिंह (मरणोपरान्त), शूटर सोनिया शर्मा, सुप्रसिद्ध न्यूरोसर्जन डॉ. आर.सी.मिश्रा को भी यह प्रतिष्ठित ₹ब्रज रत्न सम्मान₹ प्रदान किया गया।साथ ही प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, शील्ड एवं अंगवस्त्र आदि प्रदान किए गए।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि बिहार के महामहिम राज्यपाल आरिफ खान ने संस्कृत भाषा को देव वाणी बताते हुए कहा कि भगवान श्रीकृष्ण के मुख से बोली गई ब्रज भाषा अत्यंत पावन व प्रेम भरी वाणी है।इस वाणी में बोले गए प्रत्येक शब्द में प्रेम रस व माधुर्य भरा हुआ है।

साथ ही उन्होने कहा कि आज के युवाओं को संस्कृत का ज्ञान, गीता व रामायण जैसे ग्रन्थों का अध्ययन करते हुए अपने उन्नत जीवन का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।

इस अवसर पर इन्क्रैडिबल इण्डिया फ़ाउण्डेशन के चेयरमैन पूरन डाबर, अध्यक्ष मधुसूदन भट्ट, महासचिव अजय शर्मा, लघु उद्योग निगम के चेयरमैन राकेश गर्ग, सलाहकार समिति के चेयरमैन ए.के. सिंह व वाइस चेयरमैन डॉ. सुशील गुप्ता, आयोजन समिति के चेयरमैन किशोर खन्ना व वाइस चेयरमैन राजेश गर्ग, संयोजक ब्रजेश शर्मा, एस.बी.आई. के डी.जी.एम. संजय कुमार सिंह, संस्कृत यूनिवर्सिटी के चांसलर सचिन गुप्ता, डॉ. नरेन्द्र मल्होत्रा, डॉ. जयदीप मल्होत्रा, डॉ. गिरधर शर्मा, डॉ. मुनीश्वर गुप्ता, गोपाल गुप्ता, डॉ. अशोक शर्मा, राम मोहन कपूर, शकुन बंसल आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन तरुण शर्मा ने किया।

कार्यक्रम के अंतर्गत सम्मानित विभूतियों के जीवन पर आधारित लघु फिल्म भी अजय शर्मा व ब्रजेश शर्मा के निर्देशन में प्रदर्शित की गई।जिसकी स्क्रिप्ट प्रख्यात पत्रकार आदर्श नन्दन गुप्त के द्वारा लिखी गई है और संपादन अविनाश वर्मा व सोहेल यासीन ने किया है।

श्री वेंकटेश्वर कॉलेज हॉस्टल में साधु वासीवासिनी मिशन मेडिकल सेंटर के सहयोग से हुआ हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के श्री वेंकटेश्वर कॉलेज हॉस्टल में साधु वासीवासिनी मिशन मेडिकल सेंटर के सहयोग से फ्री हेल्थ चेकअप कैंप आयोजित किया गया।जिसमें फीजिशियन एवं कंसल्टेंट एक्सपर्ट शामिल हुए।इस फ्री हेल्थ चेकअप कैंप में छात्रावास के छात्रों के ब्लड, ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर आदि जैसे अनेक टेस्ट किये गये। कॉलेज के प्राचार्य प्रो. वी. रवि के दिशा निर्देशन में आयोजित इस चेकअप कैंप को सफल बनाने में उप प्राचार्या प्रो. नंदिता नारायणासामी, छात्रावास अधीक्षक प्रो. एम के शुक्ला, डॉ. पी. देवकी के सानिध्य में कार्यक्रम कॉर्डिनेटर एवं हेड मार्केटिंग एंड कॉरपोरेट टाई अप्स सौरभ सिन्हा, डॉ. टीना थॉमस (वरिष्ठ जनरल फिजिशियन), प्रकाश पैथोलॉजी तकनीशियन ने इस हेल्थ चेकअप को सफल बनाने के लिए छात्रों के साथ ऑफिस स्टाफ विकास मिश्र और विनीता ने सहयोग प्रदान किया।इस फ्री हेल्थ चेकअप को सफल बनाने में कॉलेज छात्रावास के छात्रों ने बड़ी संख्या में अपनी उपस्थिति दर्ज की।

महाशिवरात्रि पर समाजसेवीयों का आध्यात्मिक संदेश

"भगवान शिव की कृपा चाहते हैं तो अर्पण से अधिक समर्पण पर दें ध्यान" : समाजसेवी लाला भाई

जिसने अपना मन भगवान को अर्पित कर दिया, वही जीवन का सबसे सफल व्यक्ति है : समाजसेवी राजू शर्मा

षमनुष्य को अपने जीवन की प्रत्येक परिस्थिति को भगवान की इच्छा मानकर स्वीकार करना चाहिए हमारी इच्छा, भगवान की इच्छा में विलीन हो जाए यही सच्चा समर्पण है – जब हम अपने विचारों और कर्मों को भगवान शिव की व्यवस्था के अनुरूप ढाल लेते हैं, तभी जीवन में संतुलन और शांति संभव होती है।"

आगरा, संजय सिंह। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर शहर में श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक ऊर्जा का विशेष वातावरण देखने को मिला। इस अवसर पर समाजसेवी लाला भाई और राजू शर्मा ने आत्मचिंतन और समर्पण का गहरा संदेश दिया।

उन्होंने कहा कि यदि भगवान शिव की कृपा प्राप्त करनी है तो बाहरी अर्पण से अधिक आंतरिक समर्पण पर ध्यान देना आवश्यक है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा, "भगवान किसी वस्तु से उतनी शीघ्र प्रसन्न नहीं होते, जितनी शीघ्र हमारे सच्चे समर्पण भाव से होते हैं। यदि भगवान को अर्पित करने योग्य कोई सर्वोत्तम वस्तु है, तो वह हमारा मन है। जिसने अपना मन भगवान को अर्पित कर दिया, वही जीवन का सबसे सफल व्यक्ति है।"

समाजसेवी लाला भाई ने कहा कि मनुष्य को अपने जीवन की प्रत्येक परिस्थिति को भगवान की इच्छा मानकर स्वीकार करना चाहिए। "हमारी इच्छा, भगवान की इच्छा में विलीन हो जाए यही सच्चा समर्पण है। जब हम अपने विचारों और कर्मों को भगवान शिव की व्यवस्था के अनुरूप ढाल लेते हैं, तभी जीवन में संतुलन और शांति संभव होती है।"

रौद्र और सौम्य दोनों रूपों में कल्याणकारी हैं भगवान शिव

समाजसेवी राजू शर्मा ने कहा कि भगवान शिव लोक और परलोक, दोनों के अधिष्ठाता हैं। वे रुद्र स्वरूप में पालनहार भी हैं और संहारक भी। जब वे रौद्र रूप धारण करते हैं, तो वह सृष्टि के संतुलन हेतु आवश्यक होता है। वहीं उनका सौम्य और श्वेत स्वरूप करुणा, शांति और संरक्षण का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि शास्त्रों में भगवान महादेव के रौद्र और सौम्य दोनों रूपों का विस्तृत वर्णन मिलता है। ये दोनों रूप परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि सृष्टि के संतुलन के पूरक हैं। "रुद्र वह दिव्य शक्ति है, जो जीवन की समस्त चिंताओं और बाधाओं का नाश करती है। जिस प्रकार प्राणवायु के बिना जीवन संभव नहीं, उसी प्रकार सृष्टि के संतुलन के लिए रुद्र रूप का अस्तित्व अनिवार्य है।"

उन्होंने यह भी कहा कि संहार केवल अंत नहीं, बल्कि नए सृजन का आधार है। मृत्यु के पश्चात होने वाला शोक भी उसी लीला का हिस्सा है, जो मनुष्य को जीवन के सत्य से परिचित कराता है। भगवान शिव का प्रत्येक रूप अंततः कल्याणकारी है।

आत्मचिंतन और सेवा का संकल्प लेने का आह्वान

अपने संबोधन के अंत में उन्होंने सभी श्रद्धालुओं से महाशिवरात्रि के अवसर पर आत्मचिंतन, संयम और सेवा का संकल्प लेने का आह्वान किया। उन्होंने प्रार्थना की कि भगवान शिव सभी के जीवन में सुख, शांति और समृद्धि प्रदान करें।

उन्होंने कहा, "बाबा महाकाल का आशीर्वाद आप और आपके परिवार पर सदैव बना रहे। आप सभी सुखी, स्वस्थ और प्रसन्न रहें इसी कामना के साथ महाशिवरात्रि का यह पावन पर्व मनाएं।"

हल्द्वानी रामलीला मैदान स्थित डीके पार्क में पुलवामा के शहीदों को पुष्पांजलि

परिवहन विशेष न्यूज

एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू मार्गदर्शक रोहतास प्रजापति के नेतृत्व में संस्था के माध्यम से 14 फरवरी 2019 को जम्मू कश्मीर के पुलवामा में पाकिस्तानी आतंकी हमले में भारतीय सेना के शहीद जवानों की सातवीं पुण्यतिथि पर संस्था पदाधिकारियों ने हल्द्वानी रामलीला मैदान स्थित डीके पार्क में पुलवामा के शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी

इस दौरान एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था मार्गदर्शक मीना जोशी सदस्य शांति रावत ने संयुक्त रूप से कहा की जम्मू कश्मीर के पुलवामा में पाकिस्तानी आतंकी हमले में शहीद भारतीय सेना के जवानों के बलिदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है क्योंकि भारतीय सेना के जवान अपनी जान की परवाह न करते हुए भारत एवं भारतवासियों को हमेशा सुरक्षित रखते है क्योंकि भारतीय सेना के जवान हजारों फुट की ऊंचाई पर अपनी हड्डियाँ गलाकर दुश्मनों की हर हरकत पर पैनी निगाह रखते हुए दुश्मनों को मुंहतोड़ जवाब देकर दुश्मनों को संभलने तक का मौका भी नहीं देते है तब जाकर हम अपने घरों में सुरक्षित रहते है और तब हम अपने सारे त्योहारों को हर्ष उल्लास पूरी खुशी के साथ भयमुक्त होकर मना पाते है इसलिए भारतीय सेना के शहीद जवानों के बलिदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता

इसीलिए एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था पुलवामा के शहीदों की सातवीं पुण्यतिथि पर शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि देकर उनके प्रति श्रद्धा भाव प्रकट कर उनके बलिदान को हमेशा याद रखती है और यह हम सभी भारतीयों का परम कर्तव्य है

इस दौरान पुलवामा के शहीदों को श्रद्धांजलि देने में संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू संरक्षक रुपेन्द्र नागर सचिव नन्दकिशोर आर्या मार्गदर्शक मीना जोशी तरुण सक्सेना वीरेंद्र जायसवाल पीयूष शर्मा राजेश साहू रोहतास प्रजापति सुनीता तिवारी शांति रावत ममता खत्री रेनू कांडपाल निशा वैला योगिता बनोला लीला भंडारी हेमा कार्की मोनिका आर्या तारा टकवाल शर्मिला मित्रा मीरा श्रोत्रिय कुसुम बोरा तारा पाण्डेय विजय लता योगेश कश्यप नन्दकिशोर आर्या रवि गुप्ता विजय गोस्वामी आयुष साहू यश गुप्ता सूरज मिस्त्री संदीप यादव संजीत सिन्हा वंश गुप्ता लक्ष्मी नारायण जानकी कश्यप एकता पाण्डेय माही बिष्ट मुकेश साहू दीपक कुमार अमित गोस्वामी सूरज कुम्हार मुकेश कुमार आदि लोग उपस्थित रहे।

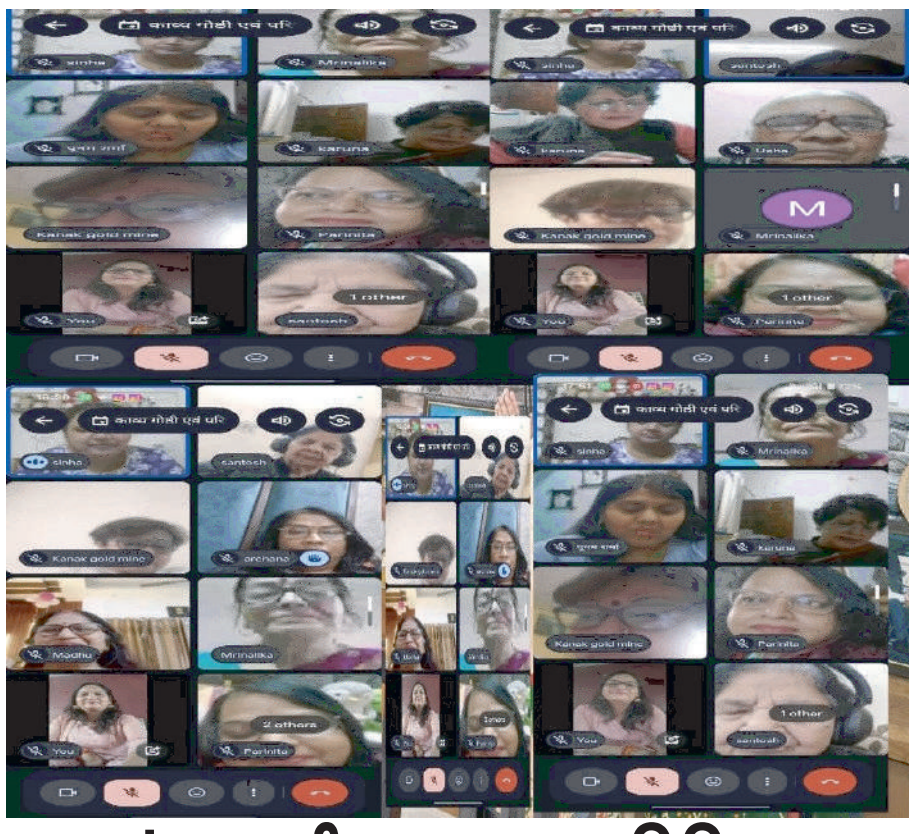

अंतरराष्ट्रीय करुणा साहित्यिक संस्थान का डिजिटल कार्यक्रम सम्पन्न

परिवहन विशेष न्यूज

अंतरराष्ट्रीय करुणा साहित्यिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थान के तत्वावधान में ऑनलाइन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का आरंभ सरस्वती वन्दना से किया गया।मधु स्वामी ने किया।इस डिजिटल कार्यक्रम की कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ कनक लता तिवारी जी (मुम्बई) रहीं। मुख्य अतिथि डॉ संतोष खन्ना (दिल्ली) एवं विशिष्ट अतिथि डॉ मृणालिका ओझा (छत्तीसगढ़) और डॉ ऊषा सक्सेना (मुम्बई) रहीं। कार्यक्रम का सानदार संचालन जागृति सिन्हा (मुम्बई) ने किया।

साहित्य के स्तम्भ महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की जयंती विशेष, महाशिवरात्रि व वसंतोत्सव के आगमन का विषय रहा। सर्व प्रथम पूनम शर्मा (गोरखपुर) ने अपने दोहा - कहता अनुभव कुछ यहां, जगत कहे कुछ और।

खुली आंख रखना सदा, करना सब पर गौर।।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ संतोष खन्ना ने -मेरी सबसे दोस्ती, मेरा सब से प्यार।

अपने प्यारे सबमें भर भर बांटूं प्यार।शिव हैं कण-कण शिव हैं जन-जन धरा और अंबर सत्यम् शिवम् सुंदरम₹।डॉ कनक लता तिवारी ने बहती रहो गंगा, बहती रहो गंगा अविचल मीठी -सी मृदु धार लिए। मधु स्वामी ने ₹हे शिव शंकर भोले तेरे हाथ में कश्ती है, मुझे पार लगा देना, मेरी आंखें बरसती हैं।₹डॉ मृणालिका ओझा ने छत्तीसगढ़ी में गायन प्रस्तुति देकर सभी का मन मोह लिया-₹जब तोर सुरता, आथे संगी, मन ह महकथे तन है दहकते।₹ जागृति सिन्हा -हेभोले मेरे शिव भण्डारी हे विशेश्वर महिमा तुम्हारी, मैं मूरख मुझे ध्यान नहीं है, सच और झूठ का ज्ञान नहीं है।₹परिणिता सिन्हा (गुरुग्राम) चुंबन है अति प्रासंगिक लेकिन, उस पर हो सीमा नैतिक।चुंबन दिवस का कीजै विस्तार लेकिन नहीं जाए वो मर्यादा की सीमा से पार।₹

सभी ने अपने प्रस्तुति से कार्यक्रम को अनोखा और अर्थपूर्ण बना दिया। अंत में संस्था की संस्थापिका एवं अध्यक्ष डॉ आर्यावर्ती सरोज ₹आर्या₹ ने धन्यवाद ज्ञापित कर कार्यक्रम को सम्पूर्ण किया।

हेनले पासपोर्ट इंडेक्स 2026 ज़ारी-भारत की 10 पायदान की छलांग-दो देशों द्वारा वीजा-फ्री सुविधा समाप्त- तारीफ़ आलोचना और वैश्विक संदर्भ में व्यापक विश्लेषण

भारत ने 2006 में 71वीं सर्वोच्च रैंक हासिल की थी अब आगे 2027 में उससे बेहतर प्रदर्शन करने की नीति निर्धारकों से अपेक्षा

हेनले पासपोर्ट इंडेक्स 2026 में भारत की 10 पायदान की छलांग प्रशंसनीय, कूटनीतिक सक्रियता का संकेत परंतु दो देशों द्वारा वीजा-फ्री सुविधा समाप्त किया जाना चेतावनी भी है –एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक गतिशीलता के इस दौर में पासपोर्ट केवल यात्रा दस्तावेज़ नहीं, बल्कि किसी राष्ट्र की कूटनीतिक विश्वसनीयता, आर्थिक ताकत और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा का सूचक बन चुका है।वर्ष 2026 के हेनली एंड पार्टनर्स द्वारा जारी हेनली पासपोर्ट इंडेक्स में भारत ने 10 पायदान की उल्लेखनीय छलांग लगाते हुए 85वें स्थान से 75वें स्थान पर पहुंचकर एक सकारात्मक संदेश दिया है।भारतीय पासपोर्ट धारक अब 56 देशों में वीजा-फ्री या वीजा- ऑन-अराइवल सुविधा के साथ यात्रा कर सकते हैं।लेकिन इसी के साथ यह तथ्य भी सामने आया कि दो देशों ने भारतीयों के लिए वीजा-फ्री सुविधा समाप्त कर दी। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि ऐसे में स्वाभाविक प्रश्न उठता है क़ि दो देश घटे तो रैंकिंग कैसे सुधरी? और 2006 में हासिल 71वीं सर्वोच्च रैंक अब तक क्यों नहीं मिल पाई? इन दोनों पहलुओं को प्रशंसा और आलोचना, दोनों दृष्टिकोणों से समझना आवश्यक है।जहां एक और 10 रैंक की छलांग है तो दूसरी ओर ईरानःनवंबर 2025 में वीजा-फ्री सुविधा बंद कर दी गई। वजह थी धोखाधड़ी और ट्रैफिकिंग के मामले, जिनमें भारतीय नागरिकों को फर्जी नौकरी ऑफर देकर ईरान बुलाया गया और फिर किडनैप किया गया।बोलीवियाः पहले वीजा-ऑन-अराइवल मिलता था, लेकिन 2026 से ई-वीजा लागू कर दिया गया। अब पहले से ऑनलाइन आवेदन करना जरूरी है, इसलिए यह वीजा- फ्री कैटेगरी में बिलकुल ही नहीं आता।

साथियों बात अगर हम हेनले पासपोर्ट इंडेक्स को गहराई से समझने की करें तो, विश्व के लगभग 200 देशों के पासपोर्ट की ताकत को इस आधार पर रैंक करता है कि उनके नागरिक कितने देशों में बिना पूर्व वीजा के प्रवेश कर सकते हैं। इस इंडेक्स के निर्माण में इंटरनेशनल एयर ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन के डेटा का उपयोग किया जाता है, जिसे हेनले की रिसर्च टीम विश्लेषित करती है।रैंक जितनी ऊंची, पासपोर्ट उतना शक्तिशाली। इस पैमाने पर देखें तो भारत का 75 वें स्थान पर पहुंचना एक उपलब्धि है, क्योंकि यह दर्शाता है कि भारतीय नागरिकों की वैश्विक स्वीकार्यता और भारत की कूटनीतिक सक्रियता में सुधार हुआ है।

साथियों बात अगर हम दो देश घटे, फिर भी रैंकिंग सुधरी कैसे? इसको समझने की करें तो, यह विरोधाभास प्रतीत हो सकता है कि वीजा-फ्री देशों की संख्या में कमी के बावजूद भारत की रैंकिंग बेहतर हुई।इसका उत्तर इंडेक्स की सापेक्ष प्रकृति में छिपा है।हेनले इंडेक्स पूर्णांक नहीं, बल्कि तुलनात्मक रैंकिंग है। यदि अन्य देशों की स्थिति अधिक तेजी से गिरी हो या कुछ देशों की वीजा सुविधाओं में कटौती हुई हो, तो भारत भले ही सीमित वृद्धि करे, उसकी रैंक ऊपर जा सकती है। दूसरे शब्दों में, रैंकिंग केवल अपने प्रदर्शन पर नहीं, बल्कि दूसरों के प्रदर्शन पर भी निर्भर करती है।यदि कुछ अफ्रीकी एशियाई या लैटिन अमेरिकी देशों की वीजा-फ्री पहुंच कम हुई हो, तो भारत तुलनात्मक रूप से ऊपर आ सकता है।तारीफ़ के दृष्टिकोण से देखें तो यह संकेत है कि भारत ने वैश्विक मंच पर संतुलित कूटनीति अपनाई है। अफ्रीका, दक्षिण-पूर्व एशिया और कैरिबियन देशों के साथ भारत के संबंधों में सुधार हुआ है। जिन देशों में भारतीय पासपोर्ट धारकों को वीजा-फ्री सुविधा मिलती है, उनमें अंगोला बर्बाड़ोस, भूटान, फिजी, मलेशिया मौर्याशिस, नेपाल, थाईलैंड और त्रिनिदाद and तोबागो जैसे देश शामिल हैं। यह सूची दर्शाती है कि भारत की उपस्थिति उभरते और विकासशील देशों में मजबूत हुई है।आलोचना के दृष्टिकोण से देखें तो 56 देशों की वीजा-फ्री पहुंच अभी भी वैश्विक औसत से कम है।शीर्ष देशों की तुलना करें तो स्थिति स्पष्ट होती है। इंडेक्स में प्रथम स्थान पर सिंगापुर है, जिसके नागरिक 192 गंतव्यों तक वीजा-फ्री पहुंच रखते हैं। दूसरे स्थान पर जापान और साउथ कोरिया हैं, जिनकी पहुंच 187 देशों तक है।तीसरे स्थान पर स्वीडन और यूनाइटेड अरब अमीरात हैं। चौथे स्थान पर फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्पेन और स्विट्ज़रलैंड संयुक्त रूप से हैं। पांचवें स्थान पर ऑस्ट्रेया, ग्रीस माल्टा और पोर्टगाल हैं। शीर्ष 10 में ऑस्ट्रेलिया यूनाइटेड किंगडम, कनाडा और न्यूजीलैड भी शामिल हैं। तुलना से स्पष्ट है कि भारत अभी भी शीर्ष देशों से काफी पीछे है।

साथियों बात अगर हम दो देशों द्वारा वीजा-फ्री सुविधा समाप्त, यह चिंता का विषय इसको समझने की करें तो रिपोर्ट के अनुसार दो देशों ने भारतीयों के लिए वीजा-फ्री सुविधा समाप्त की, कथित तौर पर कुछ भारतीय नागरिकों की गैरकानूनी गतिविधियों में संलिप्तता के कारण। यह बिंदु आलोचना का आधार बनता है। किसी भी देश की यात्रा स्वतंत्रता केवल सरकार की कूटनीति पर निर्भर नहीं, बल्कि उसके नागरिकों के आचरण पर भी निर्भर करती है, यदि अवैध आव्रजन, ओवरस्टे, या स्थानीय कानूनों का उल्लंघन बढ़ता है, तो संबंधित देश वीजा नियम सख्त कर सकते हैं। इस संदर्भ में भारत को न केवल कूटनीतिक स्तर पर, बल्कि प्रवासी प्रबंधन और जागरूकता स्तर पर भी सुधार की आवश्यकता है।

तारीफ़ के दृष्टिकोण से यह कहा जा सकता है कि दो देशों की कटौती के बावजूद समग्र स्कोर स्थिर या बेहतर रहा, जो दर्शाता है कि अन्य देशों के साथ संबंधों में सुधार ने इस नुकसान की भरपाई की। भारत की 'एक्ट ईस्ट', 'नेबरहुड फर्स्ट' और अफ्रीका-आउटरीच नीतियों ने यात्रा सहयोग को बढ़ावा दिया है।

साथियों बात अगर हम 2006 की सर्वोच्च रैंक क्यों नहीं दोहराई गई? इसको समझने की करें तो, भारत ने 2006 में 71वीं सर्वोच्च रैंक हासिल की थी।तब वैश्विक भू- राजनीतिक परिदृश्य अलग था। 9/11 के बाद सुरक्षा कड़े हुए थे, परंतु डिजिटल निगरानी और आव्रजन नियंत्रण उतने व्यापक नहीं थे जितने आज हैं। पिछले दो दशकों में अवैध आव्रजन, शरणार्थी संकट, आतंकवाद और मानव तस्करी जैसी चुनौतियों के कारण कई देशों ने वीजा नियम कड़े किए हैं।भारत जैसे जनसंख्या-समृद्ध देश के नागरिकों पर अतिरिक्त जांच लागू होना स्वाभाविक हो गया है।

साथियों बातें कर हम आलोचना और तारीफ के दृष्टिकोण से बात को समझने की करें तो भारत की आर्थिक वृद्धि के बावजूद उच्च आय वाले देशों विशेषकर यूरोप और उत्तरी अमेरिका, के साथ वीजा उदारीकरण सीमित रहा है।शेंगेन क्षेत्र, अमेरिका या कनाडा में वीजा प्रक्रिया अभी भी जटिल है। इससे पासपोर्ट की रैंक पर सीधा प्रभाव पड़ता है।तारीफ़ के दृष्टिकोण से देखें तो 2006 के बाद वैश्विक प्रतिस्पर्धा बढ़ी है। कई छोटे देशों जैसे यूएई ने आक्रामक कूटनीति से अपनी रैंक तेजी से सुधारी है।ऐसे में भारत का स्थिर प्रगति पथ भी महत्वपूर्ण है। 75वीं रैंक यह संकेत देती है कि भारत गिरावट की लंबी अवधि से बाहर निकल रहा है।

साथियों बात अगर हम क्षेत्रीय तुलना और दक्षिण एशिया का संदर्भ के एंगल से समझने की करें तो इंडेक्स में पाकिस्तान 97 वें स्थान पर है, जो पाकिस्तान की वैश्विक गतिशीलता की सीमाओं को दर्शाता है। वह फ़लेस्तिन (91), नार्थ कोरिया (94) और सोमालिया (96) से भी नीचे है। दक्षिण एशिया में भारत की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर है, लेकिन वैश्विक औसत से अभी भी पीछे है। यह क्षेत्रीय स्थिरता, आर्थिक अवसरों और प्रवासन प्रवृत्तियों से जुड़ा मुद्दा है।पासपोर्ट की अवधारणा और राष्ट्रीय प्रतिष्ठा-पासपोर्ट केवल पहचान पत्र नहीं; यह राष्ट्र की साख का प्रतीक है। जब कोई देश अपने नागरिकों को बिना वीजा प्रवेश देता है, तो वह उस देश की सुरक्षा व्यवस्था, आर्थिक स्थिरता और नागरिकों की विश्वसनीयता पर भरोसा दर्शाता है। इस दृष्टि से भारत की रैंक में सुधार उसकी वैश्विक छवि में क्रमिक सकारात्मक बदलाव को दर्शाता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि उपलब्धि भी, चुनौती भी, हेनले पासपोर्ट इंडेक्स 2026 में भारत की 10 पायदान की छलांग प्रशंसनीय है। यह कूटनीतिक सक्रियता, वैश्विक साझेदारियों और आर्थिक स्थिरता का संकेत है। दो देशों द्वारा वीजा-फ्री सुविधा समाप्त किया जाना चेतावनी भी है कि नागरिक आचरण और आव्रजन प्रबंधन पर सतत ध्यान आवश्यक है।

कंक्रीट स्ट्रक्चर की ड्यूरेबिलिटी बढ़ाने और कंस्ट्रक्शन के खतरों से निपटने के लिए कंस्ट्रक्शन केमिकल्स का इस्तेमाल-

--संजय गोयनका

हम कहते हैं कि कंक्रीट तब तक टिकाऊ होता है जब तक वह अपनी तय लाइफ टाइम में किसी भी तरह की गंभीर और खराब कंडीशन के संपर्क में आने पर भी स्थिर और काम करने लायक रहता है। हाल के समय में, कंक्रीट में लिक्विड/पाउडर के रूप में कंस्ट्रक्शन केमिकल्स/एडिटिव्स का इस्तेमाल कंक्रीट की टिकाऊपन बढ़ाने और अच्छी क्वालिटी के मोटे/बारीक एग्रीगेट (IS: 383 के अनुसार ग्रेडिंग के मामले में) की कमी और गलत कंक्रीट मिक्स डिज़ाइन जैसी कई कमियों को दूर करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

कंक्रीट को, इतने समय से, सबसे ड्यूरेबल मटीरियल माना जाता था, जो अपनी मजबूती और सर्विस लाइफ के मामले में अपना काम करता रहा। दूसरे शब्दों में, इसे किसी मेंटेनेंस की ज़रूरत नहीं थी।

लेकिन जब कंक्रीट किसी गंभीर, आक्रामक माहौल जैसे केमिकल अटैक, कार्बोनेशन, जंग, कटाव वगैरह के संपर्क में आता है, तो हमेशा कुछ खराबी आती है।

यह खराबी सीधे तौर पर ड्यूरेबिलिटी से जुड़ी होती है, जो सही डिज़ाइन मिक्स के अनुसार कंक्रीट बनाने के लिए की गई कोशिशों और अपनाए गए क्वालिटी कंट्रोल उपायों पर निर्भर करती है।

आम तौर पर कंक्रीट की ड्यूरेबिलिटी को ऐसे बताया जा सकता है, कि इसे उन सभी हालातों का सामना करना चाहिए जिनके लिए इसे डिज़ाइन किया गया है, भले ही इसे किसी भी गंभीर हालात का सामना करना पड़े।

हम कहते हैं कि कंक्रीट तब तक टिकाऊ होता है जब तक वह अपनी तय लाइफ टाइम में किसी भी तरह की गंभीर और खराब कंडीशन के संपर्क में आने पर भी स्थिर और काम करने लायक रहता है।

हाल के समय में, कंक्रीट में लिक्विड/पाउडर के रूप में कंस्ट्रक्शन केमिकल्स/एडिटिव्स का इस्तेमाल कंक्रीट की टिकाऊपन बढ़ाने और अच्छी क्वालिटी के मोटे/बारीक एग्रीगेट (IS: 383 के अनुसार ग्रेडिंग के मामले में) की कमी और गलत कंक्रीट मिक्स डिज़ाइन जैसी कई कमियों को दूर करने में अहम भूमिका निभा रहा है। कंक्रीट में जंग, क्रैकिंग, टूटना, कटाव और ताकत में कमी जैसी खराबी को दूर करने के लिए, कंक्रीट के टिकाऊपन को बनाए रखने के लिए अलग-अलग कंस्ट्रक्शन केमिकल्स के इस्तेमाल ने बहुत मदद की है।

1) सलाइन/खराब माहौल में जंग से बचाने के लिए कंक्रीट में जंग रोकने वाले का इस्तेमाल।

कंक्रीट में स्टील का जंग लगना एक मुश्किल बात है। कंक्रीट में जंग लगने की प्रक्रिया पर असर डालने वाले कई फैक्टर हैं। कोरोजन के बाद रीइन्फोर्समेंट के वॉल्यूम में बढ़ोतरी, रीइन्फोर्समेंट के क्रॉस सेक्शन एरिया में कमी के अलावा स्ट्रक्चर पर पड़ने वाले बुरे असर में से एक है। कोरोजन को कंक्रीट स्ट्रक्चर के कमज़ोर होने का एक अहम कारण पाया गया है। कंक्रीट स्ट्रक्चर में कोरोजन के प्रोसेस को रोकने के लिए भारत और विदेशों में इस विषय पर बहुत रिसर्च की गई है। कोरोजन से बचने या कम करने के तरीकों पर बात करने से पहले, कंक्रीट में रीइन्फोर्समेंट के कोरोजन के प्रोसेस की कुछ बुनियादी बातों को समझना ज़्यादा सही होगा। कोरोजन का प्रोसेस शुरू करने के लिए पानी और ऑक्सीजन का अंदर जाना ज़रूरी है। कंक्रीट में सीमेंट के हाइड्रेशन प्रोसेस के कारण CA (OH) 2 की ज़्यादा मात्रा, कोरोजन को रोकने के लिए रीइन्फोर्समेंट के आसपास एक पैसिव माहौल बनाती है। OPC वाले नॉर्मल कंक्रीट की PH वैल्यू 13 से 17 की रेंज में रहती है। इस PH वैल्यू को कम करने के लिए कंक्रीट में कोई भी केमिकल रिएक्शन, कंक्रीट के माइक्रोस्ट्रक्चर को दूसरे नुकसान के अलावा, रीइन्फोर्समेंट के कोरोजन शुरू होने का खतरा पैदा करता है। आम तौर पर, कोरोजन इनहिबिटर (CI) लिक्विड रूप में एक एडमिक्सचर होता है, जिसे जब कंक्रीट में मिलाया जाता है या कंक्रीट की सतह पर लगाया जाता है, तो यह कोरोजन प्रोसेस को रोकता है। यानी कंक्रीट में इस्तेमाल होने वाले रीइन्फोर्समेंट को कोरोजन से बचाता है। कंक्रीट में CI मिलाने पर, इसकी भाप दरारों, कंक्रीट के हनीकॉम्ब स्ट्रक्चर, कंक्रीट में मिलाए गए शुद्ध पानी के घोल से अंदर चली जाती है और रीइन्फोर्समेंट के चारों ओर एक पैसिव लेयर बनाती है, और इनहिबिशन के लिए एनोडिक और कैथोडिक दोनों जगहों पर सील कर देती है। यह सिस्टम की माइग्रेटरी बाइपोलर मैकेनिज्म प्रॉपर्टी के कारण होता है।

2) ड्यूरेबिलिटी बढ़ाने के लिए एडमिक्सचर का इस्तेमाल

एडमिक्सचर पानी, एग्रीगेट्स या हाइड्रोलिक सीमेंट के अलावा एक ऐसा मटीरियल है जिसका इस्तेमाल कंक्रीट में एक इंग्रीडिएंट के तौर पर किया जाता है। प्लास्टिक और हार्ड कंक्रीट की प्रॉपर्टीज़ को बदलने के लिए केमिकल एडमिक्सचर

मिलाए जाते हैं। यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि ज़्यादा मज़बूत कंक्रीट को कम पानी और सीमेंट रेश्यो में काम करने लायक बनाने और उसकी डिज़ाइन की गई ड्यूरेबिलिटी बनाए रखने के लिए, आजकल सुपर-प्लास्टिसाइज़र का इस्तेमाल ज़रूरी हो गया है। यह पानी की मात्रा बढ़ाए बिना काम करने की क्षमता बढ़ाता है। काम करने की क्षमता पर असर डाले बिना पानी की मात्रा कम करता है, इसलिए W/C रेश्यो में कमी से मज़बूती बढ़ती है। पानी की मात्रा कम होने और सीमेंट की काम करने की क्षमता और W/C रेश्यो वही रहता है, जिससे सीमेंट की लागत बचती है। यह स्लंप की ज़रूरत के हिसाब से कंक्रीट के सेटिंग टाइम को धीमा करता है, काम करने की क्षमता के नुकसान की दर को कम करता है, पंप-क्षमता में सुधार करता है, कंक्रीट को इम्परवियस बनाता है और कंक्रीट की ड्यूरेबिलिटी बढ़ाता है।

अलग-अलग कैटेगरी के एडमिक्सर IS: 9103 और ASTM C 494 (अलग-अलग तरह के) के हिसाब से बनाए जाते हैं।

3) अलग-अलग तरह के कंक्रीटिंग एड का इस्तेमाल

कंक्रीट स्ट्रक्चर की ड्यूरेबिलिटी बढ़ाने के लिए अलग-अलग तरह के कंक्रीटिंग एड का इस्तेमाल बहुत ज़रूरी होता है। शटर रिलीजिंग एजेंट, क्योरिंग कंपाउंड, बॉन्डिंग एजेंट (लेटेक्स और एपॉक्सी बेस) और माइक्रोसिलिका जैसे कंक्रीटिंग एड कंक्रीट को हर तरह से ड्यूरेबल बनाते हैं, चाहे इसका इस्तेमाल कहीं भी किया जाए, चाहे कंक्रीट में बाहर से किया जाए या सीधे ग्रीन होने पर।

कंक्रीट की चिकनी सतह पाने के लिए, किसी भी तरह की शटरिंग पर मोल्ड / शटर रिलीज एजेंट का इस्तेमाल करने की सलाह दी जाती है। ऐसे केमिकल का इस्तेमाल हमें चिकनी कंक्रीट सतह पाने में मदद करता है, जिससे हनीकॉम्ब और पोरोसिटी खत्म हो जाती है, जिससे कंक्रीट स्ट्रक्चर की ड्यूरेबिलिटी बढ़ती है और कंक्रीट के पूरे सर्विस पीरियड के दौरान खराब होने से बचता है।

'कंक्रीट की क्योरिंग' शब्द फिर से बहुत ज़रूरी है, और दूर-दराज के इलाकों में होने वाले प्रोजेक्ट के लिए क्योरिंग में एक्स्ट्रा खर्च आता है, जहाँ काफ़ी पानी नहीं मिलता। ऐसी स्थिति में क्योरिंग कंपाउंड का इस्तेमाल फायदेमंद हो जाता है। कंक्रीट की सतह पर ब्रश या स्प्रे से क्योरिंग कंपाउंड की कोटिंग करने से, जब कंक्रीट हरा हो, तो कंक्रीट में इस्तेमाल किया गया पानी कंक्रीट के अंदर फंस जाता है, और कोटिंग की वजह से फंसा हुआ पानी भाप नहीं बन पाता, और क्योरिंग प्रोसेस पूरा हो जाता है और कंक्रीट बिना किसी एक्स्ट्रा पानी के बाहरी इस्तेमाल के अपनी डिज़ाइन स्ट्रेंथ हासिल कर लेता है। पुराने और नए कंक्रीट के बीच एक जैसी बॉन्डिंग पाने और ठंडे जोड़ों से बचने के लिए, ताकि अगर भविष्य में स्ट्रक्चरल फेलियर हो, तो लेटेक्स और एपॉक्सी बेस्ड बॉन्डिंग मटीरियल का इस्तेमाल करना ज़रूरी है। कंक्रीट की ड्यूरेबिलिटी को और बढ़ाने के लिए, M-40 से ऊपर के कंक्रीट ग्रेड के लिए, सीमेंट की जगह 5% -10% तक माइक्रोसिलिका का इस्तेमाल किया जा सकता है। सीमेंट की तुलना में ज़्यादा सरफेस एरिया और इसके पार्टिकल साइज़ के महीन होने की वजह से, माइक्रो सिलिका का इस्तेमाल कंक्रीट को और भी घना बनाता है, जिससे कंप्रेसिव स्ट्रेंथ बढ़ती है, और क्योंकि हाई ग्रेड के कंक्रीट के लिए डिज़ाइन मिक्स में सीमेंट कंटेंट को माइक्रो-सिलिका से बदला जा सकता है, इसलिए सीमेंट के ज़्यादा कंटेंट से हाइड्रेशन की गर्मी कम हो सकती है, जिससे थर्मल क्रैक नहीं बनते और कंक्रीट हर तरह से टिकाऊ और इम्परवियस बनता है।

4) कंक्रीट पर जंग लगने से बचाने वाली प्रोटेक्टिव कोटिंग का इस्तेमाल और कंक्रीट स्ट्रक्चर की टिकाऊपन बढ़ाना।

पुल, डैम, सड़क, एयरपोर्ट, मेट्रो रेल फ्लाईओवर और हाई राइज़ बिल्डिंग बनाने में कंक्रीट का बहुत ज़्यादा इस्तेमाल होता है। ऐसे प्रोजेक्ट के लिए भारी डिज़ाइन वाले RCC स्ट्रक्चर को उनके सर्विस पीरियड के दौरान वेदरिंग के असर से जंग लगने से बचाने की ज़रूरत होती है।

अलग-अलग तरह के पॉलीमर, पॉलीयूरेथेन और इन कंक्रीट स्ट्रक्चर को खारे, एसिडिक और गंभीर कोरोसिव एटमोस्फेरिक कंडीशन में वेदरिंग एक्शन के कारण होने वाले कोरोजन से बचाने के लिए एपॉक्सी बेस्ड प्रोटेक्टिव कोटिंग्स उपलब्ध हैं। कंक्रीट में लगे रीइन्फोर्समेंट में सूजन के रूप में कोरोजन के कारण, कंक्रीट स्ट्रक्चर में दरारें आ जाती हैं और समय के साथ, कंक्रीट उखड़ जाती है, जिससे स्ट्रक्चर कमजोर हो जाता है। स्ट्रक्चर को प्रोटेक्टिव कोटिंग देकर कोरोजन का असर कम किया जाता है, चाहे वह किसी ऊंची बिल्डिंग की छत का स्लैब हो, ओवरहेड कंक्रीट वॉटर टैंक का अंदरूनी हिस्सा हो, ब्रिज डेक हो, ब्रिज के पियर हों, कंक्रीट डैम हों। एयरपोर्ट रनवे वगैरह वगैरह।

:4:-------

5) रेडी मिक्स ग्राउट्स और रिपेयर मोर्टार का इस्तेमाल

कुछ स्ट्रक्चर के लिए नॉर्मल कंक्रीटिंग उनके पतले डिज़ाइन, या घनी जगह पर रीइन्फोर्समेंट या ज़्यादा ऊंचाई पर प्लेसमेंट में दिक्कतों के कारण नहीं की जा सकती। कंक्रीट के विकल्प के तौर पर बजरी के साथ हाई-स्ट्रेंथ रेडी-मिक्स ग्राउट (रेडी मिक्स) का इस्तेमाल करें। ज़्यादा कम्प्रेसिव स्ट्रेंथ की वजह से इसका काम कंक्रीट जैसा ही होता है। आजकल पुराने खराब कंक्रीट स्ट्रक्चर को जैकेटिंग प्रोसेस से माइक्रो कंक्रीट का इस्तेमाल करके रिपेयर/ठीक किया जाता है, जिससे स्ट्रक्चर की ड्यूरेबिलिटी वैसी ही हो जाती है जैसी खराब होने से पहले थी।

6) हाइडल प्रोजेक्ट में कंस्ट्रक्शन के लिए शॉटक्रीट एड्स का इस्तेमाल।

हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट्स में HRT और TRT, डायवर्जन टनल, सर्ज शाफ्ट, प्रेशर शाफ्ट, अंडरग्राउंड पावर हाउस जैसे भारी कंक्रीट स्ट्रक्चर बनाए जाते हैं, जिसमें चट्टान की टनलिंग/खुदाई/बोरिंग के बाद भारी मात्रा में कंक्रीट डालना शामिल है। कमज़ोर चट्टान की परतों को स्थिर करने और टनल को गिरने से बचाने के लिए, रॉक बोल्ट को रेज़िन कैप्सूल का इस्तेमाल करके चट्टान की परतों में 4, 6, और 9 मीटर की अलग-अलग लंबाई के छेद करके एंकर किया जाता है। इस टनल की सतह को आजकल सूखी या गीली शॉटक्रीटिंग करके और स्थिर किया जाता है, जिसमें अल्कली सिलिका रिएक्शन को रोकने के लिए पाउडर और लिक्विड अल्कली-फ्री एक्सेलरेटर का इस्तेमाल किया जाता है। आजकल शॉटक्रीट की ड्यूरेबिलिटी बढ़ाने के लिए अल्कली फ्री एक्सेलरेटर का इस्तेमाल शॉटक्रीटिंग के लिए किया जाता है। एक बार में लगभग 100MM से 150MM मोटी शॉटक्रीट लेयर लगाई जाती है और शॉटक्रीट का सेटिंग टाइम कम किया जाता है ताकि रिबाउंड लॉस का परसेंटेज कम हो जाए। आखिर में, टनल की लाइनिंग कंक्रीट करने के लिए एडमिक्सचर का इस्तेमाल किया जाता है।

लेखक हिंडकॉन केमिकल्स लिमिटेड कोलकाता के CMD हैं।

लोकतंत्र की जीत के निहितार्थ भारत बांग्लादेश संबंध के नवीकरण का वक्त

डॉ घनश्याम बादल

बांग्लादेश के चीफ एडवाइजर के रूप में मोहम्मद यूनुस और कुछ खास कर पाए हों या नहीं लेकिन एक काम तो उन्होंने कर ही दिया है कि बांग्लादेश को राजनीतिक उहापोह की स्थिति से निकालकर स्पष्ट जनादेश दिलवा दिया है।

12 फरवरी को हुए चुनावों के नतीजे सामने हैं और बांग्लादेश की जनता ने परिपक्व तरीके से न केवल चुनाव में भारी संख्या में मतदान किया अपितु अपने देश को कट्टरपंथी राजनीतिक विचारधारा के हाथों में जाने से भी बचा लिया है।

बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी ने स्वर्गीय खालिदा जिया और जियाउर रहमान के बेटे 60 वर्षीय तारिक रहमान के नेतृत्व में 299 में से 213 सीट जीतकर वहां लगभग दो तिहाई बहुमत प्राप्त कर लिया है जबकि उसके प्रतिद्वंद्वी जमात ए इस्लामी को 74 सीट ही मिलीं हैं। आश्चर्यजनक रूप से छात्र आंदोलन के चेहरे बनाकर शेख हसीना को सत्ता से बाहर करने वाले नाहिद इस्लाम की पार्टी एनसीपी को केवल दो सीट ही मिल पाई हैं और इसकी मुख्य वजह यही दिखती है कि उनका जमात ए इस्लामी के साथ गठबंधन का रणनीतिक निर्णय ग़लत रहा।

बांग्लादेश का ताज़ा चुनाव कोई सामान्य सत्ता-परिवर्तन नहीं बल्कि एक पूरे राजनीतिक युग के अंत और नए शक्ति-संतुलन की शुरुआत समझ जाना चाहिए। यह चुनाव केवल संसद की सीटों का गणित नहीं है बल्कि उस सामाजिक-राजनीतिक बेचैनी की परिणिति है जो वर्षों से सड़कों, विश्वविद्यालयों, श्रमिक बस्तियों और सीमावर्ती इलाकों में सुलग रही थी।

इस जनादेश ने साफ संकेत दिया है कि देश अब पुराने ढर्रे की राजनीति से आगे निकलना चाहता है लेकिन यह रास्ता लोकतांत्रिक स्थिरता की ओर जाएगा या नए असंतुलन की ओर, यह अभी भी एक अनुत्तरित ज्वलंत सवाल है।

आंकड़ों की बात करें तो तस्वीर साफ है। संसद में स्पष्ट बहुमत एक ही राजनीतिक धारा के पक्ष में गया है। कुल सीटों का बड़ा हिस्सा एक ही बीएनपी के खाते में गया, जबकि विपक्षी ताकतें सीमित, बिखरी हुई और वैचारिक रूप से खंडित दिखाई देती हैं। मतदान प्रतिशत अपेक्षाकृत ऊँचा रहा, जो यह संकेत देता है कि जनता ने चुनाव को महज़ औपचारिकता नहीं माना बल्कि उसे सत्ता-परिवर्तन का माध्यम समझा।

हालांकि यह भी सच है कि अवामी लीग की अनुपस्थिति से चुनावी मुकाबला असंतुलित रहा लेकिन इसके बावजूद जनमत का संदेश दो-टूक है। पुरानी सत्ता संरचना से मोहभंग और नए विकल्प की तलाश।

यह जनादेश मूलतः तीन संदेश देता है। पहला, जनता सत्ता के केंद्रीकरण से ऊब चुकी थी। दूसरा, आर्थिक असमानता, बेरोज़गारी और संस्थागत भ्रष्टाचार के खिलाफ गुस्सा निर्णायक रूप में वोट में बदला। तीसरा, राजनीति में नैरेटिव बदला है, अब सिर्फ 'स्थिरता' नहीं, बल्कि 'न्याय और समान अवसर' की भाषा असर कर रही है। यही कारण है कि यह चुनाव भावनात्मक नहीं, बल्कि संरचनात्मक बदलाव का संकेत देता है।

ऐसा नहीं लगता कि तारिक रहमान के नेतृत्व में आने वाली सरकार सहजता से शासन कर पाएगी शपथ लेने के साथ ही उनकी असली चुनौती शुरू होती है। नया नेतृत्व जितना शक्तिशाली जनादेश लेकर आया है, उतनी ही बड़ी उसकी ज़िम्मेदारी है। लोकतंत्र में बहुमत ताकत नहीं, उत्तरदायित्व होता है। यदि यह सरकार संस्थाओं को मजबूत करती है, विपक्षी आवाज़ों को सम्मान देती है और चुनावी जीत को 'सहमति की राजनीति' में बदलती है, तो बांग्लादेश एक नई लोकतांत्रिक स्थिरता की ओर बढ़ सकता है लेकिन यदि बहुमत 'वर्चस्व' में बदल गया, या फिर शेख हसीना की सरकार की तरह शक्तियों का केंद्रीकरण किया जाने लगा तो वही चक्र दोहराया जाएगा, जिससे बांग्लादेश बाहर निकला है।

बांग्लादेश के राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक मोर्चे की तस्वीर उतनी चमकदार नहीं है, जितनी राजनीतिक मंच से दिखाई जाती है। विकास दर के दावों के बावजूद ज़मीनी सच्चाई बेरोज़गारी, महँगाई, विदेशी मुद्रा दबाव और असमान विकास की है। शहरी केंद्रों में समृद्धि का भ्रम है, लेकिन ग्रामीण और सीमावर्ती इलाकों में आर्थिक हाशियाकरण अब भी गहरा है। नया शासन अगर सिर्फ मैक्रो-इकोनॉमिक आँकड़ों में उलझा रहा और रोजगार-केंद्रित विकास मॉडल नहीं अपनाया, तो सामाजिक असंतोष जल्द ही राजनीतिक संकट में बदल सकता है।

रही बात भारत-बांग्लादेश संबंधों की तो पिछले दशक में यह रिश्ता 'रणनीतिक साझेदारी' से 'रणनीतिक निर्भरता' की ओर बढ़ा था। ऊर्जा, ट्रांज़िट, व्यापार, सीमा-सुरक्षा के स्तर पर भारत की भूमिका निर्णायक रही लेकिन सत्ता परिवर्तन के साथ ही इस रिश्ते की भाषा बदलेगी। हो सकता है कि नया शासन भारत को सहयोगी तो माने, लेकिन एकमात्र रणनीतिक विकल्प नहीं। यह फर्क सूक्ष्म है पर निर्णायक। भारत अब 'स्वाभाविक साथी' रहेगा पर 'विशेषाधिकार प्राप्त साझेदार' की उसकी भूमिका बदलती दिखाई दे रही है।

यह बदलाव सीधे दक्षिण एशिया की जियो-पॉलिटिक्स को प्रभावित करेगा। बांग्लादेश का झुकाव बहु-ध्रुवीय विदेश नीति की ओर होगा, जहाँ भारत, चीन, खाड़ी देश, दक्षिण-पूर्व एशिया सभी समानांतर विकल्प होंगे। इसका अर्थ है कि भारत का क्षेत्रीय वर्चस्व नैरेटिव कमजोर हो सकता है और प्रतिस्पर्धात्मक कूटनीति का युग शुरू होने जा रहा है। यह केवल कूटनीतिक नहीं बल्कि भू-आर्थिक प्रतिस्पर्धा भी होगी—बंदरगाह, लॉजिस्टिक्स, निवेश और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर के स्तर पर।

दक्षिण एशिया की राजनीति में इस चुनाव परिणाम का व्यापक असर पड़ेगा। नेपाल, श्रीलंका और मालदीव जैसे देशों में पहले से ही संतुलन-नीति चल रही है। अब बांग्लादेश का जुड़ना इस क्षेत्र को एक ऐसे मोड़ पर ले जाएगा, जहाँ भारत को नेतृत्व 'स्वाभाविक' नहीं, बल्कि 'अर्जित' करना होगा। यानी सहयोग विश्वास से बनेगा, दबाव से नहीं। और अब सवाल कि ऐसे में भारत क्या करे?

भारत के लिए यह क्षण आत्ममंथन का है। पड़ोस-नीति को सुरक्षा-केंद्रित चश्मे से देखने का समय अब खत्म हो रहा है। भारत को बांग्लादेश को "रणनीतिक फ्रंटलाइन" नहीं, बल्कि "समान साझेदार" के रूप में देखना होगा। भारत को अब शेख हसीना के समय में उपजे व्यक्तिवाद के समर्थन की रणनीति के बजाय कूटनीति का लोकतंत्रीकरण कर, आगे बढ़कर संबंधों का नवीकरण करना होगा। शिक्षा, संस्कृति, युवा, मीडिया और नागरिक संवाद के स्तर पर निवेश बढ़ाना होगा। आर्थिक सहयोग का नया मॉडल, सिर्फ परियोजनाएँ नहीं, बल्कि स्थानीय रोजगार-केंद्रित निवेश बनाना होगा और भाषा में संयम लाना पड़ेगा। भारत एवं बांग्लादेश दोनों देशों की सरकारों को समझना होगा कि हर मुद्दे को सुरक्षा समस्या बनाना रिश्तों को खोखला करता है। बहु-पक्षीय मंचों पर सक्रियता बिम्सटेक, क्षेत्रीय व्यापार मंचों और समुद्री सहयोग ढाँचों में नेतृत्व संभालना है तो व्यावहारिक बना होगा और नई सरकार को समर्थन देते हुए शेख हसीना के मुद्दे को भी सुलझाना होगा।

दो-टूक सच यह है कि भारत यदि बांग्लादेश को "प्रभाव-क्षेत्र" की तरह देखेगा तो वह उसे धीरे-धीरे खो देगा। और यदि उसे "साझा भविष्य" का भागीदार मानेगा, तो यह रिश्ता और गहरा होगा।

बांग्लादेश के चुनाव ने एक नई कहानी की शुरुआत की है। यह कहानी लोकतंत्र की मजबूती की भी हो सकती है और नए असंतुलन की भी। फर्क सिर्फ इस बात से पड़ेगा कि सत्ता अपने बहुमत को कैसे समझती है, शक्ति के रूप में या जिम्मेदारी के रूप में। और भारत इस बदलाव को खतरे की तरह देखता है या अवसर की तरह।

इतिहास गवाह है—जो देश पड़ोस में लोकतंत्र को अवसर मानते हैं, वे स्थिर रहते हैं; जो उसे ख़तरा मानते हैं, वे अस्थिर होते हैं। बांग्लादेश ने अपना रास्ता चुन लिया है। अब भारत की बारी है कि वह अपनी राह चुने और एक-एक कर उसे दूर होते पड़ोसियों को चीन या पाकिस्तान की गोद में बैठने से बचाए।

डॉ घनश्याम बादल
लेखक राजनीतिक समीक्षक

बचपन वास्तविकता और कल्पना में उलझा हुआ है

डॉ. विजय गर्ग

आज का बचपन एक अजीब दोहरी दुनिया में रह रहा है। एक तरफ वास्तविकता की मिट्टी की खुशबू, दूसरी ओर कल्पना की चमकदार स्क्रीन। घर के अंगण के खेल अब मोबाइल के खेलों में बदल गए हैं, कहानी की किताबों को एनिमेटेड वीडियो द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है। परिणाम यह है कि बचपन वास्तविक दुनिया और काल्पनिक दुनिया के बीच उलझा हुआ है।

कल्पना बच्चे के विकास के लिए आवश्यक है। यह उसकी रचनात्मकता को बढ़ावा देता है, उसे सपने देखने का साहस प्रदान करता है। परी कथाएं, लोक कथाएँ और हास्य पात्र बच्चे के मन को विस्तार देते हैं। लेकिन जब कल्पना वास्तविकता से अधिक हावी हो जाती है, तो समस्या शुरू होती है। बच्चे रील और रियल के बीच अंतर समझने में असमर्थ रहते हैं।

डिजिटल मीडिया ने बच्चों के लिए एक ऐसी दुनिया तैयार कर दी है जहां सब कुछ तुरंत मिलता है। त्वरित मनोरंजन, तत्काल सफलता और तत्काल मान्यता। इस काल्पनिक दुनिया में नायक हमेशा जीतता है, कठिनाइयां केवल कुछ ही मिनटों में खत्म हो जाती हैं। जब बच्चा वास्तविक जीवन में संघर्ष का सामना करता है, तो वह निराशा और हताशा महसूस करता है। उसे लगता है कि जीवन भी फिल्मों की तरह आसान होना चाहिए।

वास्तविकता बच्चे को धैर्य, संघर्ष और सहनशीलता सिखाती है। मिट्टी में खेलना, दोस्तों के साथ झगड़ा करके फिर मनाना, हारने पर भी दोबारा कोशिश करना। ये सभी अनुभव जीवन के सच्चे पाठ हैं। यदि बचपन केवल कल्पना पर आधारित होगा, तो वह वास्तविक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार नहीं होगा।

माता-पिता और शिक्षकों की भूमिका यहां बहुत महत्वपूर्ण है। उन्हें बच्चों को कल्पना की उड़ान भी देनी चाहिए और वास्तविकता के साथ जमीन से जुड़ना चाहिए। किताबें पढ़ने की आदत, प्रकृति से संपर्क, खेल में हिस्सा लेना और पारिवारिक बातचीत ये सभी तरीके बचपन को संतुलित बनाते हैं।

बचपन की दुनिया हमेशा से ही कहानियों, परियों और जादुई किस्सों से भरी रही है। लेकिन आज के डिजिटल युग ने बच्चों की कल्पना को एक नया लेकिन बहुत जटिल मोड़ दे दिया है। जहां पहले बच्चे दादी-नानी की कहानियां सुनकर अपने मन में एक काल्पनिक दुनिया बनाते थे, वहीं आजकल बच्चे वीडियो गेम और सोशल मीडिया के माध्यम से बनाई गई कल्पना में रह रहे हैं। कल्पना का प्रभाव बच्चों के लिए कल्पना केवल खेल नहीं है, बल्कि सीखने का एक माध्यम है। जब कोई बच्चा किसी सुपरहीरो की तरह व्यवहार करता है, तो वह वास्तव में साहस और शक्ति की अवधारणा को समझने की कोशिश कर रहा होता है। हालांकि, जब यह कल्पना ₹आभासी वास्तविकता₹ का रूप ले लेती है, तो बच्चा वास्तविक दुनिया के रिश्तों और भावनाओं से दूर होने लगता है। वास्तविकता से टकराव आज के बच्चों को कभी-कभी वास्तविकता को स्वीकार करने में कठिनाई होती है। इसके मुख्य कारण हैं: डिजिटल दुनिया: मोबाइल स्क्रीन पर दिखाई देने वाले चमकीले रंग और तुरंत मिलने वाली खुशी (वास्तविक जीवन की धीमी गति को उबाऊ बना देती है) सामाजिक दूरी: बच्चे मैदान में खेलने के बजाय वीडियो गेम में दोस्त बनाना अधिक पसंद करते हैं, जिससे उनका सामाजिक विकास प्रभावित होता है। संतुलन की आवश्यकता यह कहना गलत होगा कि कल्पना बुरी है। कल्पना ही रचनात्मकता की जननी है। लेकिन चुनौती यह है कि बच्चों को समझाया जाए कि स्क्रीन की दुनिया और जमीनी वास्तविकता में अंतर है। माता-पिता को अपने बच्चों को प्रकृति से जोड़ने, उन्हें किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित करने और उनके साथ बातचीत करने की आवश्यकता है ताकि वे अपने मन की उलझन को सुलझा सकें। निष्कर्ष: बचपन का असली आनंद कल्पना की उड़ानों में है, लेकिन इन उड़ानों की जड़ें वास्तविकता की धरती पर होना बहुत जरूरी है।

अंततः, कल्पना और वास्तविकता दोनों ही बचपन के आवश्यक अंग हैं। कल्पना सपने देती है, वास्तविकता उन्हें साकार करने का मार्ग दिखाती है। यदि हम बच्चों को यह संतुलन सिखाते हैं, तो वे न केवल अच्छे सपने देखेंगे, बल्कि उन्हें सच बनाने की क्षमता भी रखेंगे।

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

चुनाव के बाद चुप्पी: क्या राइट टू रिकॉल समय की मांग है?

--डॉ० सत्यवान सौरभ

लोकतंत्र का मूल सिद्धांत यह है कि सत्ता जनता के हाथों में निहित होती है और निर्वाचित प्रतिनिधि जनता के सेवक होते हैं। चुनाव इसी व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम हैं, जिनके द्वारा जनता अपने प्रतिनिधियों का चयन करती है। किंतु व्यवहार में यह आदर्श अक्सर कमजोर पड़ता दिखाई देता है। चुनाव से पहले नेता जनता के बीच सक्रिय रहते हैं, जनसभाएँ करते हैं, समस्याएँ सुनते हैं और बड़े-बड़े वादे करते हैं, लेकिन जैसे ही चुनाव संपन्न होता है और सत्ता मिलती है, वही नेता जनता से दूर होते चले जाते हैं। धीरे-धीरे स्थिति ऐसी बन जाती है कि जनता अपने ही प्रतिनिधियों से मिलने और अपनी बात रखने के लिए संघर्ष करती नजर आती है। यही वह विरोधाभास है जिसने "राइट टू रिकॉल" जैसे विचार को जन्म दिया है।

वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनता के पास प्रतिनिधियों को नियंत्रित करने का एकमात्र प्रभावी साधन अगला चुनाव होता है, जो प्रायः पाँच वर्ष बाद आता है। यदि इस अवधि के दौरान कोई प्रतिनिधि भ्रष्टाचार में लिप्त हो जाए, जनता की समस्याओं की अनदेखी करे या अपने चुनावी वादों से पूरी तरह मुकर जाए, तो जनता असहाय बनी रहती है। यह असहायता लोकतंत्र में निराशा और अविश्वास को जन्म देती है। ऐसे में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि जिस जनता को प्रतिनिधि चुनने का अधिकार है, क्या उसे प्रतिनिधि को हटाने का अधिकार नहीं होना चाहिए?

"राइट टू रिकॉल" इसी प्रश्न का उत्तर प्रस्तुत करता है। इसका तात्पर्य है कि यदि कोई निर्वाचित प्रतिनिधि अपने दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन नहीं करता, जनता के विश्वास को तोड़ता है या लगातार जनविरोधी कार्य करता है, तो जनता एक निर्धारित संवैधानिक प्रक्रिया के माध्यम से उसे कार्यकाल समाप्त होने से पहले ही पद से हटा सके। यह अवधारणा लोकतंत्र को केवल प्रतिनिधिक नहीं रहने देती, बल्कि उसे वास्तविक अर्थों में जवाबदेह बनाती है। इससे प्रतिनिधियों को यह स्पष्ट संदेश मिलता है कि उनकी जिम्मेदारी चुनाव जीतने तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे कार्यकाल में जनता के प्रति बनी रहती है।

दुनिया के कई हिस्सों में इस विचार को व्यवहार में लाया गया है। उदाहरणस्वरूप, स्विट्ज़रलैंड में प्रत्यक्ष लोकतंत्र की परंपरा मजबूत मानी जाती है, जहाँ नागरिकों की भूमिका केवल प्रतिनिधि चुनने तक सीमित नहीं रहती। इसी तरह संयुक्त राज्य अमेरिका के कुछ राज्यों में स्थानीय स्तर पर रिकॉल चुनावों के माध्यम से निर्वाचित प्रतिनिधियों को हटाने की व्यवस्था मौजूद है। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि "राइट टू रिकॉल" कोई अव्यावहारिक कल्पना नहीं, बल्कि एक कार्यशील लोकतांत्रिक उपाय है।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण लोकतंत्र में जवाबदेही का प्रश्न और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। यहाँ पंचायत स्तर पर कुछ राज्यों में सरपंच या स्थानीय प्रतिनिधियों को हटाने की सीमित व्यवस्थाएँ मौजूद हैं, किंतु विधायक और सांसद जैसे उच्च पदों के लिए ऐसा कोई प्रावधान नहीं है। परिणामस्वरूप, कई बार जनता को पाँच वर्षों तक ऐसे प्रतिनिधियों को झेलना पड़ता है, जो न तो सदन में सक्रिय रहते हैं और न ही अपने क्षेत्र की समस्याओं के प्रति संवेदनशील होते हैं।

भारत में "राइट टू रिकॉल" की मांग समय-समय पर उठती रही है। इसके समर्थकों का मानना है कि यह व्यवस्था नेताओं में निरंतर जवाबदेही का भाव पैदा करेगी। जब प्रतिनिधि को यह ज्ञात होगा कि जनता चाहे तो उसे पद से हटा सकती है, तब वह जनहित के मुद्दों को गंभीरता से लेगा। इससे भ्रष्टाचार पर अंकुश लगेगा, सत्ता के दुरुपयोग की प्रवृत्ति कम होगी और लोकतंत्र केवल औपचारिक न रहकर जीवंत बनेगा। इसके अतिरिक्त, यह अधिकार जनता को केवल मतदाता नहीं, बल्कि सक्रिय लोकतांत्रिक भागीदार के रूप में स्थापित करेगा।

हालाँकि इस अवधारणा के आलोचक भी कम नहीं हैं। उनका तर्क है कि "राइट टू रिकॉल" से राजनीतिक अस्थिरता बढ़ सकती है। बार-बार रिकॉल की कोशिशें सरकारों को अस्थिर कर सकती हैं और विकास कार्यों में बाधा उत्पन्न हो सकती है। इसके साथ ही यह आशंका भी व्यक्त की जाती है कि विपक्षी दल या प्रभावशाली हित समूह इस अधिकार का दुरुपयोग कर सकते हैं और जनभावनाओं को भड़काकर निर्वाचित सरकारों को गिराने का प्रयास कर सकते हैं। तात्कालिक असंतोष या अफवाहों के आधार पर लिया गया निर्णय दीर्घकालिक नीतियों के लिए नुकसानदेह हो सकता है।

इन आशंकाओं को नकारा नहीं जा सकता, लेकिन इन्हें आधार बनाकर "राइट टू रिकॉल" की अवधारणा को पूरी तरह खारिज कर देना भी उचित नहीं होगा। आवश्यकता इस बात की है कि इसे संतुलित और विवेकपूर्ण ढंग से लागू किया जाए। यदि रिकॉल प्रक्रिया शुरू करने के लिए मतदाताओं के एक बड़े हिस्से का समर्थन अनिवार्य किया जाए, कार्यकाल के शुरुआती और अंतिम चरणों में इस पर रोक लगाई जाए और पूरी प्रक्रिया स्वतंत्र तथा पारदर्शी संस्थाओं द्वारा संचालित हो, तो दुरुपयोग की संभावना काफी हद तक कम की जा सकती है।

लोकतंत्र कोई स्थिर व्यवस्था नहीं है; यह समय और समाज की आवश्यकताओं के अनुसार विकसित होता रहता है। जिस प्रकार सार्वभौमिक मताधिकार, सूचना का अधिकार और सामाजिक न्याय से जुड़े सुधारों ने लोकतंत्र को अधिक मजबूत बनाया, उसी प्रकार "राइट टू रिकॉल" भी लोकतांत्रिक विकास की अगली कड़ी के रूप में देखा जा सकता है। आज जब जनता पहले से अधिक जागरूक है, सूचना तक उसकी पहुँच व्यापक है और वह अपने अधिकारों के प्रति सजग हो रही है, तब लोकतंत्र में जवाबदेही के नए औजारों की मांग स्वाभाविक है।

अंततः "राइट टू रिकॉल" कोई चमत्कारी समाधान नहीं है, लेकिन यह उस समस्या को अवश्य संबोधित करता है जिसमें चुनाव के बाद जनता और नेता के बीच दूरी बढ़ जाती है। यह अवधारणा नेताओं को यह स्मरण कराती है कि सत्ता स्थायी अधिकार नहीं, बल्कि जनता की अमानत है। यदि इसे संवैधानिक मर्यादाओं के भीतर, चरणबद्ध और संतुलित रूप में लागू किया जाए, तो यह लोकतंत्र को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और जनोन्मुखी बना सकती है। एक सशक्त लोकतंत्र वही होता है जहाँ जनता केवल वोट डालने तक सीमित न रहे, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर सत्ता को नियंत्रित करने की वास्तविक क्षमता भी रखे।

इलाज से वंचित गाँव, सुविधाओं से भरा

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

भोर की हवा जब गाँव की सूनी गलियों में बहती है, तो वह केवल मिट्टी की गंध नहीं लाती, बल्कि अधूरी साँसों, टूटी उम्मीदों और अनकहे दर्द की कहानियाँ भी साथ लाती है। यहाँ सूरज हर रोज़ उगता है, पर स्वास्थ्य की रोशनी कभी नहीं पहुँचती। यहाँ जीवन जन्म लेते ही संघर्ष सीख लेता है, और बीमारी आते ही हार मान लेता है। किसी माँ की गोद में तड़पता बच्चा, किसी बुज़ुर्ग की काँपती देह, किसी युवा की बुझती आँखें—सब एक ही सवाल पूछते हैं, "क्या हमारा जीवन इतना सस्ता है?" इस गाँव में डॉक्टर नहीं हैं, दवाइयाँ नहीं हैं, इलाज नहीं है, लेकिन सत्ता के पास सुविधाओं का अंबार है। यह केवल अभाव की कहानी नहीं, बल्कि एक सुनियोजित उपेक्षा का दस्तावेज़ है।

यहाँ बीमार पड़ना किसी अपराध से कम नहीं माना जाता। क्योंकि बीमार होने का मतलब है, कर्ज़ लेना, ज़मीन गिरवी रखना, या चुपचाप मर जाना। जब रात में किसी को तेज़ बुखार चढ़ता है, तो पूरा परिवार डर के साए में बैठ जाता है। मोबाइल नेटवर्क नहीं, एंबुलेंस नहीं, सड़कें टूटी हुई—और अस्पताल कई कोस दूर। गर्भवती महिला की प्रसव पीड़ा यहाँ जीवन की परीक्षा बन जाती है। कई बार बच्चे रास्ते में ही दम तोड़ देते हैं, और कई बार माँ लौटकर नहीं आती। यह मौत प्राकृतिक नहीं होती, यह व्यवस्था की हत्या होती है। फिर भी इन मौतों का कोई रिकॉर्ड नहीं बनता, कोई आँकड़ा नहीं बढ़ता, कोई मंत्री बयान नहीं देता। वे चुपचाप मिट्टी में मिल जाती हैं, जैसे कभी थीं ही नहीं।

गाँव का प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बाहर से देखने में सरकारी उपलब्धि लगता है। नीली दीवारें, टूटा बोर्ड, जंग लगा ताला और भीतर सन्नाटा। यह इमारत इलाज का नहीं, धोखे का प्रतीक बन चुकी है। यहाँ कभी डॉक्टर नहीं आते, नर्सें महीनों गायब रहती हैं, और दवाइयाँ कागज़ों में दर्ज रहती हैं। मरीजों के लिए यह भवन केवल छाया देने वाला खंडहर है। कभी कोई निरीक्षण होता भी है, तो पहले से सूचना देकर। उस दिन ताले खुलते हैं, फाइलें सजती हैं, और झूठ सच बनकर प्रस्तुत होता है। निरीक्षक चले जाते हैं, और फिर वही वीरानी लौट आती है। यह स्वास्थ्य केंद्र नहीं, बल्कि सरकारी संवेदनहीनता का स्मारक है।

इसके ठीक विपरीत, गाँव की राजनीति विलासिता में डूबी रहती है। नेता जब आते हैं, तो धूल उड़ाती गाड़ियों का काफिला साथ लाते हैं। दस गाड़ियाँ, दर्जनों समर्थक, महँगे कपड़े और बनावटी मुस्कान। मंच से वे कहते हैं—"स्वास्थ्य हमारी प्राथमिकता है।" नीचे बैठा बीमार किसान जानता है कि यह झूठ है। क्योंकि उसके बेटे की दवा के लिए पैसे नहीं थे, और नेता के पास नई कार के लिए थे। नेता के परिवार का इलाज बड़े शहरों के आलीशान अस्पतालों में होता है, विदेशों में होता है, लेकिन गाँव के लिए सिर्फ वादे होते हैं। सत्ता और जनता के बीच की खाई इतनी गहरी हो चुकी है कि अब आवाज़ भी वहाँ तक नहीं पहुँचती।

सरकारी योजनाएँ यहाँ एक मज़ाक बन चुकी हैं। कागज़ों में सब कुछ है—मुफ्त इलाज, मोबाइल क्लिनिक, मातृत्व सहायता, पोषण अभियान। लेकिन ज़मीनी हकीकत में कुछ भी नहीं। बजट आता है, फाइलें घूमती हैं, टेंडर निकलते हैं, और पैसा रास्ते में ही गायब हो जाता है। कहीं भ्रष्टाचार निगल जाता है, कहीं लापरवाही मार देती है। जो कर्मचारी ईमानदारी से काम करना चाहते हैं, वे अकेले पड़ जाते हैं। उन्हें ट्रांसफर का डर दिखाया जाता है, दबाव में लाया जाता है, और अंततः खामोश कर दिया जाता है। सिस्टम ईमानदारी को दंड देता है, और बेईमानी को पुरस्कार।

इस व्यवस्था का सबसे बड़ा शिकार आम ग्रामीण बनता है। वह न मीडिया में है, न संसद में, न अदालत में। उसकी पीड़ा केवल उसके घर की चार दीवारों तक सीमित रहती है। वह इलाज के लिए अपनी भैंस बेच देता है, खेत गिरवी रख देता है, बेटी की पढ़ाई छुड़ा देता है। फिर भी कई बार इलाज नहीं मिल पाता। तब वह खुद को दोष देता है, किस्मत को कोसता है, भगवान से सवाल करता है। उसे कभी यह एहसास नहीं कराया जाता कि यह उसकी नहीं, व्यवस्था की विफलता है। उसे नागरिक नहीं, केवल सहनशील प्राणी बना दिया गया है।

फिर भी, इस अँधेरे में कुछ दीपक अब भी जल रहे हैं। कोई युवा मोबाइल से वीडियो बनाकर सच्चाई दिखाता है, कोई सामाजिक कार्यकर्ता गाँव-गाँव जाकर जागरूकता फैलाता है, कोई माँ अपनी खोई संतान को आवाज़ बना देती है। ये लोग बताते हैं कि बदलाव अभी संभव है। लेकिन बदलाव तब आएगा, जब ग्रामीण खुद को कमज़ोर नहीं, जागरूक समझेगा। जब वह नेता से जाति नहीं, इलाज माँगेगा। जब वह शराब और राशन से ऊपर अस्पताल को रखेगा। जब वह वोट को केवल सौदा नहीं, हथियार बनाएगा।

असल में, गाँव से डॉक्टर का गायब होना सिर्फ इलाज की कमी नहीं, बल्कि लोकतंत्र की आत्मा का पतन है। यह चीख़-चीख़कर बताता है कि विकास की रोशनी केवल महानगरों तक सीमित है, सुविधाएँ सिर्फ रसूख़दारों की बपौती हैं, और आम आदमी का जीवन सत्ता की सूची में सबसे नीचे दर्ज है। जब तक यह अमानवीय सोच नहीं बदलेगी, तब तक नेताओं के गैराज में गाड़ियों की संख्या बढ़ती रहेगी और गाँव के अस्पतालों में सन्नाटा पसरा रहेगा। जब तक सत्ता को जनता के सामने झुकाकर जवाबदेह नहीं बनाया जाएगा, तब तक निर्दोष लोगों की साँसें यूँ ही बिना शोर, बिना ख़बर, बिना इंसाफ के बुझती रहेंगी।

एक स्वस्थ देश की पहचान उसकी इमारतों से नहीं, उसके नागरिकों की सेहत से होती है। अगर गाँव बीमार है, तो देश भी बीमार है। अगर ग्रामीण असहाय है, तो लोकतंत्र भी कमज़ोर है। आज ज़रूरत इस बात की है कि स्वास्थ्य को दया नहीं, अधिकार बनाया जाए। डॉक्टर को बोनस नहीं, ज़िम्मेदारी दी जाए। नेता को सम्मान नहीं, जवाबदेही सौंपी जाए। तभी वह दिन आएगा, जब गाँव की गलियों में कराह नहीं, हँसी गूँजेगी। जब बीमार बच्चा इलाज पाएगा, और माँ निश्चिंत होकर सो पाएगी। और तब सच में कहा जा सकेगा—यह देश आगे बढ़ रहा है, सिर्फ दिखावे में नहीं, इंसानियत में भी।

सिर्फ़ माइनिंग या स्टील ही नहीं, बल्कि अलग-अलग सेक्टर में इंडस्ट्री लगाकर क्योंझर को ग्रोथ का हब बनाया जाएगा - CM

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर/केंझर : क्योंझर ज़िले में इंडस्ट्रियल डाइवर्सिटी और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर के डेवलपमेंट में एक अहम चैप्टर जोड़ते हुए, मुख्यमंत्री श्री मोहन चरण माझी ने आज धरणीधर यूनिवर्सिटी कैंपस में 100 करोड़ रुपये के टेक्सटाइल पार्क और 187 करोड़ रुपये के डिज़ास्टर रिकवरी और डेटा सेंटर की नींव रखी।

वहां मौजूद लोगों को संबोधित करते हुए, मुख्यमंत्री ने क्योंझर को एक डाइवर्सिफाइड इंडस्ट्रियल हब बनाने के लिए राज्य सरकार का कमिटमेंट बताया। क्योंझर सिर्फ़ माइनिंग और स्टील के लिए नहीं जाना जाएगा। हम इसे मल्टी-सेक्टर इंडस्ट्रियल ग्रोथ का हब बनाने के लिए कमिटेड हैं। हमारा विज़न एक सुनहरा क्योंझर बनाना है, इस मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा।

बताया जा रहा है कि टेक्सटाइल पार्क में 1,200 युवाओं को नौकरी के मौके मिलेंगे, जिसे 100 करोड़ रुपये के इन्वेस्टमेंट से डेवलप किया जाएगा। मॉडर्न इंफ्रास्ट्रक्चर और लॉजिस्टिक सपोर्ट के साथ, हिंडाल्को 7 एकड़ ज़मीन पर एक गारमेंट मैन्युफैक्चरिंग यूनिट लगाएगा। यह यूनिट हर साल 2.4 लाख गारमेंट बनाएगी।

टेक्सटाइल इंडस्ट्री की बदलाव लाने की क्षमता के बारे में बताते हुए, मुख्यमंत्री ने कहा, "इंडस्ट्रीज़ खुशहाली की रीढ़ हैं। खास तौर पर टेक्सटाइल सेक्टर महिलाओं और युवाओं के लिए रोज़गार के बड़े मौके देता है।"

उन्होंने आगे कहा कि पिछले साल जुलाई में भुवनेश्वर में हुए ओ-टेक्स टेक्सटाइल कॉन्क्लेव के दौरान, 7,800 करोड़ रुपये के 33 MoU साइन किए गए, जिससे पूरे राज्य में 53,000 से ज़्यादा लोगों के लिए रोज़गार के मौके बने हैं। भद्रक में एक टेक्निकल टेक्सटाइल पार्क के साथ-साथ, क्योंझर, संबलपुर, बलांगीर, गंजम, कटक और जगतसिंहपुर में भी खास टेक्सटाइल और गारमेंट पार्क बनाए जा रहे हैं। हमारे युवा दूसरे राज्यों में टेक्सटाइल इंडस्ट्री को मज़बूत कर रहे हैं। अब, ओडिशा में भी ऐसे ही मौके बनाए जाएंगे ताकि लोग अपने घरों में आराम से काम कर सकें।

इस मौके पर, मुख्यमंत्री ने OCAC के ज़रिए इलेक्ट्रॉनिक्स और IT डिपार्टमेंट द्वारा ₹187 करोड़ के इन्वेस्टमेंट से बनाए गए डिज़ास्टर रिकवरी और डेटा सेंटर का भी

शिलान्यास किया। यह फैसिलिटी भुवनेश्वर में स्टेट डेटा सेंटर के बैकअप के तौर पर काम करेगी और प्राकृतिक आपदाओं या साइबर खतरों की स्थिति में डिजिटल तरीके से दी जाने वाली सरकारी सेवाओं की बिना किसी रुकावट के डिलीवरी सुनिश्चित करेगी।

इस सर्विस को एक ज़रूरी इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट बताते हुए, मुख्यमंत्री ने कहा, "यह डेटा का ज़माना है। हमारी सरकार 400 से ज़्यादा सर्विस ऑनलाइन देती है। नागरिकों का डेटा हमेशा सुरक्षित, आसानी से मिलने वाला और हमारे कंट्रोल में होना चाहिए। केंद्र डेटा लोकलाइज़ेशन की कोशिशों में मदद करेगा और राज्य के डिजिटल गवर्नेंस की मज़बूती को बढ़ाएगा। यह प्रोजेक्ट यहाँ इसलिए लगाया गया है क्योंकि क्योंझर में भूकंप का खतरा कम है (ज़ोन II)। मुख्यमंत्री ने कहा कि इससे क्योंझर को ज़रूरी डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर बनाने में प्राथमिकता मिली है।

सरकार के संतुलित क्षेत्रीय विकास पर ध्यान देने की बात दोहराते हुए, मुख्यमंत्री ने बताया कि ज़िले में मंदिर विकास के लिए ₹312 करोड़ दिए गए हैं और मकर त्योहार के दौरान ₹1,900 करोड़ के प्रोजेक्ट पहले ही लॉन्च किए जा चुके हैं। एक खुशहाल ओडिशा अपने ज़िलों की खुशहाली से ही बनेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि इंडस्ट्रियल ग्रोथ और डिजिटल पावर एक विकसित भारत की ओर हमारी यात्रा के मुख्य ड्राइवर हैं।

क्योंझर के MP श्री अनंत नाइक, MLA श्री अखिल नाइक, डॉ. फकीर मोहन नाइक ज़िला कलेक्टर श्री हकीब सिंह, OKAC के CEO श्री प्रदीप कुमार राउत, हिंडाल्को के प्रेसिडेंट श्री अर्धेंदु महापात्रा, सीनियर अधिकारी और बड़ी संख्या में नागरिक शामिल हुए।

पलामू एसीबी ने अमीन को सात हजार घूस लेते दबोच डाला

छोटी मछली तो फंसा बड़ी मछलियों में खलबली

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, गारू अंचल में पदस्थापित अंचल अमीन मुनिदेव सिंह को शुक्रवार को भ्रष्टाचार निरोधक दस्ता (एसीबी) पलामू की टीम ने सात हजार रुपये रिश्वत लेते रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया। आरोपित अंचल अमीन जमीन को ऑनलाइन करने के नाम पर रिश्वत ले रहा था। मिली जानकारी के अनुसार गारू प्रखंड निवासी विशाल कुमार ने अंचल कार्यालय में अपने जमीन को ऑनलाइन करने का आवेदन दिया था। परंतु इसके बदले में अंचल अमीन की ओर से रिश्वत की मांग की जा रही थी। परेशान होकर सूचक विशाल कुमार ने इसकी शिकायत एसीबी के पुलिस अधीक्षक से की। जानकारी होने के बाद अपराध नियंत्रण ब्यूरो की टीम ने अपने स्तर से पूरे मामले की छानबीन की। जांच में इस बात की पुष्टि हो गई कि अंचल अमीन की ओर से रिश्वत की मांग की जा रही है। इसके बाद सूचक को पैसे देकर अंचल अमीन के पास भेजा गया। जैसे ही आरोपित अंचल अमीन ने रिश्वत के पैसे लिए वैसे ही एसीबी की टीम ने उसे पकड़ लिया। आवश्यक कागजी प्रक्रिया पूरी करने के बाद आरोपित अंचल अमीन को गिरफ्तार कर पलामू ले जाया गया। वैसे समूचे झारखंड आए दोनों जमीन केदलालों एवं भ्रष्ट अधिकारियों के चंगुल में त्राहि-त्राहि कर रहा है। जस पर लगाम लगाना अति आवश्यक है ।

गवर्नर ने लोक भवन में भारत का पहला पूरी तरह से ऑटोमेटेड अपॉइंटमेंट सिस्टम - 'ई-लोक भवन ओडिशा ऐप' लॉन्च

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: लोक भवन के लिए ऑटोमेटेड अपॉइंटमेंट सिस्टम - ₹ई-लोक भवन ओडिशा ऐप₹ को माननीय गवर्नर डॉ. हरि बाबू कंभमपति ने लॉन्च किया। यह एक सुरक्षित वेब-बेस्ड प्लेटफॉर्म है जिसे गवर्नर सेक्रेटेरिएट के साथ नागरिकों की बातचीत को आसान बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस पहल के साथ, ओडिशा देश का पहला राज्य बन गया है जिसने लोक भवन में पूरी तरह से ऑटोमेटेड अपॉइंटमेंट और विज़िटर मैनेजमेंट सिस्टम शुरू किया है।

डिजिटल प्लेटफॉर्म का लॉन्च माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के डिजिटल इंडिया प्रोग्राम के विज़न का हिस्सा है और यह इनोवेशन, सफाई के प्रति लोक भवन के लगातार कमिटमेंट को दिखाता है। लोक भवन ने पिछले एक साल में कई आगे की सोच वाली पहल की हैं। कैंपस, जो सोलर पावर से अपनी एनर्जी की ज़रूरतें पूरी करता है, को नेट-ज़ीरो फैसिलिटी में बदल दिया गया है और गवर्नर की ऑफिशियल कार को इलेक्ट्रिक गाड़ियों से लैस किया गया है, जो क्लीन एनर्जी के प्रति इसके कमिटमेंट को दिखाता है। इसके अलावा, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के सम्मान में लोक भवन परिसर में बनाया गया एक इको-पार्क ₹अटल वनर₹, लोक भवन में सस्टेनेबिलिटी, विरासत और इनोवेशन के मेल का प्रतीक बन गया है।

यह नई डिजिटल पहल मॉडर्न, नागरिक-केंद्रित शासन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। अब तक, लोक भवन में अपॉइंटमेंट, शिकायतों और विज़िटर एक्सेस को मैनेज करने के लिए अक्सर बहुत सारे पेपरवर्क और कई बार विज़िट करने पड़ते थे। ₹ई-लोक भवन ओडिशा₹ के लॉन्च के साथ,

इन प्रोसेस को आसान बना दिया गया है और एक सिंगल, यूज़र-फ्रेंडली डिजिटल इंटरफ़ेस के तहत लाया गया है।

डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म अपॉइंटमेंट की ऑनलाइन बुकिंग, रियल-टाइम स्टेटस ट्रैकिंग, WhatsApp और SMS अलर्ट, डिजिटल QR-बेस्ड ई-गेट पास और सुरक्षित एंट्री वेरिफिकेशन की सुविधा देगा। इसमें अधिकारियों के लिए एक सेंट्रलाइज़्ड डैशबोर्ड, वेबसाइट इंटीग्रेशन और लोक भवनों का 360-डिग्री वर्चुअल टूर भी है। यह एक स्ट्रक्चर्ड, रोल-बेस्ड वर्कफ़्लो को फ़ॉलो करता है जिसे हर रिक्वेस्ट में ट्रांसपेरेंसी, अकाउंटेबिलिटी और तेज़ी से फ़ैसले लेने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

नागरिक अपने मोबाइल नंबर का इस्तेमाल करके अपॉइंटमेंट के लिए रजिस्टर कर सकते हैं, अप्रूवल के अनुसार अपॉइंटमेंट ले सकते हैं और स्टेटस ट्रैक कर सकते हैं। रिक्वेस्ट अप्रूव होने के बाद, रिक्वेस्ट करने वाले को WhatsApp और SMS से कन्फर्मेशन मिलेगा और एक QR-बेस्ड ई-गेट पास और तय समय पर पहुंचने का रिमाइंडर मिलेगा। विज़िट के बाद, अप्रूव्ड फ़ोटोग्राफ़ को WhatsApp के ज़रिए विज़िटर्स के साथ सुरक्षित रूप से शेयर किया जाएगा, जिससे डिजिटल डॉक्यूमेंटेशन पक्का होगा।

गवर्नर ने कहा कि ₹ई-लोक भवन ओडिशा₹ का लॉन्च ट्रांसपेरेंट, अकाउंटेबल और सिटिज़न-सेंट्रिक गवर्नेंस की दिशा में एक प्रोग्रेसिव कदम है। ट्रांसपेरेंट और विज़िटर मैनेजमेंट को आसान बनाने के लिए टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करके, सिस्टम एफिशिएंसी बढ़ाएगा और प्रोसेस में देरी को कम करेगा।

इस इनिशिएटिव के साथ, लोक भवन ओडिशा ने अपनी परंपरा को टेक्नोलॉजी के साथ जोड़ा है और ट्रांसपेरेंट, एफिशिएंट और डिजिटली एम्पावर्ड गवर्नेंस के प्रति अपने कमिटमेंट को मज़बूत किया है।

लॉन्च इवेंट के दौरान गवर्नर की कमिश्नर-कम-एडमिनिस्ट्रेटिव सेक्रेटरी श्रीमती रूपा रोशन साहू और लोक भवन के सीनियर अधिकारी मौजूद थे।

ऐतिहासिक "हिज ला" मेला को अंग्रेजों ने 1890 लगाया था, इस वर्ष आयोजन हेतु तैयारी पूरी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, जिला में मयूराक्षी नदी के किनारे प्रतिवर्ष लगे वाला राजकीय जनजातीय हिजला मेला महोत्सव की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं. झारखंड सरकार द्वारा इस वर्ष इसे 13 से 20 फरवरी तक आयोजित किया जा रहा है. इस मेला को देखने झारखंड ही नहीं बल्कि पश्चिम बंगाल और बिहार के लोग बड़ी तादाद में पहुंचते हैं. इसके साथ ही कई राज्यों के दुकानदार अपने उत्पादों को लेकर आते हैं और अच्छी आमदनी प्राप्त करते हैं. अगर हम राजकीय जनजातीय हिजला मेला के इतिहास पर नजर डालें तो इसकी शुरुआत 03 फरवरी 1890 में अंग्रेजी हुकूमत के दौरान दुमका के डिप्टी कमिश्नर जॉन आर. कास्टेयर्स ने की थी. इस मेला का उद्देश्य स्थानीय लोगों खासकर जनजातीय समुदायों के साथ प्रशासन का मेलजोल, शासन और जनता के बीच विश्वास को बढ़ाना था. दरअसल 1855 में सिदो-कान्हू के द्वारा जो संथाल हूल (आंदोलन) किया गया था उसने अंग्रेजी शासन व्यवस्था की नींव हिला दी थी. हालांकि अंग्रेजों ने सिदो-कान्हू जैसे कई अन्य वीरों को फांसी की सजा दी और इस आंदोलन को कुचल दिया था. इसके बावजूद संथाल परगना और आसपास के इलाकों में एक अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ विद्रोह का वातावरण तैयार हो चुका था, जो वर्षों तक चलता रहा. इधर अंग्रेजी शासकों की मंशा थी कि अपना काम निकालने के लिए वह स्थानीय जनता, खास तौर पर इस इलाके में रहने वाले जनजातीय समुदाय के साथ बेहतर तालमेल स्थापित करें. इन्हीं उद्देश्यों को लेकर उन्होंने मयूराक्षी नदी के तट पर 03 फरवरी 1890 में हिजला मेला की शुरुआत की. इसमें आने वाले लोगों के साथ अंग्रेजी शासक संवाद स्थापित करते, उनसे सलाह ली जाती थी कि प्रशासन आपके लिए क्या कार्य करें. इसका उद्देश्य था अंग्रेजी हुकूमत को चलाने में कोई बाधा उतपन्न न हो . जब अंग्रेजी शासन लोगों को एक जगह एकत्रित कर रही थी तो उन्हें आकर्षित करने के लिए दूर-दराज के दुकानदारों को भी बुलाया गया कि आप अपना सामान लेकर यहां आएं. इसमें तरह-तरह के खेल तमाशे का आयोजन कर भी लोगों को आकर्षित किया जाने लगा. धीरे-धीरे यह मेला पूरे संथाल परगना के लिए एक बड़ा और आकर्षक आयोजन बन गया, जो आज भी जारी है. इसमें सरकार के द्वारा जनकल्याण योजनाओं की जानकारी के साथ लोगों को उत्पाद बेचने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

अधिवक्ता रजत कल्सन को बार काउंसिल ऑफ पंजाब एंड हरियाणा का चुनाव लड़ने से रोकना राजनीतिक एवं सामाजिक प्रतिशोध।

चण्डीगढ/नई दिल्ली देश में वर्तमान समय में लगभग साढ़े पाँच सौ सांसदों में से 243 सांसदों के विरुद्ध ऐसे गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं, जिनमें 7 वर्ष या उससे अधिक की सज़ा का प्रावधान है। इसके बावजूद निर्वाचन आयोग ने उन्हें चुनाव लड़ने से न तो रोका और न ही अयोग्य ठहराया। परिणामस्वरूप, वे चुनाव जीतकर देश की सर्वोच्च लोकतांत्रिक संस्था (संसद) का हिस्सा बने। इसी प्रकार, देश की विभिन्न राज्य विधानसभाओं में एक हज़ार से अधिक विधायक ऐसे हैं जिनके विरुद्ध हत्या, हत्या का प्रयास, बलात्कार, छेड़छाड़, डकैती, धोखाधड़ी जैसी अत्यंत संगीन धाराओं में मुकदमे दर्ज हैं। इसके बावजूद वे न केवल अपने-अपने क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, बल्कि कई तो मंत्री पद तक सुशोभित कर चुके हैं।

ऐसे परिप्रेक्ष्य में यह प्रश्न अत्यंत गंभीर और चिंताजनक है कि दलित समुदाय से आने वाले अधिवक्ता रजत कल्सन को बार काउंसिल ऑफ पंजाब एंड हरियाणा के चुनाव लड़ने से किस आधार पर रोका गया।

विशेष रूप से तब, जब यह निर्विवाद तथ्य है कि रजत कल्सन के विरुद्ध दर्ज सभी मुकदमे राजनीतिक एवं सामाजिक प्रतिशोध से प्रेरित हैं, और किसी भी प्रकरण में अब तक दोष सिद्ध नहीं हुआ है। भारतीय संविधान एवं आपराधिक न्याय प्रणाली का मूल सिद्धांत है कि जब तक दोष सिद्ध न हो, व्यक्ति निर्दोष माना जाता है।

यदि गंभीर अपराधों के आरोपों का सामना कर रहे सांसद, विधायक और मंत्री लोकतांत्रिक संस्थाओं में प्रतिनिधित्व कर सकते हैं, तो फिर केवल मुकदमों के आधार पर एक दलित अधिवक्ता को बार काउंसिल के चुनाव से वंचित करना संवैधानिक समानता (अनुच्छेद 14), न्याय के सिद्धांतों तथा सामाजिक न्याय की भावना के प्रतिकूल है।

यह चयनात्मक कार्रवाई न केवल दोहरा मापदंड दर्शाती है, बल्कि यह दलित समुदाय के प्रतिनिधित्व को हतोत्साहित करने वाली और संस्थागत भेदभाव की ओर संकेत करती है, जिसे किसी भी स्थिति में न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता।

"राष्ट्रीय आय-सह-मेधा छात्रवृति योजना परीक्षा" पर लाइव संवाद बना विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शन का मंच

परिवहन विशेष न्यूज

पटना। मेधावी विद्यार्थियों को राष्ट्रीय आय-सह-मेधा छात्रवृत्ति योजना के प्रति जागरूक करने और उन्हें सही दिशा देने के उद्देश्य से टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा आयोजित विशेष फेसबुक लाइव कार्यक्रम "लेट्स टॉक" का सफल आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद तथा शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों और विषय विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा अभिभावकों की जिज्ञासाओं का विस्तार से समाधान किया।

कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय आय-सह-मेधा छात्रवृति योजना परीक्षा की पात्रता, आवेदन प्रक्रिया, परीक्षा पैटर्न, तैयारी की रणनीति तथा छात्रवृत्ति के महत्व पर विस्तार से चर्चा हुई। बड़ी संख्या में विद्यार्थियों और शिक्षकों ने ऑनलाइन जुड़कर विशेषज्ञों से सीधे संवाद किया।

विशेषज्ञों के विचार.....

श्री योगेश कुमार (जिला शिक्षा पदाधिकारी, गोपालगंज) ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा,

"ग्रामीण क्षेत्रों के प्रतिभाशाली छात्रों के लिए यह योजना एक सुनहरा अवसर है। विद्यालय स्तर पर शिक्षक यदि मार्गदर्शन दें, तो सफलता की संभावना कई गुना बढ़ जाती है।"

सैय्यद अब्दुल मोइन (पूर्व दूरस्थ शिक्षा निदेशक, एससीईआरटी, बिहार) ने योजना की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा,

"यह परीक्षा विद्यार्थियों में तार्किक क्षमता, समझ और विश्लेषण कौशल विकसित करती है। इसे केवल परीक्षा नहीं, बल्कि बौद्धिक विकास की प्रक्रिया के रूप में देखना चाहिए।"

श्री मनोज बोस (प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी) ने आवेदन प्रक्रिया को सरल बताते हुए कहा,

"सही दस्तावेज, समय पर पंजीकरण और नियमित अभ्यास—ये तीन बातें छात्रों को चयन तक पहुँचाती हैं। जागरूकता ही सबसे बड़ी कुंजी है।"

श्री शैलेन्द्र शंखधर (विषय विशेषज्ञ) ने तैयारी की रणनीति साझा करते हुए कहा,

"राष्ट्रीय आय-सह-मेधा छात्रवृति योजना परीक्षा की तैयारी के लिए अवधारणात्मक अध्ययन, मॉडल प्रश्नपत्रों का अभ्यास और समय प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। निरंतर अभ्यास से ही आत्मविश्वास विकसित होता है।"

विद्यार्थियों को मिला व्यावहारिक मार्गदर्शन.....

लाइव सत्र में विद्यार्थियों को बताया गया कि—

* परीक्षा की तैयारी कक्षा 8 के पाठ्यक्रम की मजबूत समझ से करें।
* मानसिक क्षमता के प्रश्नों के लिए नियमित अभ्यास आवश्यक है।
* पुराने प्रश्नपत्र और मॉडल पेपर सफलता का सबसे प्रभावी साधन हैं।
* समयबद्ध अध्ययन और स्व-अनुशासन से बेहतर परिणाम मिलते हैं।

टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन के विचार.....

श्री शिव कुमार एवं ई.शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि ₹राष्ट्रीय आय-सह-मेधा छात्रवृति योजना परीक्षा₹ केवल छात्रवृत्ति योजना नहीं, बल्कि आर्थिक रूप से कमजोर मेधावी छात्रों के सपनों को आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम है। सही जानकारी और समय पर तैयारी से अधिक से अधिक बच्चे इसका लाभ उठा सकते हैं।

टीचर्स ऑफ बिहार की पहल सराहनीय....

कार्यक्रम मे सामिल सभी अतिथियों ने बताया कि मंच द्वारा ₹राष्ट्रीय आय-सह-मेधा छात्रवृति योजना परीक्षा₹ की तैयारी हेतु विशेष कक्षाएँ, मॉडल पेपर और अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है, ताकि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण मार्गदर्शन मिल सके।

शिक्षा जगत से जुड़े लोगों ने इस पहल को विद्यार्थियों के हित में एक महत्वपूर्ण कदम बताते हुए कहा कि इस प्रकार के संवाद कार्यक्रम योजनाओं को जमीनी स्तर तक पहुँचाने में प्रभावी भूमिका निभाते हैं।

इस लेट्स टॉक कार्यक्रम का संचालन श्री संतोष कुमार खरे एवं श्रीमति दीपाली ने किया। उक्त जानकारी टीचर्स ऑफ बिहार के प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने संयुक्त रूप से दी है।

अजनाला में बाढ़ पीड़ितों के कानूनी वारिसों को मुआवज़े की राशि जारी

अमृतसर, 14 फरवरी (साहिल बेरी)

अमृतसर के अजनाला क्षेत्र के दरियाई इलाकों में हाल ही में आई बाढ़ से प्रभावित परिवारों को राहत प्रदान करने हेतु एक मानवीय पहल के तहत कुल ₹20,04,829.90/- (रुपये बीस लाख चार हजार आठ सौ उनतीस और पैसे नब्बे मात्र) की राशि जारी की गई है। यह राशि उन 10 प्रभावित परिवारों को दी गई है जिन्होंने इस दुर्भाग्यपूर्ण बाढ़ घटना में अपने प्रियजनों को खो दिया। प्रत्येक परिवार को ₹2,00,482.99/- (रुपये दो लाख चार सौ बयासी और पैसे निन्यानवे मात्र) की आर्थिक सहायता प्रदान की गई।

यह पूरी राशि पंजाब न्यायपालिका के न्यायिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा संवेदनशीलता और एकजुटता के प्रतीक के रूप में स्वेच्छा से एकत्रित की गई। संकलित योगदान को Punjab State Legal Services Authority के माध्यम से District Legal Services Authority, Amritsar को भेजा गया, ताकि इसे मृतकों के कानूनी वारिसों में वितरित किया जा सके।

प्रत्येक पात्र परिवार को यह आर्थिक सहायता उनके अपूरणीय नुकसान की घड़ी में संबल प्रदान करने तथा उनके तात्कालिक कल्याण एवं पुनर्वास संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्देश्य से दी गई है।

बाढ़ संकट के दौरान भी District Legal Services Authority, Amritsar ने सक्रिय भूमिका निभाते हुए प्रभावित परिवारों तक पहुंच बनाई और उन्हें सूखा राशन, पशु चारा, चिकित्सा किट तथा अन्य आवश्यक राहत सामग्री उपलब्ध करवाई।

यह कार्यक्रम Ashwani Kumar Mishra, न्यायाधीश, Punjab and Haryana High Court एवं कार्यकारी अध्यक्ष, Punjab State Legal Services Authority के मार्गदर्शन तथा Rohit Kapoor, प्रशासनिक न्यायाधीश, सत्र प्रभाग अमृतसर के नेतृत्व में संपन्न हुआ। उनके निर्देशन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अमृतसर ने इस मानवीय कार्य को सफलतापूर्वक अंजाम दिया।

पात्र लाभार्थियों को चेक वितरित करने का कार्य सुश्री Jatinder Kaur, जिला एवं सत्र न्यायाधीश, अमृतसर द्वारा किया गया। इस अवसर पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अमृतसर के अधिकारी भी उपस्थित रहे। साथ ही श्री Amardeep Singh Bains, सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अमृतसर के समर्पित प्रयासों की विशेष सराहना की गई, जिन्होंने प्रभावित परिवारों तक पहुंच सुनिश्चित कर समयबद्ध रूप से आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

Punjab State Legal Services Authority तथा District Legal Services Authority, Amritsar ने संकट की घड़ी में प्रभावित एवं जरूरतमंद वर्गों को हर संभव सहायता प्रदान करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है।

नापतोल विभाग की सुस्ती से उपभोक्ता परेशान

इलेक्ट्रॉनिक तराजू में हो रहा है छेड़छाड़ विभागीय लापरवाही पर उठने लगे हैं सवाल

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला: शहर और आसपास के क्षेत्रों के लोगों खास कर उपभोक्ताओं को नापतोल विभाग की सुस्ती का खामियाजा नुकसान के रूप में भुगतना पड़ रहा है।स्थानीय लोगों का आरोप है कि नापतोल विभाग की कथित लापरवाही और विभागीय दलालों की मिलीभगत के कारण आम उपभोक्ताओं को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। फल, सब्जी और अन्य दैनिक उपयोग की वस्तुओं की खरीद-फरोख्त के दौरान इलेक्ट्रॉनिक तराजू एवं वजन मापने वाले उपकरणों में जानबूझकर छेड़छाड़ किए जाने की शिकायतें सामने आई हैं।

जानकारी के अनुसार, कुछ दुकानों में इलेक्ट्रॉनिक तराजू इस प्रकार सेट किए गए हैं कि खरीद के समय वजन कम और बिक्री के समय अधिक प्रदर्शित होता है। स्थानीय निवासियों द्वारा संदेह के आधार पर कराई गई जांच में लगभग 20 प्रतिशत तक वजन में हेरफेर पाए जाने का दावा किया गया है। उपभोक्ताओं का कहना है कि बिना जानकारी के उन्हें निर्धारित मात्रा से कम सामान मिल रहा है, जिससे उन्हें निरंतर आर्थिक नुकसान झेलना पड़ रहा है।

कई लोगों ने आरोप लगाया है कि विभाग से जुड़े कुछ कथित दलालों की मदद से इस प्रकार की सेटिंग कराई जाती है और शहर के कई बाजारों में यह स्थिति देखने को मिल रही है।

इस प्रकरण पर प्रतिक्रिया देते हुए नापतोल विभाग के एक सेवानिवृत्त पूर्व नियंत्रक ने बताया कि भविष्य में स्वतंत्र प्रयोगशालाएं स्थापित करने की योजना है, जहां तराजू और बटखरों की उच्च स्तरीय जांच एवं सत्यापन किया जाएगा। इससे अनियमितताओं पर अंकुश लगाने में सहायता मिल सकती है।

उल्लेखनीय है कि पूर्व में भी विभाग से जुड़े एक सेवानिवृत्त कर्मचारी पर पेट्रोल पंप और वेब्रिज की जांच में अनियमितता तथा मानकों के विपरीत सत्यापन करने के आरोप लग चुके हैं। ऐसे में ताजा मामला विभाग की पारदर्शिता और निगरानी प्रणाली पर गंभीर प्रश्न खड़े करता है।

स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ता डॉ.राजकुमार यादव ने कहा कि यदि जल्द ही ठोस और सख्त कार्रवाई नहीं की गई तो आम जनता का भरोसा व्यवस्था से उठ सकता है। उन्होंने प्रशासन से निष्पक्ष जांच कर दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित करने की मांग की है, ताकि उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा हो सके और बाजार व्यवस्था में पारदर्शिता कायम रहे।

गुरु की वडाली के सरकारी स्कूल में दो एनएसक्यूएफ लैब का उद्घाटन

अमृतसर, 14 फरवरी (साहिल बेरी)

अमृतसर पश्चिम से विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू ने आज गुरु की वडाली स्थित सरकारी स्कूल में दो एनएसक्यूएफ (NSQF) लैब का विधिवत उद्घाटन किया। इस अवसर पर स्कूल प्रबंधन, अध्यापकगण, विद्यार्थी एवं क्षेत्र के गणमान्य लोग बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

इस मौके पर विधायक डॉ. संधू ने कहा कि Bhagwant Mann सरकार का मुख्य उद्देश्य सरकारी स्कूलों को आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित करना है, ताकि ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को भी शहरी स्कूलों के समान बेहतर शिक्षा और अवसर मिल सकें। उन्होंने कहा कि नई स्थापित लैब्स के माध्यम से विद्यार्थियों को विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होगा, जिससे उनके भविष्य को नई दिशा मिलेगी।

उन्होंने अध्यापक वर्ग के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं और सरकार हर कदम पर उनके साथ खड़ी है। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने अपने द्वारा तैयार किए गए विभिन्न प्रोजेक्ट भी प्रस्तुत किए, जिन्हें विधायक ने खूब सराहा।

अपने संबोधन के अंत में डॉ. संधू ने आश्वासन दिया कि स्कूल की अन्य आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए भविष्य में भी विकास कार्य जारी रहेंगे, ताकि सरकारी शिक्षा प्रणाली को और अधिक सुदृढ़ बनाया जा सके।

इस अवसर पर जिला शिक्षा अधिकारी (प्राथमिक) कंवलजीत सिंह, चेयरमैन जगतार सिंह मान, दिलबाग सिंह वडाली, सरपंच कुलदीप सिंह, मैडम हरजीत कौर तथा पीए माधव शर्मा सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

अंतरराष्ट्रीय बाल कैंसर दिवस पर धर्मशिला नारायणा हॉस्पिटल में भावनात्मक आयोजन

सुषमा रानी

नई दिल्ली, 14 फरवरी : धर्मशिला नारायणा हॉस्पिटल, वसुंधरा एन्क्लेव, दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय बाल कैंसर दिवस के अवसर पर एक भावनात्मक और प्रेरणादायी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नन्हे कैंसर योद्धाओं, सर्वाइवर्स और उनके परिवारों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में बच्चों, अभिभावकों और अस्पताल स्टाफ ने मिलकर गतिविधियों, मनोरंजन और प्रेरक अनुभवों के साथ एक यादगार सुबह बिताई।

कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने मैजिक शो का आनंद लिया और चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेकर अपनी भावनाओं को रचनात्मक रूप से व्यक्त किया। बाल कैंसर सर्वाइवर्स ने अपनी साहसिक यात्राएं साझा कीं, वहीं परिवारों ने उपचार के दौरान सामने आई चुनौतियों और उम्मीद की कहानियों को साझा किया। आयोजन ने उत्सव, रचनात्मकता और आपसी सहयोग की भावना को मजबूत किया।

सीनियर कंसल्टेंट, पीडियाट्रिक ऑन्कोलॉजी, डॉ. मेघा सरोहा ने बताया कि भारत में हर वर्ष लगभग 50 हजार बच्चों में कैंसर का निदान होता है। उन्होंने कहा कि ल्यूकेमिया, लिम्फोमा और विल्म्स ट्यूमर सहित विभिन्न प्रकार के बाल कैंसर का इलाज संभव है, यदि समय पर पहचान और समुचित उपचार मिले।

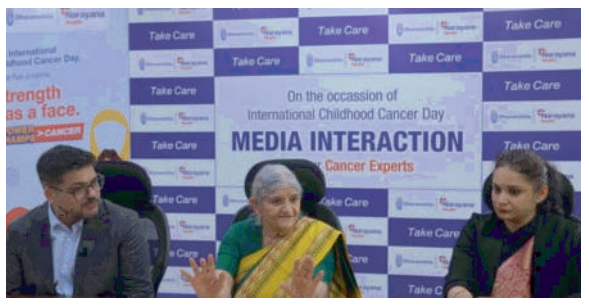

उन्होंने बच्चों के साहस और सकारात्मकता की सराहना करते हुए कहा कि ये नन्हे योद्धा हर दिन बड़ी चुनौतियों का सामना करते हुए भी मुस्कुराना और सपने देखना नहीं छोड़ते। इस अवसर पर नारायणा हेल्थ के डायरेक्टर एवं क्लस्टर हेड दिल्ली एनसीआर एवं कॉरपोरेट ग्रोथ, डॉ. अजय कोहली ने कहा कि अस्पताल करुणा और संवेदनशीलता के साथ विश्वस्तरीय ऑन्कोलॉजी सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। उनका संकल्प है कि कोई भी बच्चा कैंसर की लड़ाई अकेले न लड़े और अस्पताल हर कदम पर बच्चों तथा उनके परिवारों के साथ खड़ा रहे।

कार्यक्रम में धर्मशिला कैंसर फाउंडेशन की संस्थापक एवं अध्यक्ष डॉ. एस. खन्ना ने माता-पिता को साहस और आशा बनाए रखने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि समय पर उपचार, चिकित्सकीय टीम पर विश्वास और परिवार का अटूट सहयोग बच्चों को इस कठिन लड़ाई में विजयी बना सकता है।

अंतरराष्ट्रीय बाल कैंसर दिवस का यह आयोजन न केवल एक उत्सव था, बल्कि बच्चों के अदम्य साहस, दृढ़ता और जिजीविषा को नमन करने का अवसर भी बना। अस्पताल ने नन्हे कैंसर योद्धाओं के लिए समग्र देखभाल और उज्जवल भविष्य के अपने संकल्प को पुनः दोहराया।

गोधा में क्षतिग्रस्त सड़क पर आसान नहीं होगी कांवड़ियों पत्थरों पर चलने के लिए मजबूर

परिवहन विशेष न्यूज

गोधा क्षतिग्रस्त सड़क पर आसान नहीं होगी कांवड़ियों की डगर - गोधा, पिलाना, सुनमई रहमपुर समेत वीरपुर तकीपुर विभिन्न स्थानों पर गोधा से होती हुई सड़क cc रोड आदेशों के बाद भी जर्जर सड़क की नहीं की गई मरम्मत जब की प्रशासन का एक महीने पूर्व ही अलर्ट हो गया था, जिससे कांवड़ियों को क्षतिग्रस्त मार्गों से नहीं गुजरना पड़े लेकिन यह एक पहले ही पत्थर डाल भूलगये जिसके चलते मजबूरन, लापरवाह अधिकारियों के कारण शिवभक्त क्षतिग्रस्त और पत्थरों वाली सड़क पर चलने के लिए मजबूर हैं गोधा क्षेत्र समेत अन्य क्षेत्रों से भी लाखों की संख्या में भोले के भक्त कांवड़ लेकर नागेश्वर मंदिर वीरपुर छविलगढ़ी जाते है शासन के सख्त आदेशों के बाद भी कांवड़ मार्गों के हालात में सुधार नहीं किया जा सका है। सड़कों व गड्ढे, पड़े कंकड़-पत्थर भोले के भक्तों को कष्ट दे रहे हैं मार्गों के हालात न सुधारने के चलते भोले के भक्तों में शासन के खिलाफ रोष है

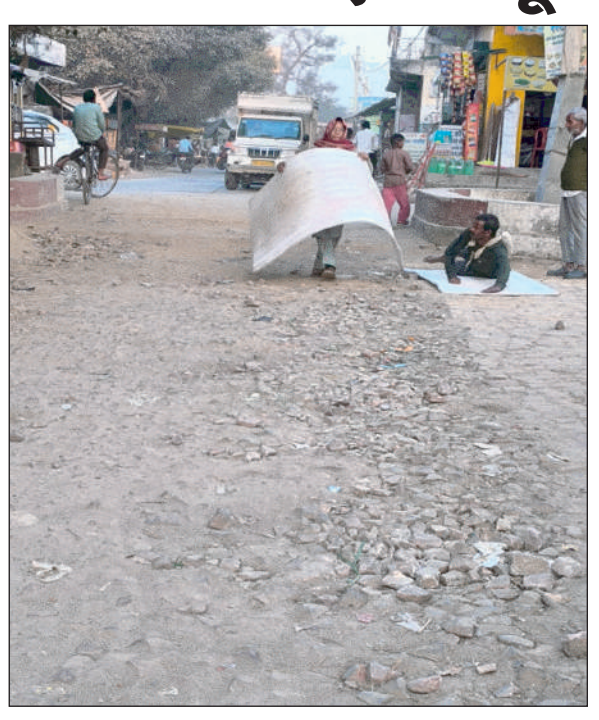

गोधा स्टेशन से गोधा अतरौली मार्ग से मिल रहे रहमपुर वीरपुर छबीलगाढ़ी मार्ग की हालत काफी खस्ता है। गोधा क्षेत्र के गांव वीरपुर छबीलगढी स्थित नागेश्वर शिव मंदिर को जाने वाली सड़क पर पत्थर ही पत्थर।

संत रामपाल जी महाराज के 15 से 17 फरवरी तक मनाए जाने वाले

पंजाब समेत भारत के सात राज्यों के 13 सतलोक आश्रमों में होगे बड़े समारोह

संगरूर, 14 फरवरी (जगसीर सिंह) - कबीरपंथी

संत रामपाल जी महाराज के 15 से 17 फरवरी तक मनाए जाने वाले बुद्ध दिवस समारोह की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। इस बारे में जानकारी देते हुए सतलोक आश्रम के प्रबंधकी सेवादारों ने बताया कि पंजाब के सतलोक आश्रम धूरी, सतलोक आश्रम खमाणों और देश भर के 11 सतलोक आश्रमों के साथ-साथ नेपाल में भी यह बोध समारोह पूरी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाएगा। सतलोक आश्रम के सेवादारों ने आगे बताया कि 17 फरवरी, 1988 को संत रामपाल जी महाराज को स्वामी रामदेवानंद जी महाराज से नाम उपदेश मिला था। इस दिन को उनके बोध दिवस के रूप में मनाया जाता है। स्वामी रामदेवानंद जी महाराज ने उन्हें 1994 में नाम प्रचार की ज़िम्मेदारी सौंपी। 15 फरवरी को संत गरीब दास जी महाराज की अमृतबानी का अखंड पाठ शुरू होंगे, 16 फरवरी को एक बड़ा ब्लड डोनेशन कैंप और दहेज-मुक्त शादियां होंगी। 17 फरवरी को अखंड पाठ के भोग के साथ कार्यक्रम समाप्त होंगे। तीनों दिन एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई जाएगी जिसमें सभी धर्मों के पवित्र ग्रंथों के साथ-साथ तस्वीरों के ज़रिए आध्यात्मिक ज्ञान दिखाया जाएगा। यह कार्यक्रम 17 फरवरी को अलग-अलग सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और साधना चैनल पर लाइव दिखाया जाएगा, तथा तीनों दिन लगातार शुद्ध देसी घी से बने भंडारे चलेंगे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023